पाखंड का वायरस कोरोना से घातक

क्यों बनते हैं विवाहेतर संबंध

दवाओं का अधिक सेवन क्यों है खतरनाक

सरिता

मई (द्वितीय) 2020, ₹ 50



मजदूरों का रिवर्स माइग्रेशन

सब्सक्राइब करने के लिए 85888 43437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

''इस पॉलिसी में निवेश पोर्टफोलियो में निवेश का जोखिम पॉलिसीधारक द्वारा वहन किया जायेगा''

सबसे पहले लाइफ इंश्योरेंस

ऑनलाइन भी उपलब्ध

एक सीप - दो फायदे

बचत भी : सुरक्षा भी



एलआईसी की

सीप

योजना सं.: 852 UIN 512L334V01

यूनिट लिंक्ड, असहभागी, व्यक्तिगत जीवन बीमा योजना

चुनने की आजादी:

बचत धनराशि:
आपकी बचत रु. 4000/– प्रति माह या रु. 40000/– प्रति वर्ष से शुरू हो कर जीवन के बड़े लक्ष्यों के लिए उससे अधिक हो सकती है।

4 फंड विकल्प:
आप बांड, सुरक्षित, संतुलित एवं वृद्धि में से कोई भी विकल्प चुन सकते हैं।

निःशुल्क फंड परिवर्तन:
आप अपना धन वर्ष में चार बार निःशुल्क एक फंड से दूसरे फंड में परिवर्तित कर सकते हैं।

आवश्यकता पर निकासी :
5 वर्ष उपरांत आप आंशिक निकासी कर सकते हैं।*

पॉलिसी के लाभ:

- जोखिम सुरक्षा उपलब्ध
- गारंटीकृत लाभ: यूनिट फंड वैल्यू के साथ गारंटीकृत लाभ*
- पॉलिसी परिपक्वता: यूनिट फंड वैल्यू

पात्रता :

प्रवेश की आयु:
न्यूनतम आयु: 90 दिन
अधिकतम आयु: 65 वर्ष

परिपक्वता आयु:
न्यूनतम आयु: 18 वर्ष
अधिकतम आयु: 85 वर्ष

पॉलिसी अवधि: 10 – 25 वर्ष

एसएमएस करें अपने शहर का नाम 56767474 पर

कॉल सेंटर सेवा (022) 6827 6827 | डाउनलोड करें एलआईसी मोबाइल एप "MyLIC"

वेजिट करें www.licindia.in पर, हमें फॉलो करें LIC India Forever

*शर्तें लागू : अधिक विवरण के लिए अपने अभिकर्ता/एलआईसी की नजदीकी शाखा से संपर्क करें

भ्रामक/धोखाधड़ी वाले फोन कॉल्स से सावधान
आईआरडीएआई बीमा पॉलिसी विक्रय, बोनस की घोषणा अथवा प्रीमियम निवेश संबंधी गतिविधियों से संबंध नहीं रखता है।
ऐसे फोन कॉल्स के प्राप्त होने पर आपसे निवेदन किया जाता है कि तुरन्त पुलिस से शिकायत दर्ज करवायें।

करार के प्रथम पाँच वर्ष में यूनिट से संबद्ध बीमा पॉलिसियां समाप्त नहीं की जा सकती। पाँचवें वर्ष के अंत तक यूनिट से संबद्ध बीमा पॉलिसियों को पॉलिसीधारक न समर्पण कर सकता है और न ही उनमें निवेश किये गए धन को आंशिक या पूर्ण रूप से निकाल सकता है।

नियम व शर्तों की विस्तृत जानकारी के लिए बिक्री समापन से पूर्व बिक्री-पुस्तिका ध्यानपूर्वक पढ़ लें।

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

हर पल आपके साथ

LCIAR19-20/4/HIN

सरिता

मई (द्वितीय) 2020 अंक 1562

संपादक
प्रकाशक
परेश नाथ

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002



14

रिवर्स माइग्रेशन का संकट कोरोना से भी बड़ा

लेख

30 **पाखंड का वायरस**
कोरोना से घातक

36 **शराब माफिया**
दबाव में सरकार

42 **प्लाज्मा थैरेपी**
कोविड-19 के इलाज में कारगर?

46 **हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन**
रोचक जानकारी

50 **हिंदी कहानियां**
शब्दों की बाढ़

60 **विवाहेतर संबंध**
क्यों बनते हैं

66 **दवाओं का अधिक सेवन**
खतरनाक है

72 **मासिकधर्म**
धर्म और बिटिया

76 **बैंक में मृतक के खाते**
वारिस के दावे

82 **गुस्सा**
काबू में रखें

142 **हमारा शरीर**
ऐसा क्यों करता है



42







148 **ऋषि कपूर**
इन में कुछ तो बात थी

154 **इरफान खान**
उम्दा अदाकारी के मकबूल कलाकार थे

कहानी

86 **समझौता जिंदगी और...**
आखिर क्या लिया निम्मो ने फैसला



96 **दीवारें**
सास की बेचारगी

102 **काश**
खुशियों को तलाशती स्त्री

114 **टूटा हुआ रिश्ता**
क्यों भीग गई थीं दुलहन की आंखें

122 **जिएं तो जिएं कैसे**
कोरोना से जुड़ी हकीकत

130 **लक्ष्मणरेखा**
आखिर कब तक सहती लीना

और भी कहानियां पढ़ने के लिए
sarita.in पर login करें.

बातचीत

158 **अरुण बख्शी**
मैं सफलता के मद में कभी चूर नहीं हुआ

व्यंग्य

110 **खानदानी सांत्वनाछाप...**
सांत्वना का मरहम चाहिए आप को भी?

स्तंभ

8 आप के पत्र

10 सरित प्रवाह

28 श्रीमतीजी

56 भारत भूमि युगे युगे

65 जीवन की मुसकान

89 इन्हें आजमाइए

95 मेरे पापा

121 बच्चों के मुख से

129 यह भी खूब रही

138 पाठकों की समस्याएं

141 दिन दहाड़े

147 ये पति

162 ननमुन

गृहशोभा सरिता मुक्ता

सरस सलिल सत्यकथा मनोहर कहानियां

पत्रिकाओं की सैकड़ों रोचक कहानियां पढ़ने के लिए आज ही डाउनलोड करें

Kahani सरिता ऐप



रोमांस, क्राइम, फैमिली, रिलेशनशिप व हास्य में से अपनी पसंदीदा विधा चुनने का विकल्प



पसंदीदा कहानियों को औफलाइन सेव करने की सुविधा



प्रतिदिन नई कहानियां व व्यंग्य





सुविधानुसार फौंट साइज कमज्यादा करने की सुविधा

गूगल प्लेस्टोर पर उपलब्ध

DELHI PRESS MAGAZINES

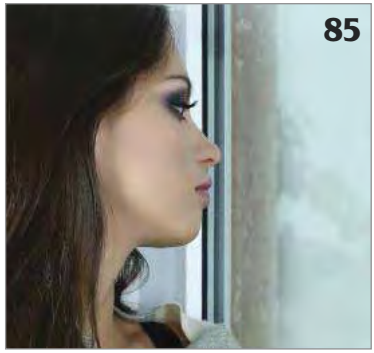

कविताएं

85 अपनेआप में गुम है
107 मखमली गरमियां
137 कभी पास आओ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय

दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
फोन : 011-41398888, 32468201, 32495622, 23529557, फैक्स : 011-41540714, 23625020.
अन्य कार्यालय : 31, ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845.** 11, फर्स्ट क्रास, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु-560051. फोन :** 080-42013076. गीतांजली टावर, शौप नं. 114 (व्यास अस्पताल के सामने), अजमेर रोड, **जयपुर-302006. फोन : 09529020226.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जीडी अंबेडकर मार्ग, वडाला, **फोन : 022-24122661.** 16-ए, अमृता बनर्जी लेन, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026. फोन : 033-40675040.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448, 28412161.** 122, चिनौय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596.** बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 0522-2618856.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, ऐग्जिबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2676286, 3253954.** जी-7, पायनियर टावर्स, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फिट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें : फोन : 011-41398888, फैक्स : 011-41540714. एक्सटैंशन नंबर : 119, 221, 264 टोल फ्री नं. : 18001038880 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक) मोबाइल/एसएमएस/व्हाटसऐप नंबर : 08588843408 ईमेल : subscription@delhipress.in

© दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित. संपादक : परेश नाथ.

मूल्य : एक प्रति ₹ 50. वार्षिक : ₹ 999, दो वर्ष : ₹ 1,860 (रजिस्टर्ड डाक से)

वार्षिक मूल्य : केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. हमारी कोई डिपोजिट योजना नहीं है.

अंतर्राष्ट्रीय सब्सक्रिप्शन मूल्य (हवाई डाक से) : वार्षिक 100 अमेरिकी डौलर.

संपर्क करें :

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल : article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल : invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ईमेल : editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ईमेल : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE

© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. INDIA

ISSN 0971-1538

वर्ष : 75, अंक : 10

No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.
THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

"India's best English-language magazine"
—*The Guardian, UK*

"For those with an interest in India, it has become an absolute must-read"
—*The New Republic, USA*

As India's only magazine devoted to long-form narrative journalism, *The Caravan* has quickly become renowned for its high standard of detailed reporting, elegant writing, and incisive commentary. As a literary and political journal, it has gained global recognition beyond its growing readership and is now at the forefront of Indian political debates. *The Caravan* is now considered the most respected and intellectually agile magazine in the country.

INDIA'S ONLY NARRATIVE JOURNALISM MAGAZINE

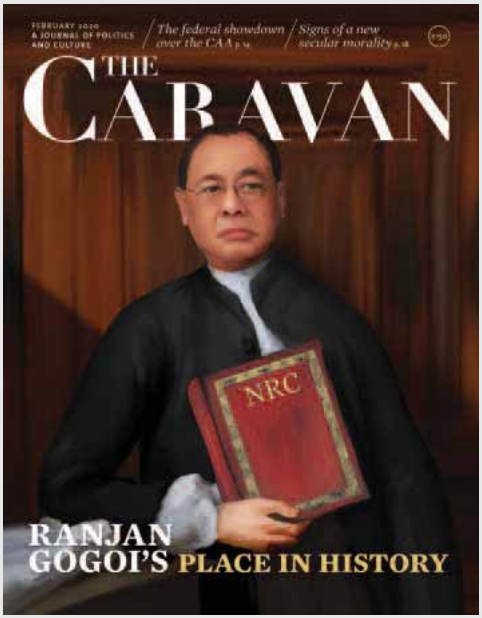

The Caravan now available for only Rs 1125 (12 issues)

Assured Delivery by Registered Post.

THE CARAVAN
Journal of politics, culture & business.
www.caravanmagazine.in

To subscribe call toll free at: 1 800 103 8880, Landline 011-41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 am to 6.00 pm)
For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe or e-mail at subscription@delhipress.in
For advertising kindly call Mr. Shantanu Choudhury at +919810604922 or mail shantanu.choudhury@delhipress.in



सरित प्रवाह, मई 2020

संपादकीय 'बेकार होते कामगार' पढ़ा. आप ने कोरोना लौकडाउन में बन रहे हालात पर चिंता जताई है. पूरे देश में एक राज्य से दूसरे राज्यों में जिस तरह से मजदूरों को लाने व ले जाने के उपक्रम किए जा रहे हैं, वे आगामी समय के लिहाज से सही नहीं कहे जा सकते. केंद्र सरकार यदि लौकडाउन को सुनियोजित तरीके से लागू करती तो न कामगारों को ऐसी बेकारी झेलनी पड़ती और न ही इस तरह का पलायन करना पड़ता.

लौकडाउन खत्म होने के बाद यह उम्मीद कम ही दिखाई देती है कि गंभीर मुसीबतों का सामना कर के अपने घर लौटे मजदूरों की जल्द वापसी होगी.

मार्च महीने में मध्य प्रदेश में सरकार बनाने का जो लंबा ड्रामा चला, उसी वजह से मोदी सरकार कोरोना वायरस को नजरअंदाज करती रही और प्रदेश में अपने मुख्यमंत्री के शपथ लेते ही लौकडाउन लागू कर पैनिक फैला दिया. इस का सब से ज्यादा खमियाजा देश के गरीब व मजदूर वर्ग को उठाना पड़ा. **वेणी शंकर पटेल ब्रज**

*

मजदूरों के दर्द को समझना जरूरी

मई अंक में 'भगवान नहीं, विज्ञान दिलाएगा कोरोना से मुक्ति' लेख पढ़ने को मिला. लौकडाउन के दौरान कांवड़ियों की तरह हड़बड़ी में भागते प्रवासी मजदूरों के लिए जलपान व भंडारे क्यों नहीं चले, यह सवाल उठाया गया है. मेरा मानना है कि ये दोनों स्थितियां बिलकुल अलग हैं, इसलिए तुलना ठीक नहीं है. दिल्ली में अनेक समाजसेवी संस्थाओं ने सरकार का सहयोग करते हुए गरीबों के लिए निरंतर लंबे समय तक खानेपीने का प्रबंध किया.

लौकडाउन के प्रारंभ में ही प्रवासी मजदूरों की अनियंत्रित भीड़ को बदहवासी में इधरउधर भागने देना समझदारी नहीं थी. स्थिति संभलते ही मजदूरों के लिए ट्रेनों में भरपूर सरकारी प्रबंध किए गए हैं.

1960-65 से समयसमय पर सरिता पढ़ता रहा हूं. कार्टूनिस्ट आलोक भार्गव तारीफ के काबिल हैं जो लंबे समय से 'श्रीमतीजी' स्तंभ के कार्टून बनाते चले आ रहे हैं. यह उन की लोकप्रियता का कमाल है. 'श्रीमतीजी' पढ़ कर मन खुश हो जाता है. **हरबंस सिंह**

*

हर जने का कर्तव्य

आज हम समय के जिस मोड़ पर खड़े हैं उस के लिए हमें स्वयं पर विश्वास व समय से लड़ने की शक्ति की जरूरत है.

पृथ्वी का वातावरण दूषित हो चुका है. लोग प्रदूषण से मरने लगे हैं. जल में मछलियां प्रदूषण से खत्म होने लगी हैं. वायु और जल जीवनदायी न हो कर प्राणघातक हो गए हैं. मौसम ने क्रूर रूप धर लिया है. पृथ्वी का तापमान पहले से अधिक गरम और भयावह

हो चुका है, पर हम मूकदर्शक बने हुए हैं.

इन 60 दिनों में जब मनुष्य घरों में बंद है तो प्रकृति ने अपनेआप को व्यवस्थित किया है. प्रदूषण का स्तर घट कर सांस लेने योग्य हुआ है. जिन नदियों में नहाने से भी बीमारी का खतरा था, वहां का जल पीने योग्य हो गया है.

हम सदियों से वृक्षों से अमूल्य औक्सीजन लेते हैं और बदले में उन्हें काट डालते हैं, नदियों का निर्मल जल गंदे नाले में परिवर्तित कर देते हैं. पहाड़ काटकाट कर बस्तियां बसाई जा रही हैं, हम भिखारियों की भांति बस लेना जानते हैं, लौटाना तो कोई बिरला ही सीखता है. कोरोना ने कम से कम हवा और पानी को कुछ हद तक ठीक कर दिया है. हर जने को हवा व पानी को शुद्ध रखने में योगदान करना चाहिए ताकि हम खुली सांस ले सकें और दूषित होने से नदियों को बचा सकें.

सुबोध कुमार

*

जागरूकता ने निभाई बड़ी भूमिका

कोरोना वायरस का खतरा जहां देश के अन्य इलाकों में बढ़ता जा रहा है वहीं पूर्वोत्तर के 6 राज्यों में ग्रामीणों की इच्छाशक्ति के आगे उसे हारना पड़ा. इन राज्यों में गांव के लोगों ने कड़े नियम अपना कर ऐसा चक्रव्यूह बनाया कि 8 में से 6 राज्य कोरोनामुक्त हो चुके हैं.

सिक्किम, नगालैंड में तो एक भी मामला सामने नहीं आया. मणिपुर में 2 जबकि अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम में केवल एकएक मामला सामने आया. वहां सभी मरीज पूरी तरह ठीक हो चुके हैं. मिजोरम भी कोरानामुक्त घोषित कर दिया गया. मेघालय में कुल 13 मामले आए, जिन में 10 लोग ठीक भी हो गए. सुखद है कि पूर्वोत्तर के ज्यादातर राज्य ग्रीन जोन में हैं.

पूर्वोत्तर के राज्यों में मामले कम होने के पीछे प्राकृतिक और भौगोलिक वजह भी मानी जा रही है. इन इलाकों में आनाजाना इतना आसान नहीं है. लौकडाउन की वजह से बाहरी लोगों का वहां पहुंचना पूरी तरह बंद हो गया. जो लोग आए, उन्हें अपनेअपने घर में क्वारंटाइन कर दिया गया.

अन्य कारण भी रहे जैसे कि चीन में खतरा बढ़ा तो सीमा से सटे कई इलाकों ने खुद लौकडाउन जैसे नियम बनाए. सामाजिक दूरी के लिए ग्रामीण संगठनों ने लोगों के घर से निकलने पर रोक लगाई. व्हाट्सऐप ग्रुप बना कर किराना सामान, दूध, दवाएं आदि घरघर पहुंचाईं.

चंदा कर ट्रक से सब्जियां मंगा कर बंटवाईं, गरीब लोगों को मुफ्त में सामान दिया. सैल्फ हैल्प ग्रुप की महिलाओं ने घर में मास्क बनाए, बाजार से खरीदने नहीं पड़े. मुखिया की अनुमति और सैनिटाइजेशन के बाद ही बाहरी व्यक्ति को गांव में प्रवेश करने दिया.

मनजीत बरार ●



आप भी भेजें

सरिता में प्रकाशित रचनाओं तथा अन्य सामयिक विषयों पर अपने विचार भेजिए. कृपया पत्रों पर अपना पता अवश्य लिखें. पत्र इस पते पर भेजिए : **आप के पत्र, सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.**

नीचे लिखे नंबर पर ***एसएमएस*** या ***व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/ औडियो भी कर सकते हैं.***

08527666772

सरित प्रवाह

संपादकीय

कोविड से जंग

जीवन अपनेआप में हमेशा एक संघर्ष रहा है. आधुनिक विज्ञान व तकनीक के बिना अभी तक हरेक का जीवन हर पल एक चुनौती रहा था. कुछ भी पक्का नहीं था. ज्यादातर लोग प्रकृति पर निर्भर थे. अच्छा मौसम हुआ, अच्छी फसल हुई तो पेटभर खाना मिल गया. सदियों तक मानव को पृथ्वी पर वह सुरक्षा महसूस नहीं होती थी जो आज 80-90 प्रतिशत जनता को विश्वभर में है कि सरकारें उन को हर आपातकाल से बचा लेंगी. राजा लूटने ज्यादा आते थे, बचाने कम.

बीमारियां बहुत थीं, बहुतों के नाम ही नहीं थे. दवाएं नाममात्र की थीं. धर्म के नाम पर कुछ दुकानदार छोटेमोटे नुस्खे और पूजापाठ कराया करते थे. मानव जीवन उन कठिनाइयों से जैसेतैसे गुजरा है. पिछले 200 सालों में माहौल बदला है. धीरेधीरे विज्ञान और तकनीक, जो नई सोच और तर्क पर आधारित हैं, जीवनस्तर सुधारने लगीं. आज हर आम आदमी भी बिजली, पानी, पंखों, एयर कंडीशनरों, हीटिंग, रैफ्रिजरेटरों, पाइपगैस का इस्तेमाल कर रहा है. इन सब ने जिस स्थायित्व की गारंटी दी, वह कोविड-19 से खतरे में है.

सारा विश्व एक उथलपुथल में है. पता नहीं कल क्या होगा. अब बीमारी का डर तो है ही, उस का परोक्ष प्रभाव मानसिक तनाव ज्यादा दे रहा है, नए प्रश्न खड़े कर रहा है. क्या हम पहले की तरह घूमफिर सकेंगे? क्या पहले की तरह धमूधड़ाके के साथ सामूहिक आनंद ले सकेंगे? क्या बाजारों में सामान ठसाठस भरा होगा? क्या हमारी जेबों में पैसा होगा? क्या बच्चे अच्छी पढ़ाई कर पाएंगे? क्या वे खुली हवा में जीभर के साथियों के साथ खेल सकेंगे? क्या युवा जानेअनजाने के साथ प्रेमपींगें बढ़ा पाएंगे?

कहीं ऐसा न हो कि कोविड के भय से हम सब कबीलाई बन जाएं. मैं, तुम, बच्चे और बस. ये ही कमाएं, ये ही खाएं. हम जिस भी आधुनिक चीज का लाभ ले रहे हैं उसे बनाने और हरेक के लिए सुलभ कराने के लिए हजारों को फैक्ट्रियों में एकसाथ काम करना होता है. क्या यह संभव होगा? अगर बड़े मकान नहीं बने तो क्या हमें छतें मिलेंगी?

हां, ये सवाल हैं पर मानव तो हमेशा ही प्रकृति से लड़ कर विजय पाता रहा है. 10,000 साल पहले उस ने पक्के मकान बनाना सीख लिया था. आज भी मानव कोविड से लड़ेगा और उस से पैदा होने वाली समस्याओं से भी. जो तार्किक हैं, जो पौरुष में विश्वास रखते हैं, जो खोजबीन में लगे हैं, जो रातदिन मेहनत कर रहे हैं, जो हर आपदा को

अकसर समझते हैं, वे निश्चित ही सफल होंगे. वे इस कोविड के भंवर से निकलने के लिए नावें बनाएंगे और उन नावों में दूसरों को भी ले जाएंगे. ऐसे लोगों की तारीफें करें. नेताओं, पूजापाठियों और मुनाफाखोरों की तारीफें न करें. उन लोगों का मान बढ़ाना है, उन के काम में हाथ बंटाना है. कोविड पर विजय होगी ही, पर भाषणों से नहीं, बल्कि प्रयोगशालाओं से, अस्पतालों से, निर्माणों से और फैक्ट्रियों आदि से.

युवाओं की सोचो

स्कूलों, कालेजों और कोचिंग क्लासों को लंबे समय तक बंद रखना एक नई किस्म की समस्या पैदा करेगा. करोड़ों लोगों का लगभग एक साल बेकार जाएगा क्योंकि वे जो कुछ भी पढ़ते हैं उस में रुकावट आने से उन को नए सिरे से पढ़ाई करनी होगी. हमारी शिक्षा वैसे ही लचर है, समझ की जगह रट्टे पर विश्वास करती है और 5-6 या ज्यादा महीनों के लिए अगर स्कूल बंद हुए तो पहले का सारा रटारटाया साफ हो जाएगा.

स्कूलों में विद्यार्थियों को लानेलेजाने में कोविड-19 के फैलने का खतरा है, पर इस दौरान अगर शिक्षा के प्रति जागरूकता से योजना बनाई होती तो कोरोना के बाद पैदा हुए संकट के लिए नई पीढ़ी को तैयार किया जा सकता था. इस की जगह सब को छुट्टी दे दी गई कि घर पर बैठ कर चैटिंग करो, रामायण व महाभारत की घिसीपिटी कहानियां देखो.

पोस्टऔफिस और कूरियर सेवाओं को बंद कर के पढ़ने की सामग्री को दूसरों तक न पहुंचने देने से सरकार का छिपा मंतव्य चाहे पूरा हो रहा हो कि नई पीढ़ी सवाल करने वाली नहीं, वह तो आज्ञा लेने वाली है, लेकिन यह देश को बहुत महंगा पड़ेगा. देश में भयंकर बेकारी के गहरे काले बादल छा गए हैं और अब दोगुनीचौगुनी मेहनत करने वाली युवा पीढ़ी चाहिए, जबकि हम उन्हें खाली बैठा कर धर्म की चाशनी चटा रहे हैं. पोस्टऔफिसों के लिए पुस्तकों को घरघर पहुंचाना कोई मुश्किल काम नहीं था. पहले ही दिन से मालगाड़ियां देशभर में दौड़ने लगी थीं और डाकियों को दवाएं बांटने का काम मिल ही रहा था. सो, पठनीय साहित्य भी साथ में घरघर जा सकता था.

प्रवचनों और भाषणों से ज्ञान नहीं मिलता. ज्ञान वह भी तार्किक और नए सवाल पूछने लायक तब मिलता है जब विविध साहित्य मिले. सरकार तो स्कूलोंकालेजों से विविधता को ही गायब करने में लगी थी. सो, इन खाली दिनों में वह भला क्यों तार्किक, नए सोच वाली पीढ़ी तैयार करती.

अभी भी समय है कि अगले 5-10 वर्षों के लिए सोचा जाए. कोरोना से विश्व बदलेगा. चीन अतिशक्तिशाली बन ही गया है. इसलामी देशों का भट्ठा बैठ गया है. यूरोप व अमेरिका को बड़ी चोट लगी है. सभी अपनी युवा पीढ़ी, जिस की प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा है, का लाभ उठा सकते हैं, अगर उसे सड़कों पर भटकने के लिए न छोड़ा जाए. मुट्ठीभर को औनलाइन का रटारटाया पाठ पढ़ाना काफी नहीं है, करोड़ों की सोचो.

नशे में सरकार

ऐसे समय में जब देश में नौकरी और व्यापार दोनों खतरे में नहीं, बल्कि आग में झुलस रहे हैं, सरकार का लौकडाउन चालू रखते हुए शराब की बिक्री चालू कर देना बेहद बेवकूफी वाला कदम है. यह ठीक है कि बहुतों को शराब की तलब होती है पर सरकार का उद्देश्य शराबियों को राहत देना नहीं, इन की जेब खाली कराना है ताकि राज्य सरकारों को कर मिल सके.

घरों में औरतें जब पहले ही अपने आदमियों की बेकारी और घाटे की वजह से परेशान हैं, किसी तरह पुरानी बचत से वे रसोई का खर्च पूरा कर रही हैं, तब मर्दों को शराब खरीदने व पीने की खुली छूट देना उन के साथ नाइंसाफी है. यह टैक्स असल में औरतें और बच्चे देंगे क्योंकि मर्द की आमदनी कम होगी तो उन्हें ही भूखा रहना होगा.

सरकारों और धर्मों का मूलमंत्र यह है कि घरों में औरतें हर समय परेशान रहें और घरों में हर समय विवाद खड़े रहें. सरकार इन विवादों को उकसाना चाहती है ताकि घर कमजोर रहें. जब घर कमजोर होते हैं तो लोग सरकार के खिलाफ बोलने में घबराते हैं. धर्म भी खुश होते हैं क्योंकि सताई औरतें चढ़ावा ले कर धर्म की शरण में जाती हैं और वहीं वे उपचार ढूंढ़ती हैं. इस चक्कर में वे धन तो देती ही हैं, तन भी दे डालती हैं. जो सरकार सीधेसीधे धर्म पर टिकी है, वह भला कैसे इस आमदनी को हाथ से निकलने दे जिस में बोनस के रूप में अंधभक्त भी मिलते हैं.

शराब के ठेके सब से अंत में तब खुलने चाहिए थे जब देश की अर्थव्यवस्था अपनी पटरी पर लौट आती. शराब के विज्ञापनों पर रोक लगाने वाली सरकार इतनी हड़बड़ी में शराब की बिक्री को टीवीफ्रिजों की बिक्री से पहले खोल देती है, यह सरासर इस सरकार के दोगलेपन की निशानी है. यह कहना ठीक होगा कि वे राज्य सरकारें, जो दूसरी पार्टियों की हैं, भी शराब को खोलने के पक्ष में ही थीं. सब को सरकारी खजाना भरना है और पुलिस, अफसरों व नेताओं की जेबें भी, चाहे इस का खमियाजा घरों की औरतें, बच्चे भुगतें.

सही व सटीक विचार

सही व सटीक विचारों के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी.

Subscription.mag@delhipress.in पर ईमेल भेजिए या **08588843408** पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

शक्तिशाली चीन

चीन को कोविड-19 के लिए दोषी ठहराते हुए अमेरिका, आस्ट्रेलिया, फ्रांस व कुछ यूरोपीय देश धमकियां दे रहे हैं कि वे चीन से अपने संस्थान उठा लेंगे और चीन के साथ व्यापार कम कर देंगे. इन देशों ने कोविड-19 से मुकाबला करने में ढीलढाल दी थी और इस महामारी ने इन देशों की स्वास्थ्य सेवाओं की पोल खोल दी. अमेरिका सब से ज्यादा दोषी है क्योंकि उस के खब्ती राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ऊटपटांग बोलते हुए इस महामारी के प्रति सतर्क नहीं रहे.

डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका की स्वास्थ्य सेवाओं को इंश्योरैंस कंपनियों के भरोसे छोड़ दिया था और पिछले राष्ट्रपति बराक ओबामा को गलत साबित करने के चक्कर में सभी नागरिकों को मिल सकने वाली मैडिकेयर को लगभग समाप्त कर दिया था. अब जब अगले चुनाव नवंबर में सिर पर हैं, वे उसी तरह बहाने ढूंढ़ रहे हैं जैसे भारत में हर गलती के लिए या तो मुसलमानों को दोषी ठहराया जाता है या जवाहरलाल नेहरू को.

यह कला पुरानी है. प्लेग आदि के लिए बूढ़ी, बेसहारा, मानसिक विक्षिप्त औरतों को दोषी ठहराने की परंपरा हिंदू धर्म में ही नहीं, इसलाम और ईसाई धर्म में भी बराबर है. आम जनता को हालात तो मालूम होते हैं नहीं और उन की तर्क की शक्ति उन के जन्म के समय से छीन ली जाती है तो वे खुशीखुशी बहानों को स्वीकार कर लेते हैं. चुड़ैलों को जलाने से प्लेग समाप्त नहीं हुआ था, डायनों को मारने से हैजा नहीं रुका था और चीन को कोसने से कोरोना वायरस फैलना बंद नहीं होगा.

चीन आज बेहद शक्तिशाली है और कम्युनिस्ट पार्टी की तानाशाही के बावजूद वहां जो जीवनस्तर सुधरा है वह हर चीनी अपनी आंखों से देख रहा है. कोरोना को ले कर वे अपनी उपलब्धियों को कुछ असफल विदेशी नेताओं के कारण निगलने नहीं देंगे. चीन को दोषी चाहे जितना ठहरा लें, वह दुनिया का उत्पादन केंद्र बना रहेगा और अपनी बुद्धि, लगन व अनुशासन से चीनी सस्ते व अभिनव उत्पादन उपलब्ध कराते रहेंगे और दुनिया को उन्हें खरीदना ही पड़ेगा.

भारत सरकार का यह सपना कि पश्चिमी विकसित देश भारत आ कर अपने कारखाने लगाएंगे, भ्रामक है. भारत ने अभी कुछ ऐसा नहीं किया है कि हमें शांति का केंद्र समझा जाए. हमारे यहां नोटबंदी, जीएसटी और लौकडाउन जैसे मूर्खता वाले कदम इस तरह उठाए गए कि करोड़ों लोगों की कमर टूट गई है. जिन लेबरों पर भारत को गर्व था वे एक झटके में मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु, सूरत जैसे उत्पादन केंद्र छोड़ कर भाग रहे हैं. ऐसे देश में कौन आएगा जहां नेता घंटों का नोटिस दे कर मनमरजी का नेग लेते हैं और लोगों का जीवन नष्ट करने में उन के माथों पर जरा सी शिकन नहीं आती. वे हर बात के लिए इस या उस संस्कृत का श्लोक पढ़ कर अपने को सही साबित करते हैं. सो, भारतीय चाहे भारत की जयजय कर लें, लेकिन विदेशी करेंगे, इस की गारंटी नहीं. ●



रिवर्स माइग्रेशन का संकट कोरोना से भी बड़ा

• नसीम अंसारी कोचर

कोरोना वायरस की चेन तोड़ने के लिए भारत के पास लौकडाउन एकमात्र रास्ता है. लेकिन इस के बाद बहुत बड़ी संख्या में होने वाला रिवर्स माइग्रेशन बहुत से नए संकटों को जन्म देगा, जिन से निबटने के लिए भारत के पास कोई योजना, कोई सर्वे या कोई ब्लूप्रिंट नहीं है. भयावह बेरोजगारी का यह संकट देश के अंदर तो होगा ही, देश के बाहर से भी आएगा.

देशव्यापी लौकडाउन को 2 महीने हो चुके हैं. 23 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देशव्यापी लौकडाउन की घोषणा के बाद 24 मार्च से ही लाखों की संख्या में बड़े शहरों में काम कर रहे प्रवासी, यानी बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, ओडिशा के मजदूरों ने अपने गांवों को लौटने का फैसला कर लिया था और वे निकल पड़े थे. जिस मोदी सरकार को गरूर था कि जनता उस के हर बेदर्दीभरे फैसले को देवता का हुक्म मान कर सिरआंखों पर ले लेती है, भौचक्की रह गई कि ट्रेन और बस नहीं, तो पैदल ही सैकड़ों नहीं, हजारों नहीं, लाखों प्रवासी मजदूर अपनेअपने गांवों की ओर चल दिए. भाजपा सरकार ने पुलिस से उन को पिटवाया, जेलों में बंद कर दिया, भूखा रखा, भगवा गैंगों को तैनात किया पर

मजदूरों को शहरों से इतनी नफरत हो गई कि न तो उन के कान किसी घोषणा को सुनने के लिए तैयार हुए और न उन के पैर रुकने के लिए. उन्होंने बिलकुल उसी तरह शहरों से अपने घरों की ओर भागना जारी रखा जैसे बाढ़ आने पर चूहे अपने बिलों से निकल कर सुरक्षित स्थानों की ओर भागते हैं.

दरअसल, सरकार ने बिना किसी तैयारी के, बिना किसी योजना के आननफानन नोटबंदी की तरह लौकडाउन का ऐलान कर दिया. उस के बाद जो उस ने लोगों की भागमभाग देखी तो कुछ रिलीफ सैंटर खोले जो बदबूदार और शौचालयों जैसे थे. वहां भूखे गरीब मजदूर परिवारों को जो खाना खिलाया, वह कच्चापक्का, बासी और बेस्वाद था. उन की वहां पहरेदारी की, इलाज के नाम पर एंबुलैंसें खड़ी कीं पर उन से ज्यादा बेरहम डंडों से लैस पुलिस वालों से भरी वैनें खड़ी कर दीं कि कहीं ये भाग न जाएं. देशभर ने इन मजदूरों की पिटाई के सीन तब तक देखे जब तक तबलीगी जमात के मामले ने उछल कर ध्यान नहीं भटकाया. यह साफ है कि हिंदूमुसलिम विवाद वर्णव्यवस्था के हामी टीवी एंकरों व उन के चैनलों की देन है जो सरकार को मजदूरों द्वारा परोसी जिल्लत से बचाना चाह रहे थे.

सरकार की दुनियाभर में नाक कटी, शायद मोदी ने इसी बात से नाराज हो कर सारे मंत्रियों से काम छीन लिए, तमाम मुख्यमंत्रियों को फटकारा. अप्रैल के आखिरी दिनों में ही प्रवासी मजदूरों को उन के गृहराज्य वापस पहुंचाने के लिए बसें भेजी जानी शुरू की गईं. कई राज्य दूसरे राज्यों में अपनी बसें भेजने लगे ताकि वहां फंसे प्रवासी मजदूर और कामगार अपने राज्यों में अपने घरों को



कोरोना के बाद पुलिसिया कहर झेलने को मजबूर गरीब मजदूर. इन का कोई रहनुमा नहीं.

वापस लौट सकें. उत्तर प्रदेश ने कई राज्यों में अपनी बसें भेजी हैं. मध्य प्रदेश ने महाराष्ट्र को लिखा है कि वहां के लोगों को वापस आने दें. बिहार के मुख्यमंत्री इन में खास निकले जो इन गरीबों को पालने की मुसीबत पालना ही नहीं चाहते और बारबार स्वास्थ्य का नाम ले कर इस जिम्मेदारी से परे हटते रहे. दरअसल, सुशासन बाबू नीतीश कुमार सत्ता के मोह में नरेंद्र मोदी को नाराज नहीं करना चाहते. छत्तीसगढ़ ने कोटा में बसें भेज कर डेढ़ हजार छात्रों को बुलवा लिया है. जम्मूकश्मीर ने भी अपने लोगों को अलगअलग राज्यों से बुलाना शुरू कर दिया. हालांकि जितनी बसें भेजी गईं और जो भेजी जा रही हैं, उन के मुकाबले में प्रवासी मजदूरोंकामगारों की तादाद कहीं ज्यादा है यानी कई लाख हो सकता है एकदो करोड़ से भी ज्यादा हो. हालांकि, बहुतेरे प्रवासी तो लौकडाउन के दौरान ही विभिन्न माध्यमों से चोरीछिपे अपनेअपने राज्य पहुंच चुके हैं.

आखिर इन मजदूरों को लौटने देने में कठिनाई क्या थी? वे अपने गांव ही जा

रहे थे, भोपाल, पटना या लखनऊ में तो डेरा नहीं जमाने वाले थे. इतना समझ लें कि तानाशाह चीन ने वुहान, जहां से कोविड-19 शुरू हुआ, 50 लाख मजदूरों को 3 दिन दिए थे कि वे तुरंत अपने शहरों में चले जाएं. लेकिन, मोदी ने तो 12 घंटे भी नहीं दिए.

भारत में मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई, बेंगलुरु, दिल्ली आदि में कोई 6 करोड़ बाहरी मजदूर हैं, जिन में से 33 प्रतिशत उत्तर प्रदेश से हैं, 15 प्रतिशत बिहार से जबकि 6 प्रतिशत राजस्थान से हैं. दिल्ली की आबादी में 45-50 प्रतिशत बाहरी हैं और मुंबई में भी ये बाहरी लोग 50-60 प्रतिशत हैं, पर लौकडाउन के बाद ये सब नहीं लौट रहे थे, वे ही लौटने को उतावले थे जिन के पास न रहने के लिए मकान थे, न पेट भरने का राशन और न कोई काम. इन में से ज्यादातर इन राज्यों के गांवों से आए हैं. ये भवन निर्माण, फैक्ट्रियों, होटलों, परिवहन, ट्रकों, स्वास्थ्य सेवाओं में काम करते हैं जहां हुनर की जरूरत कम होती है.

प्रवासी मजदूर इसलिए लौट रहे हैं क्योंकि उन्हें एहसास हो गया है कि वे तो देश की गायों से भी बदतर हैं. खुले आसमान के नीचे अधपेट खाना दे कर इन्हें इसलिए रोका जा रहा है कि कहीं लौकडाउन समाप्त होने के बाद सैकड़ों फैक्ट्रियां और व्यापार सस्ते मजदूरों की कमी की वजह से बंद न हो जाएं. सरकार इन गुलाम मजदूरों को शहरों में भूखा रखने को उतावली है क्योंकि फैक्ट्रियां इन के बिना चल नहीं सकतीं. मजदूर वर्ग को यह एहसास हो गया है कि अगर वे अपने घरों को नहीं लौटे तो इन्हीं महानगरों में उन्हें मजदूर से भिखारी बना दिया जाएगा जो दो रोटी पाने के लिए मीलों लंबी लाइनों में अपनी बारी का इंतजार करता तपती धूप में सारा दिन बैठा रहेगा. दिल्ली के आईएसबीटी और मुंबई

घर वापसी से मजदूरों के साथसाथ उन के बच्चों का भी भविष्य अंधकारमय हो गया है. जिम्मेदार कौन?



के बांद्रा स्टेशनों पर जो हजारोंलाखों की भीड़ उमड़ी, उस के दिल में यही डर समाया हुआ था. कई राज्यों से पिछले एक महीने में ऐसी तसवीरें सामने आ चुकी हैं जब 14 अप्रैल को लौकडाउन बढ़ाने की घोषणा के बाद बड़ी संख्या में लोग बस स्टेशनों और रेलवे स्टेशनों के बाहर एकत्रित हो कर घर भेजे जाने की गुहार लगाते नजर आए थे.

भूख ले लेगी जान

दलित जाति का अम्बर कुमार अपने 2 मासूम बच्चों और बीवी के साथ दिल्ली से आगरा 200 किलोमीटर का रास्ता पैदल तय कर के अपने गांव पहुंचा था. दिल्ली में जिस फैक्ट्री में वह काम करता था उस का परिवार उसी फैक्ट्री के परिसर में रहता था, मगर फैक्ट्री बंद कर मालिक ने उन को वहां से बाहर कर दिया. ऐसे में लौकडाउन के बीच अम्बर कुमार अपने बच्चों को कंधों पर लाद कर बीवी और सामान के साथ कैसे इतना लंबा सफर पैदल तय कर के अपने गांव पहुंचा, उस का दिल ही जानता है. अब उसे गांव में या आगरा शहर में जा कर कुछ काम ढूंढ़ना पड़ेगा. दिल्ली वापस आने के नाम पर अब वह कान पकड़ता है.

वहीं, 500 किलोमीटर का सफर पैदल तय कर झांसी पहुंचे मजदूरों का कहना है कि क्या करें साहब, मजदूरी छिनने से बड़ा संकट आ गया है. कोरोना बाद में मारेगा, भूख पहले मार डालेगी.

लक्ष्मण प्रसाद कहता है, "शहर में कौन है हमारा जो दोनों वक्त हमारे परिवार को खाना देगा? जान बचाने के लिए अपनेअपने गांव जा रहे हैं. गांव में आसपास के लोगों से मांग कर खा लेंगे. अभी रास्ते में कुछ लोगों ने आटा, तो कुछ लोगों ने सब्जी दे दी है. उसी से पेट भरा है. अब आगे कुछ मिलेगा, तो खा लेंगे. गांठ में पैसा नहीं बचा है. गांव पहुंच जाएं, तो जान बचे."

लौकडाउन झेलने के बाद भी छिपतेछिपाते, पैदल, साइकिल से, ट्रकों में

फुटपाथ पर अस्थायी बसेरा. इस के बाद क्या होगा, इन्हें नहीं मालूम.



छिप कर, जंगल के रास्ते या फिर रेल पटरियों के सहारे ये मजदूर अपने घरों की ओर भागे जा रहे हैं. उन्हें लौकडाउन की परवा नहीं है. उन का एक ही लक्ष्य है कि बस, किसी तरह सहीसलामत अपने घर पहुंच जाएं. कम से कम वहां उन के जानने वाले तो हैं, जिन से मांग कर वे अपना पेट भर लेंगे. जिन के पास थोड़ीबहुत खेती है वे उस पर कुछ उगा कर खा लेंगे.

इन दिनों सोशल मीडिया हो या अखबार, बाहर के राज्यों में फंसे प्रवासी मजदूरों के घर लौटने की अपील से भरे हैं.

मुंबई में फंसे गोरखपुर के 20 श्रमिक साइकिलों पर 1,700 किलोमीटर का रास्ता तय कर के घर पहुंच गए. इन मजदूरों को राशन की समस्या के कारण इस तरह का निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पड़ा. श्रमिकों ने सरकार पर मदद न करने का आरोप लगाते हुए कहा कि उन के पास ज्यादा पैसे बचे नहीं थे, वहां काम चल नहीं रहा था. जिस चाल में रह रहे थे, उस का मालिक किराया देने का दबाव बना रहा था. आगे कब काम पर लगें और कब पैसे मिलने शुरू हों, क्या पता? ऐसे में बचे पैसों से एक जानने वाले दुकानदार से साइकिलें खरीद कर घर लौटने के सिवा उन के पास कोई और रास्ता नहीं बचा था.

प्रवासी मजदूर अच्छी जिंदगी और थोड़ा ज्यादा पैसा कमा लेने के जिन सपनों के साथ शहर आए थे वे सपने अब पूरी तरह चकनाचूर हो चुके हैं. शून्य से चल कर वे फिर शून्य पर पहुंच गए हैं.

बिहार के 17 लाख मजदूर अभी भी अन्य राज्यों में फंसे हुए हैं. वे भूखे हैं, परेशान हैं, मगर लौकडाउन के कारण घर लौटने का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है. सरकार से गुहार लगा रहे हैं मगर सरकार जानबूझ कर कुछ नहीं कर रही है. पिछले दिनों पटना हाईकोर्ट में इन मजदूरों की घरवापसी को ले कर एक याचिका दाखिल हुई थी, जिस पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने हाईकोर्ट में एक शपथपत्र दायर कर साफ शब्दों में कह दिया कि जब तक लौकडाउन है तब तक इन्हें लाना संभव नहीं है. वे इन कमाऊ पूतों को ला कर अपने राज्य की अर्थव्यवस्था का सत्यानाश नहीं करना चाहते क्योंकि अब उन के राज्य के मजदूर कमाते बाहर हैं और पैसा उन के



बिहार सहित दूसरे राज्यों के मजदूरों की बदहाली का एक दृश्य. इन्हें देख किसी का दिल नहीं पसीजा.

परिवार बिहार में ही खर्च करते हैं. बिहार की ऊंची जातियों ने हमेशा गरीबोंपिछड़ों को लूटा है और अब नीतीश कुमार खुद पिछड़े होते हुए भी भगवा ब्राह्मणी एजेंडा लागू कर रहे हैं जिस में गरीबों को लूटना ही धर्म का मूल उद्देश्य रहा है. शहरों में फंसे इन प्रवासी मजदूरों की जान कोरोना से पहले भूख ले ले, तो आश्चर्य नहीं क्योंकि सदियों से ये लोग दूसरों के लिए अपनी जान देते रहे हैं.

लौकडाउन खत्म हो भी जाए तो भी ये मजदूर वापस शहरों की ओर हरगिज नहीं

लौटेंगे क्योंकि वहां उन को तुरंत ही काम मिल जाएगा, यह कहा नहीं जा सकता. लौकडाउन के कारण छोटे उद्योग, कारखाने, दुकानें, रैस्तरां, होटल, फैक्ट्री, रियल एस्टेट बरबादी की कगार पर आ खड़े हुए हैं. इन को खुद संभलने में लंबा वक्त लग जाएगा. सवाल उठता है कि ये कितने कामगारोंमजदूरों को वापस नौकरियों पर रख पाएंगे और इन में से कितने अपने कामगारों को पहले जितनी तनख्वाह दे पाएंगे?

इस में दोराय नहीं कि लौकडाउन खुलने के बाद देश का गरीब तबका पहले से कहीं ज्यादा बदहाली और भुखमरी की कगार पर खड़ा होगा. जो मजदूर किसी तरह अपने गांवघर पहुंच गया है, अब फिर शहर आने की न तो हिम्मत जुटा पाएगा और न ही शहरों में पहले की तरह रोजगार उपलब्ध होंगे. सबकुछ पहले जैसा होने में अब एक लंबा वक्त लगेगा. गांवकसबों में खाने वाले मुंह ज्यादा होंगे और जमीन या कामधंधा कम. लिहाजा भुखमरी, कुपोषण, बीमारी, कर्ज, अपराध और मौतों का आंकड़ा बेतहाशा बढ़ेगा. सरकारी मशीनरी तो कभी इस का आकलन भी नहीं करेगी.

आपदा प्रबंधन में नाकाम सरकार

कोरोना वायरस की चेन तोड़ने के लिए भारत के पास लौकडाउन एकमात्र रास्ता है, लेकिन उस के बाद बहुत बड़ी संख्या में रिवर्स माइग्रेशन बहुत से नए संकटों को जन्म देगा. इस के चलते आने वाले दिनों में लोगों के सामने बेरोजगारी और भूख अपने विकराल रूप में नजर आएगी. सरकार के पास इस संकट से निबटने के लिए कोई योजना नहीं है. कोई रिसर्च या सर्वे भी अभी तक शुरू नहीं हुआ है कि आने वाले वक्त में बेरोजगारों की राज्यों में कितनी बड़ी फौज खड़ी होगी. सरकार के पास कोई ब्लूप्रिंट नहीं है कि किस तरह इस आने वाली परेशानी से देश उबरेगा.

भारत सरकार की मुश्किल यही है कि वह कोई भी योजना किसी ठोस रिसर्च के आधार पर तैयार नहीं करती है. लौकडाउन भी इस से अछूता नहीं है. इस वक्त सरकार का खजाना बिलकुल खाली है. हालत यह है कि वह अपने कर्मचारियों को इस बार महंगाई भत्ता भी नहीं देगी. इतना ही नहीं, जनवरी में जो 4 परसैंट मंहगाई भत्ता दिया गया था, उस को भी वापस लिया जा रहा है. यानी लगभग 54 लाख केंद्र के सरकारी कर्मचारी और 60 लाख पैंशनधारी अर्थात कुल मिला कर एक करोड़ से ज्यादा की तादाद इस से प्रभावित होगी.

दुनिया के किसी भी देश में ऐसा देखने को नहीं मिलेगा कि जिस धनराशि या भत्ते को देने का ऐलान हो चुका हो उस को सरकार ने वापस ले लिया. राज्य सरकारें भी यही करेंगी तो यह गिनती दोतीन गुना हो जाएगी. ऐसी जर्जर अर्थव्यवस्था के बीच रिवर्स माइग्रेशन से उत्पन्न समस्याओं का सामना आखिर हम कैसे करेंगे?

प्रवासी गरीब के लिए 5 किलो चावल और 5 किलो गेहूं की व्यवस्था कर के सरकार भले यह समझे कि पैकेज पूरा हो गया, लेकिन गरीब की आंखों के आगे उस के भूख से बिलबिलाते छोटेछोटे बच्चे हैं, बीवी है, मांबाप हैं, अन्य परिजन हैं. आखिर सरकार के 10 किलो अनाज से वह कितने दिन इन का पेट भर पाएगा, इसलिए जितनी जल्दी हो सके, उन का गांव लौटना जरूरी है.

भारत में 2011 में शीर्ष 20 अंतर्राज्यीय प्रवास गलियारे

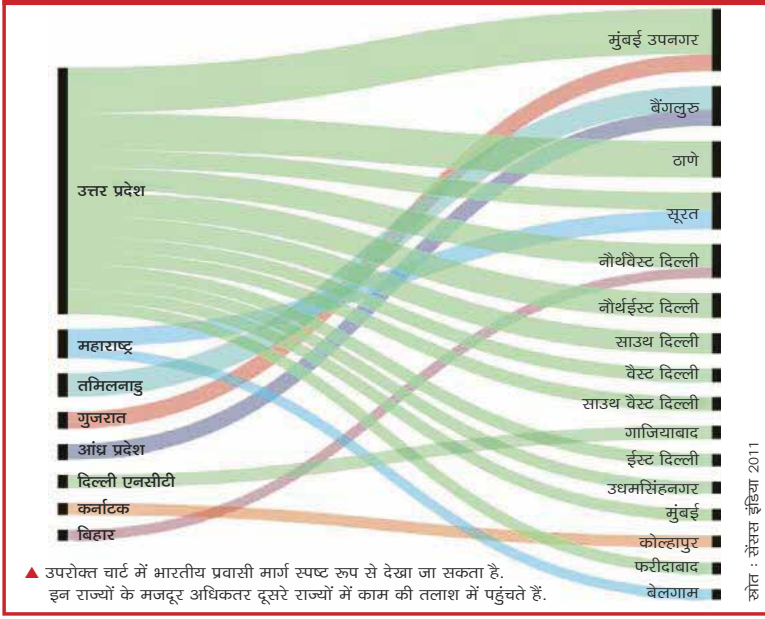

▲ उपरोक्त चार्ट में भारतीय प्रवासी मार्ग स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है. इन राज्यों के मजदूर अधिकतर दूसरे राज्यों में काम की तलाश में पहुंचते हैं.

किराएदार ज्यादा परेशान हैं

दिल्ली के सदर बाजार में संतोष की फास्टफूड की छोटी सी दुकान है. दुकान का किराया 15 हजार रुपए महीना है. लौकडाउन में दुकान तो बंद है मगर दुकानमालिक किराया पूरा वसूल रहा है. संतोष की सारी बचत अपने 2 वर्करों की तनख्वाह देने, दुकान का किराया चुकाने और घर का खर्च चलाने में खत्म हो चुकी है. उस के बैंक अकाउंट में मात्र 6 हजार रुपए बचे हैं जो महीना खत्म होतेहोते खत्म हो जाएंगे. लौकडाउन खत्म होने पर जब दोबारा दुकान खुलेगी तो संतोष को सबकुछ जीरो से शुरू करना पड़ेगा. दुकान खुलते ही दुकानमालिक अपने किराए के लिए सिर पर चढ़ आएगा, बिजली का बिल जमा करना होगा, दुकान में फिर से सारा खानेपीने का सामान भरना होगा और फिर से नए ग्राहक बनाने के लिए लंबा इंतजार करना होगा क्योंकि उस इलाके के फास्टफूड के शौकीन ज्यादातर छात्रछात्राओं, जो कोरोना के डर से लौकडाउन की शुरुआत में ही अपनेअपने जिलों को लौट गए हैं, की वापसी भी जल्दी नहीं होगी. ऐसे में बिना पूंजी के संतोष पहले वाली स्थिति में कैसे पहुंचेगा, यह सोच कर उस का ब्लडप्रैशर बढ़ा हुआ है. वह यह सोच कर भी परेशान है कि उस के कारीगर अगर अपने गांव से वापस न लौटे तो फास्टफूड तैयार करने वाले नए कारीगरों की खोज करना भी कितना मशक्कत का काम होगा और नए कारीगर कितना पैसा मांगें और काम में कितने कुशल हों, इस का भी कुछ अंदाजा नहीं है. यह समस्या सिर्फ

एक संतोष की नहीं, बल्कि दिल्ली सहित देशभर के छोटेबड़े सभी बाजारों के दुकानदारों के सामने है. कम या ज्यादा.

यही हाल शहरों में किराए पर रह रहे निम्न और निम्नमध्य वर्ग के सामने है, जो रोज कुआं खोदते और रोज पानी पीते थे. लौकडाउन में बिना काम के घरों में बंद बैठे होने पर भी उन को किराया तो समय पर देना है. अभी खाने के लिए भी पैसे खत्म होने को हैं, ऐसे में कहां से लाएंगे किराया? किराया न दिया तो मकानमालिक बाहर कर देगा. बहुतेरे लोग जो किराया देने का बोझ नहीं उठा सकते थे, अपने गांवों की ओर निकल गए हैं. आखिर बिना काम के किराया कहां से दें? दिहाड़ी मजदूर और छोटामोटा व्यापार करने वाले इस वक्त सब से ज्यादा परेशान हैं. एक तरफ कमाई नहीं है और दूसरी तरफ घर और दुकान का किराया देना है.

हालांकि, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने लौकडाउन के दौरान गरीबों से जबरन किराया वसूलने की शिकायत मिलने पर मकान मालिकों पर कार्रवाई करने की सख्त चेतावनी दी है. उन्होंने कहा है कि ऐसे किराएदार जो लौकडाउन के दौरान मकान का किराया देने में असमर्थ हैं, अगर उन से जबरदस्ती किराया वसूला गया तो मकान मालिकों के खिलाफ सरकार सख्त कार्रवाई करेगी. कुछ ऐसे ही आदेश उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भी दिए हैं, मगर जमीनी स्तर पर हकीकत यह है कि किराया न भर पाने के चलते जहां अधिकतर लोग पलायन करने को मजबूर हैं, वहीं जो लोग मजबूरी में रह रहे हैं उन पर मकान मालिक समय पर किराया देने का दबाव बनाए हुए हैं और मकान मालिक की शिकायत कर के उस से दुश्मनी मोल लेने की हिम्मत किसी किराएदार में नहीं है.

लौकडाउन पार्ट-3 की घोषणा होते ही किराएदार और मालिक दोनों की मुश्किलें बढ़ गई हैं. दिल्ली में करीब 50-60 लाख लोग फैक्ट्री, गोदाम, दुकान, मकान व अन्य जगहें किराए पर रहने के लिए इस्तेमाल करते हैं. मुख्यमंत्री ने घोषणा तो कर दी कि जो लोग किराया नहीं दे सकते, सरकार उन का किराया भरेगी, मगर इस की पहल अभी तक नहीं हुई है. और जब फैक्ट्री, गोदाम, दुकानों पर ताले जड़ दिए गए हैं तो वर्कर्स को वहां कैसे रहने देते?

जब बाहर से आएगा बड़ा संकट

ऐसी ही परेशानी उन भारतीयों की भी है जो अच्छी जिंदगी का सपना ले कर दूसरे देशों में गए हैं. उन के आगे यह संकट कहीं ज्यादा भयावह है. खाड़ी देशों में भारतीय मजदूर 27 लाख से ज्यादा हैं जो बेहद जिल्लत के साथ काम करते हैं ताकि भारत में उन के परिवारों को खाना, कपड़ा और मकान मिल सके. उन्हें भी अब लौटना है.

उन में काफी मजदूर हैं तो काफी पढ़ेलिखे भी. ये प्रोफैशनल्स का संकट है. यह उन लोगों का संकट है जिन का मानसम्मान बाहर है. यह उस तबके का संकट है जिन्होंने अभी तक भारत की परिस्थितियों को बाहर से देखा है, झेला नहीं है. यह वह तबका भी है जिस की कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा भारत सरकार एंजौय करती रही है क्योंकि यह वह तबका है जो अब तक अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा भारत में अपने परिजनों को भेजता रहा है. वह खुद बाहर किसी भी तरह की परिस्थिति में रहा, अच्छी या



प्लांट और उद्योगधंधे बंद होने से पटरी से उतरी अर्थव्यवस्था. आगे क्या होगा, इस का जवाब देने के लिए कोई तैयार नहीं.

बुरी, मगर अपनी कमाई जरूर भेजता रहा है. उन्हें वहां जो भी रोजगार उपलब्ध था वह कोरोना की वजह से अब जाता रहा है. वे देश की विदेशी मुद्रा के खजाने भरते रहे हैं. अब वे भी अपने वतन लौटने को व्याकुल हैं. क्योंकि बिना पैसे के दूसरे देश में कोई कब तक बसर कर सकता है. कई विदेशी कंपनियों ने अभी तक मार्च का पेमैंट भी नहीं किया है. अप्रैल का पेमैंट होगा, इस बारे में तो भूल ही जाइए. ऐसे में जब भी हवाई सफर खुलेगा तो हर कोई भारत लौटना चाहेगा. इन पढ़ेलिखे प्रोफैशनल्स को शायद लौटने के लिए हवाईजहाज भी मिल जाएं जैसे 30-31 जनवरी को चीन के वुहान से सैकड़ों छात्रों को लाने के लिए एयर इंडिया ने फ्लाइट चलाई थी. मगर वहां के मजदूरों और कामगारों को वतन वापसी के लिए थोड़ा लंबा इंतजार करना होगा और विदेश में बिना पूंजी के वे कैसे जीवित रहेंगे, यह डर उन्हें खाए जा रहा है.

जौर्डन में एक सिलाई कारखाने में काम करने वाले आस मोहम्मद ने गोरखपुर फोन कर के अपनी पत्नी से अपनी व्यथा बताई. जिस सिलाई कारखाने में वह काम करता है, वह कोरोना संकट के चलते 2 महीने से बंद है. जो ठेकेदार गोरखपुर से कामगारों को अपने साथ ले कर गया था, उस ने छोटेछोटे कमरों में एकसाथ 6 कामगारों के रहने का इंतजाम किया था. 2 महीने से आस मोहम्मद अपने 5 साथियों के साथ उस छोटी सी कोठरी में बंद है. काम बंद है. तनख्वाह मिली नहीं है. खाने के लिए एक वक्त थोड़े चावल और सब्जी बनती है और कुछ दिनों के बाद उस के लिए भी पैसे नहीं होंगे. कारखाना कब खुलेगा, उस में वापस कितने कामगार रखे जाएंगे, किसी को कुछ नहीं पता है. आस मोहम्मद को पूरी आशंका है कि आधे से अधिक लोगों को कारखाने के काम से निकाल दिया जाएगा. उस में उस का भी नाम शामिल होगा. कुछ अच्छी कमाई का सपना ले कर वह ठेकेदार के साथ जौर्डन गया था, अब वापसी में उसे खाली हाथ लौटना होगा. आस मोहम्मद फोन पर रोता है कि क्यों वह बीवीबच्चों

को छोड़ कर इतनी दूर आया. पता नहीं अब कब और किस हालत में वापसी होगी. उस को इंतजार है कि जल्दी हवाई रास्ता खुले, तो गांठ में जमा पूरे पैसे खत्म होने से पहले किसी तरह वह अपने परिवार के पास पहुंच जाए.

भारतीयों की जो बहुत बड़ी तादाद दुनिया के अलगअलग देशों में काम कर रही है, ये सारे कोई रईस लोग नहीं हैं. बहुत बड़ी तादाद भारत के गरीब वर्कर्स की है. ठीक उसी तरीके से जैसे गांव से चल कर दिल्ली, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई, बेंगलुरु में वर्कर पहुंचता है और कहीं कंस्ट्रक्शन साइट पर मजदूर बन जाता है, कहीं दिहाड़ी मजदूरी करता है, कहीं किसी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट से जुड़ जाता है, ठीक उसी तरह भारत से निकल कर दुनिया के अलगअलग देशों में बहुत बड़ी तादाद में भारत के मजदूर और कामगार पहुंचे हुए हैं और सालों से वहां काम कर रहे हैं.

कामगारों का यह बहुत बड़ा तबका दुनिया के बाजार से पैसा भारत में भेजता रहा है, मगर अब उस पर ब्रेक लग गया है. उन की नौकरियां जा रही हैं. उन के आगे रहने और खाने का संकट पैदा हो गया है. उन की जेब में बची पूंजी इन 2 महीनों में धीरेधीरे कम हो गई है. इस बार वे बिलकुल खाली हाथ लौटेंगे. तब यहां की हालत क्या होगी, इस का सरकार ने अभी तक अनुमान भी नहीं लगाया है.

दुनियाभर में भारत के तकरीबन 2 करोड़ 81 लाख 98 हजार 352 लोग हैं, जो भारतीय पासपोर्ट के साथ दुनिया के अलगअलग देशों में रह कर काम कर रहे हैं. इन में से कुछ को एनआरआई के रूप में पहचान मिली है, मगर अधिकांश को भारतीय लेबर के तौर पर जाना जाता है. इन में सब से बड़ी तादाद में लोग अरब वर्ल्ड में हैं. अरब वर्ल्ड में तकरीबन 90 लाख भारतीय रहते हैं जो वहां मजदूरी करते हैं. अरब वर्ल्ड का हाल फिलहाल

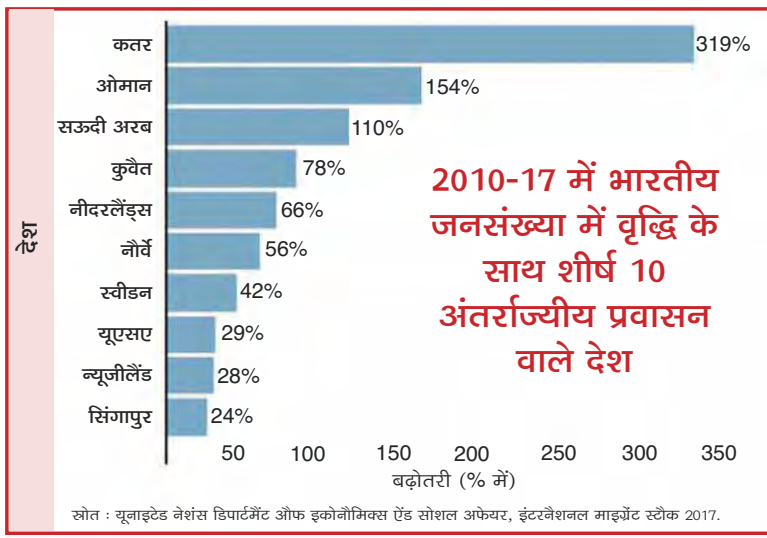

स्रोत : यूनाइटेड नेशंस डिपार्टमैंट औफ इकोनौमिक्स ऐंड सोशल अफेयर, इंटरनैशनल माइग्रेंट स्टौक 2017.



विदेश गए मजदूरों की तो और भी ज्यादा दुर्गति हुई है जो न घर के रहे और न ही घाट के.

यह है कि वहां कुछ काम को छोड़ कर बाकी सारे काम ठप हो चुके हैं. वहां इस वक्त सिर्फ गैस का काम, तेल का काम और कुछ निर्माणकार्य ही हो रहे हैं. गैस, तेल और निर्माणकार्य में 90 लाख कर्मियों में से सिर्फ 21 लाख 90 हजार वर्कर ही कार्यरत हैं, जिन में भी छंटनी शुरू हो चुकी है या उन के वेतन का कुछ हिस्सा काटा जा रहा है. बाकी लोग अन्य क्षेत्रों में कार्यरत थे, मगर कोरोना के कारण हुए लौकडाउन में अब उन के पास कोई काम नहीं रहा है. ये तमाम बेरोजगार जल्दी ही वतनवापसी करेंगे. उन की स्थिति अब क्या होगी ?

यूनाइटेड अरब अमीरात में 34 लाख 25 हजार 144 भारतीय हैं. यूएई ने हाल ही में एक आदेश जारी किया है कि वहां की कंपनियां चाहें तो गैरनागरिक कर्मचारियों को वैतनिक या अवैतनिक छुट्टी पर भेज सकती हैं. इस के अलावा गैरनागरिक कर्मचारियों को किसी भी प्रकार का भत्ता देय नहीं होगा. गैरनागरिक कर्मचारियों का मतलब यह है, जो अन्य देशों से आ कर यूएई की कंपनियों में काम कर रहे हैं, जिन में भारतीयों की तादाद सब से ज्यादा है. सऊदी अरब में करीब 25 लाख 54 हजार 947 भारतीय काम करते हैं, वहीं कुवैत में 10 लाख 29 हजार 861 भारतीय कार्यरत हैं. ओमान में 7 लाख 81 हजार 141 भारतीय, कतर में 7 लाख 45 हजार 775 और बहरीन में 3 लाख 26 हजार 658 भारतीय कार्यरत हैं. कोरोना संकट के चलते इन सभी की नौकरियां खतरे में हैं. लौकडाउन खत्म होने पर इन में से कितनों को वापस काम मिलेगा, कहा नहीं जा सकता. 2 महीने से बिना तनख्वाह के बंद बैठे इन में से अधिकांश लोग वतनवापसी का इंतजार कर रहे हैं.

सवाल सिर्फ यूएई में कार्यरत भारतीयों का नहीं है, भारतीय कामगारों के आगे संकट अमेरिका, ब्रिटेन, सिंगापुर, मलयेशिया, इटली, जरमनी, फिलिपींस हर जगह गहराता जा रहा है. इन देशों में कई क्षेत्रों में भारत के लोग काम करते हैं. करीब 36 लाख भारतीय

इन देशों में काम कर रहे हैं. दुनिया के अलगअलग देशों में जो भारतीय हैं, वे जितना पैसा कमा रहे हैं, एक रिपोर्ट के मुताबिक, सिर्फ मार्च के महीने में उस पैसे में सौ बिलियन डौलर की कमी आई है. अप्रैल माह का अनुमान अभी नहीं लगाया जा सका है. दुनियाभर के माइग्रेंट वर्कर्स में सब से ज्यादा संख्या भारतीय वर्कर्स की है. पिछले साल भारत के वर्कर्स ने 714 बिलियन डौलर की कमाई की थी, जो घट कर मार्च में 575 बिलियन डौलर रह गई है. यानी, 20 फीसदी की कमी मार्च में अंकित की गई है. माना जा रहा है कि मई खत्म होतेहोते और जून, जुलाई आतेआते अमेरिका में 3 करोड़ 70 लाख नौकरियां खत्म हो जाएंगी. नौकरी गंवाने वालों में भारतीय कर्मचारियों की तादाद सब से ज्यादा होगी. ये सभी बेरोजगार हो कर वापस भारत लौटेंगे.

बाहरी कामगारों को रोजगार संकट

हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका में ग्रीन कार्ड यानी परमानैंट रेजिडैंस के लिए जो लोग अप्लाई करने वाले थे, उन पर 2 महीने की रोक लगा दी है. ऐसे में जो भारतीय अमेरिका जा कर बसना चाहते थे, फिलहाल वे नहीं जा पाएंगे. इन में से अधिकांश अब विदेश जाने का खयाल भी दिल से निकाल देंगे. इन्हें भी जीविकोपार्जन के लिए भारत में ही काम चाहिए.

वहीं, अमेरिका में चल रही चीन की मशहूर होटल चेन 'ओयो' द्वारा भारतीय कर्मचारियों को 4 महीने बिना वेतन के छुट्टी पर भेजे जाने की खबर आ रही है. यानी, उन को फिलहाल नौकरी से तो नहीं निकाला जा रहा है, मगर 4 महीने उन को कोई वेतन नहीं दिया जाएगा. बिना पैसे के इन में से कितने लोग अमेरिका जैसे देश में सर्वाइव कर सकते हैं? जाहिर है फ्लाइट खुलते ही इन में से अधिकतर लोग वतन वापस आएंगे.

इसी तरह भारत के पड़ोसी देश बंगलादेश में भी 10 हजार भारतीय कामगार कपड़ा और टैक्सटाइल इंडस्ट्री में कार्यरत हैं. कोरोना संकट में यह इंडस्ट्री बंद हो गई है. स्थिति यह है कि बंगलादेश का ब्रैंडेड कपड़ा जो दुनियाभर के देशों में भेजा जाता था, उस के लिए कहा गया है कि सैनिटाइज कर के भेजें वरना न भेजें. इंडस्ट्री के सामने यह बहुत बड़ा संकट है कि बने कपड़े के थान को



खुद वस्त्रहीन हो रहा बंगलादेश का परंपरागत कपड़ा उद्योग, अब शायद ही कभी यहां की रौनक वापस आएगी.

कैसे सैनिटाइज किया जाए. एक अनुमान के मुताबिक, अब तक करीब 3 अरब 17 लाख का और्डर रद्द हो चुका है. जिस के कारण डेढ़ करोड़ लोगों की आजीविका बंगलादेश में संकट में पड़ गई है, जो कपड़ा उद्योग से जुड़े हैं. इन में काफी संख्या भारतीयों की है. हालांकि बंगलादेश में इन कारीगरों को बहुत ज्यादा पैसा नहीं मिलता है लेकिन 8-9



बहुत तेजी से बढ़ेगी युवा बेरोजगारों की भीड़, शहरी और ग्रामीण युवाओं के ख्वाब मिट्टी में मिल गए हैं.

हजार रुपए महीना कमाने वाला भी विदेश में बिना दिहाड़ी पाए गुजारा कैसे करेगा? जाहिर है, अगले 6 माह तक या उस से भी ज्यादा वक्त जब तक दुनिया के सिर से कोरोना का संकट समाप्त नहीं हो जाता, बंगलादेश का तैयार माल गोदामों में सड़ता रहेगा. इस का सीधा असर कर्मचारियों की नौकरियों और तनख्वाहों पर पड़ेगा. बाहरी कर्मचारियों की पहले छंटनी होगी. ऐसे में भारतीय कामगारों की वतनवापसी होगी.

न कोई योजना, न रणनीति

भारत के भीतर बेरोजगारी की समस्या पहले ही विकराल रूप लिए खड़ी है. यहां 15 साल की उम्र पार करते ही अधिकांश ग्रामीण लड़के मजदूर बन जाते हैं. एक अनुमान के मुताबिक, हर महीने करीब 20 लाख लोग मजदूर हो जाते हैं जो 15 बरस की आयु पार कर रहे हैं. यानी, प्रतिवर्ष करीब ढाई करोड़ नए मजदूर बन रहे हैं. इन में से सब को दिहाड़ी नहीं मिल पाती है. 27 से 30 लाख लोगों को ही कुछ काम मिल पाता है, बाकी किसानी करते हैं, दुकानों में लग जाते हैं, देश में या देश के बाहर पलायन कर जाते हैं या फिर बेकार घूमते हैं. लौकडाउन में अनेक काम पूरी तरह ठप हो गए हैं. आने वाले लंबे समय तक हर क्षेत्र में कम से कम कर्मचारियों से काम चलाने की प्रवृत्ति दिखाई देगी. सो, चारों तरफ खाली हाथ काम और खाना मांगेंगे. दिहाड़ी मजदूर ही नहीं, सारे व्हाइट कौलर वर्कर, किराए पर जी रहे लोग, शेयरों के इनवैस्टर, ट्रैवल, मीडिया, लेखन, एंटरटेनमैंट, ब्यूटी, रिटेल व्यापार, भवन निर्माण से जुड़े लोगों पर बेकारी और भुखमरी की मार पड़ेगी. बाजार से उपभोक्ता गायब रहेगा, लग्जरी आइटम्स की खरीदारी में कमी आएगी, और ऐसे में एक बहुत बड़ा अनएंप्लौयमैंट बाहर से धमकने वाला है, जिस के लिए कोई योजना, कोई रणनीति, कोई आश्वासन भारत सरकार के पास नहीं है. ●


श्रीमतीजी
डैस्टिनेशन
इस बार छुट्टी एक बिलकुल शांत प्रदूषण रहित यातायात मुक्त स्थान पर मनाएंगे.
वाह! कितना आनंद आएगा.
पिछली बार हम जहां गए थे वहां कितनी शांति थी. ट्रैफिक जाम की कोई समस्या ही नहीं थी. दूरदूर तक सब साफ दिखता था.
हां, इस जगह भी सारा दिन डिस्टर्ब करने वाला कोई नहीं होगा.
इस से पहले हम जहां ठहरे थे वहां कितनी तरह की चिड़ियां थीं. सारा-सारा दिन उन का चहचहाना मुझे आज भी याद है.


इस जगह भी बहुत सी नई चिड़ियां दिखती हैं.
उस गैस्टहाउस में कितनी अच्छी किचन थी.
हां.
यहां भी हैं. जब चाहे, जो चाहे बनाओ और खाओ. कोई रोकटोक नहीं है.
क्या बात है!
वाह! मैं तो बहुत ही उत्साहित हूं.
पापा, जल्दी बताइए न, कौन सी जगह है?
हैं!!
अपना घर.

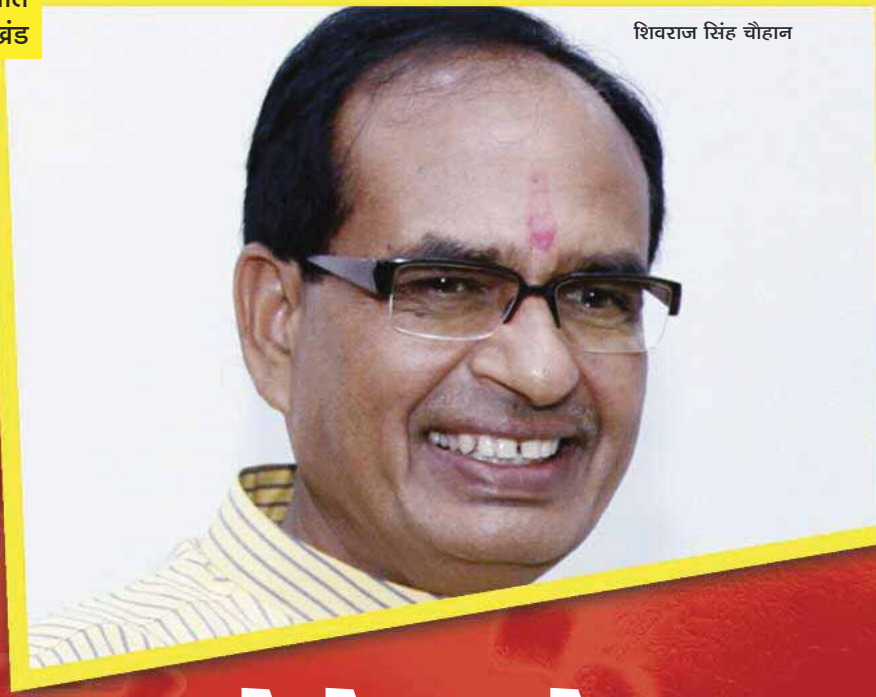

शिवराज सिंह चौहान

कोरोना से ज्यादा घातक पाखंड का वायरस

• भारत भूषण श्रीवास्तव

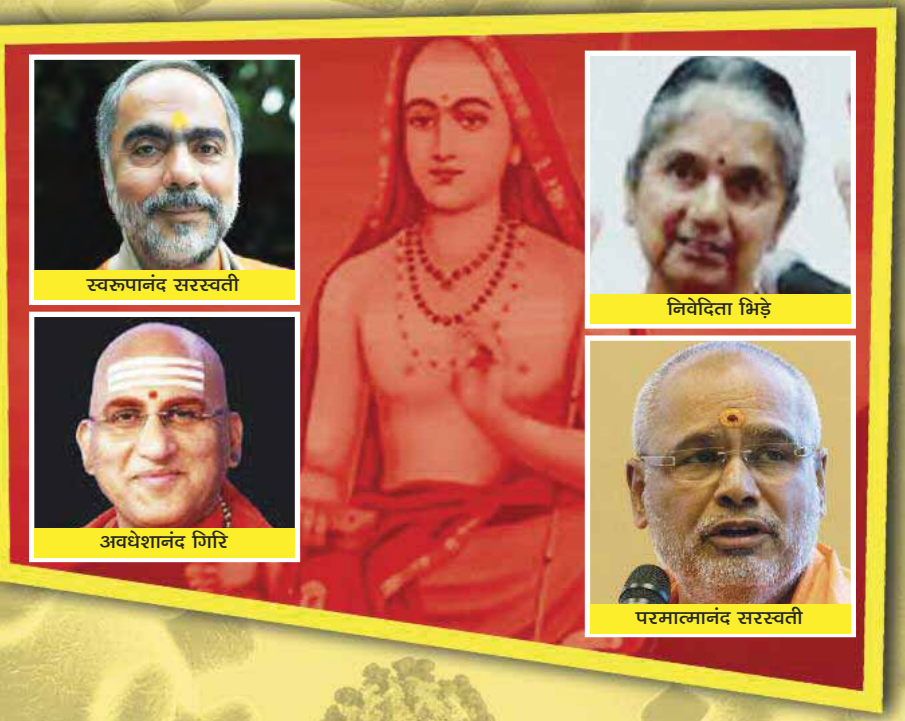

यह आस्था नहीं बल्कि चालाकी है कि प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने के बजाय उन्हें भगवान की देन मान कर लोगों को डराया जाए. कोरोना के कहर से धर्मकर्म के जरिए निबटने की शिवराज सिंह की कोशिश एक बड़े खोखलेपन को उजागर करती है.

कोरोना वायरस को किसी धार्मिक पाखंड, आयुर्वेद, ज्योतिष, झाड़फूंक, तंत्रमंत्र या टोनेटोटकों से काबू नहीं किया जा सकता, यह बात किसी सुबूत की मुहताज नहीं रह गई है, लेकिन फिर भी इस बात को अगर बारबार दोहराना पड़ता है तो इस की बड़ी वजह यह है कि सत्तारूढ़ भाजपा के शीर्ष और जिम्मेदार पदों पर बैठे नेता एक षड्यंत्र और पूर्वाग्रह के चलते इन्हीं पाखंडों को थोपने की कोशिश करते कोरोना के कहर को और बढ़ा ही रहे हैं. एक तरफ दुनियाभर के देशों के नेता और वैज्ञानिक कोरोना का इलाज करने और वैक्सीन बनाने में दिनरात एक कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ भाजपाई नेता हकीकत और विज्ञान

की सचाई को झुठलाते हुए यह जताने की कोशिश, जिसे मूर्खता और धूर्तता कहना ज्यादा बेहतर होगा, कर रहे हैं कि कोरोना को सनातन धर्म के सिद्धांतों से काबू किया जा सकता है.

इस साजिश को बड़ा मंच दिया मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जो 28 अप्रैल को साधुसंतों की शरण में थे. इस दिन आदि शंकराचार्य की जयंती थी. शिवराज सिंह ने कई नामी संतों और धर्मगुरुओं से वीडियो कांफ्रैंसिंग के जरिए रूबरू होते उन से पूछा कि कोविड-19 से निबटने का रास्ता क्या है. इस पौराणिक से संवाद का विषय रखा गया था कोविड-19 की चुनौतियां और एकात्म बोध. बकौल शिवराज सिंह, कोरोना से निबटने के लिए नए प्रकाश की जरूरत है. चिकित्सा विज्ञान और डाक्टर अपना काम कर रहे हैं लेकिन अब संत और आध्यात्मिक गुरुओं को भी रास्ता दिखाना जरूरी है.

बस इतना कहनाभर था कि देशभर के नामीगिरामी गुरु नया प्रकाश ले कर स्क्रीन पर प्रगट हो गए जो डेढ़ महीने से घाटा झेल रहे हैं. इन की दुकानें बंद तो नहीं हुई हैं लेकिन लौकडाउन के चलते आमदनी जरूर पहले सी नहीं हो रही है. इन ब्रैंडेड महात्माओं का एक यह बड़ा डर अपनी जगह वाजिब भी है कि अगर भक्तों की दानदक्षिणा की लत छूट गई तो वातानुकूलित मठों और आश्रमों की रंगीनी, वीरानी में तबदील हो जाएगी और इन्हें देसीघी के पकवान व ड्राईफ्रूट के लाले पड़ जाएंगे.

संकट और नुकसान के इन दिनों में धर्मप्रेमी शिवराज सिंह ने इन्हें दुकान और धंधा चमकाने का मौका दिया और एवज में प्रदेश की जनता को मिला यह आशीर्वादनुमा संदेश कि कोरोना का संकट ईश्वर द्वारा लिया जा रहा इम्तिहान है, इसलिए घबराओ मत, हिम्मत रखो. भगवान इम्तिहान के बाद सब ठीक कर देगा. बस, तुम लोग हमें मत भूल जाना. अब यह इन विद्वानों ने नहीं बताया कि भगवान को बैठेठाले यह क्या ठिठोली सूझी कि उस ने भक्तों का ही जीना मुहाल कर दिया और यह भी नहीं बता रहा कि यह इम्तिहान कितने दिन और चलेगा.

और अहम सवाल यह कि वह खुद क्यों कोरोना के डर से मंदिरों में छिपा बैठा है और आप जैसे उस के दलाल भी मुंह छिपाते अपने दड़बों में कैद हैं. क्यों नहीं पहले की तरह आप महिलाओं की भव्य शोभायात्रा निकाल कर किसी मैदान में 101 कुंडीय कोई बगुलामुखी छाप यज्ञ कर कोरोना को भस्म या नष्ट कर देते? इस का मेहनताना देने तो हम हमेशा की तरह तैयार हैं ही, इस बार तो पीछे आप लोग हट रहे हो.

चालाकीभरे बोल वचन

जब औनलाइन दरबार सज गया तो राजन और ऋषियों का वार्त्तालाप शुरू हुआ. जूना अखाड़ा, हरिद्वार के मठाधीश अवधेशानंद गिरि ने बड़े दार्शनिक अंदाज में कहा, "चुनौती में अभाव और अवसाद तो आते ही हैं लेकिन चुनौतियां, समाधान व अवसर भी साथ लाती हैं." चिन्मय मिशन मुंबई के स्वरूपानंद सरस्वती ने ज्ञान इन शब्दों में बघारा, "आपत्ति में भी ईश्वर की कृपा होती है. आयुर्वेद का प्रचार हो रहा है. यह इम्यून सिस्टम को बढ़ाने में उपयोगी है."

इन दोनों भगवान टाइप के महात्माओं से एक कदम आगे बढ़ते कन्याकुमारी की महिला संत निवेदिता भिड़े के मुताबिक,

मनुष्य एकात्मा को भूल कर उपयोग में जीने लगा था. ईश्वर ने कोरोना से आत्मबोध का महत्त्व बता दिया है. राजकोट के परमात्मानंद सरस्वती ने तो यह कहते पूरी फिलौसफी की ही वाट लगा दी कि कोरोना मनोवैज्ञानिक कष्ट है. इस संकट के बहाने आज ईश्वर संभवतया यह शिक्षा देना चाह रहा है कि व्यक्ति जितना उपभोग करेगा, वह कष्ट का कारण बनेगा.

बीकानेर के संत संवित सोम गिरि के मुताबिक, कोविड-19 एक चुनौती है लेकिन इस का समाधान भी आसान है. आज विश्व को शंकराचार्य का संदेश देना जरूरी है. कोरोना संक्रमण एक संदेश है कि हम अपने अपराध के लिए प्रकृति और पर्यावरण से क्षमा मांगें. नागपुर के मुकुल कानिटकर ने बिना किसी लागलपेट के सीधी सनातनी दुकानदारी की बात करते कहा, "हमारे यहां पहली रोटी गाय को खिलाने और तुलसी को जल चढ़ाने जैसी परंपराएं संस्कृति का हिस्सा हैं. लौकडाउन को घरवास का नाम हम ने दिया है जिसे मनोबल बढ़ाने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए."

डरे तो ये खुद हैं

इन लोगों के बयानों (प्रवचनों) से साफ दिख रहा है कि इन्हें कोरोना से कोई लेनादेना नहीं और न ही उस की जानकारी है बल्कि इन की चिंता और डर धर्म की अपनी दुकानदारी पर मंडराता खतरा है. इसीलिए सभी ने घुमाफिरा कर संकेतों में दानदक्षिणा की ही बात की. चूंकि शिवराज सिंह ने जनसंघ के संस्थापक दीन दयाल उपाध्याय का दिया एकात्म चिंतन या वाद शब्द जोड़ दिया था, इसलिए महानुभावों ने उसे भी जोड़ दिया और चूंकि शंकराचार्य जयंती थी, इसलिए उन का भी पुण्य स्मरण सरकारीतौर पर कर लिया गया.

भाजपाई खेमे के नामी धर्मगुरु अवधेशानंद इसी डर के चलते योग, आध्यात्म और आयुर्वेद की वकालत करते नजर आए तो स्वरूपानंद स्वरस्ती ने आयुर्वेद का खुलेआम न केवल प्रचार किया बल्कि कोरोना को उत्साह बढ़ाने वाली ईश्वरीय कृपा बता डाला. ये दोनों शायद ही बता पाएं कि आयुर्वेद कैसे और



मध्य प्रदेश में कोरोना वायरस को हराने के लिए शिवराज आध्यात्म और पाखंड के मरहम से मरीजों का इलाज कर पाएंगे?

कहां कोरोना से निबट रहा है. इन महात्माओं की मंशा या चालाकी इतनीभर है कि इन के गाल बजाने भर से मान लिया जाए कि देशभर के अस्पतालों में कोरोना संक्रमित लोगों का जो इलाज चल रहा है वह दरअसल एलोपैथी से नहीं बल्कि आयुर्वेद से चल रहा है. हजारों चरक, सुश्रुत और सुषेण यह काम कर रहे हैं. सैनिटाइजेशन, सोशल डिस्टैंसिंग, मास्क, पीपीई किट और दवाइयों का आविष्कार या खोज सब आयुर्वेद की देन हैं.

मुकुल कानिटकर गाय की रोटी और तुलसी जल की बात दोहरा कर कौन से विज्ञान से कोरोना संकट से निबटने की बात कर रहे हैं, इस का तो कोई ओरछोर ही नहीं समझ आता. तमाम तथाकथित विद्वानों ने एक तरह से देखा जाए तो दकियानूसी बातें कर डाक्टरों की मेहनत, लगन और निष्ठा को ही खारिज कर दिया है जो दिनरात एक कर घरपरिवार का सुख छोड़ कर अपनी जान जोखिम में डाल कर कोरोना से लोगों को बचा रहे हैं. ऐसे धार्मिक आयोजनों से वे हतोत्साहित नहीं होंगे, ऐसा सोचने की कोई वजह नहीं.

शिवराज सिंह और साधुसंतों के इस नवगठित गिरोह पर जरूरत तो इस बात की है कि कानूनी कार्रवाई हो क्योंकि ये लोग लोगों को गुमराह कर रहे हैं, उन्हें वैज्ञानिक चिकित्सा से दूर कर रहे हैं और हैरानी की बात यह है कि अभियान एलोपैथी के दम पर ही चला रहे हैं. अगर वाकई योग, आयुर्वेद और आध्यात्म में कोई शक्ति या दम है तो इन सभी को एक दिन बिना मास्क पहने किसी अस्पताल में कोरोना ग्रस्तों के बीच गुजार कर दिखाना चाहिए. लेकिन ये लोग ऐसा करेंगे नहीं क्योंकि ये लोग समर्पित डाक्टर नहीं हैं और न ही इन में लोगों के भले का कोई जज्बा है. ये लोग तो शुद्ध दुकानदार हैं जो अपने सर्व सुविधायुक्त आश्रमों में बैठ कर दूधमलाई चाटते विलासी जिंदगी जी रहे हैं.

जब कोरोना संकट खत्म हो जाएगा तो ये लोग ब्रह्मा, विष्णु, राम, श्याम और बमबम भोले का उद्घोष लगाते फिर गल्ला खोल कर धूनी रमा लेंगे कि देखो, हम ने कोरोना को पछाड़ दिया, अब लाओ दक्षिणा. लेकिन अभी ये डरे हुए हैं, इसलिए फैसला आम लोगों को अपनी बुद्धि व विवेक से लेना है कि वे इन धूर्तों को श्रेय और दानदक्षिणा देंगे या नहीं.

इन की क्या मजबूरी

शिवराज सिंह ने किस मजबूरी के तहत यह बेतुका और बेहूदा बेमतलब का आयोजन सरकारी पैसों से किया, इसे समझना भी जरूरी है कि कैसे धर्म और राजनीति का गठजोड़ ठगी और पिछड़ेपन की वजह बनता है. कोरोना के मोरचे पर शिवराज सिंह एक नाकाम मुख्यमंत्री साबित हुए हैं और अपनी नाकामी छिपाने के लिए धर्मगुरुओं का पल्लू पकड़ रहे हैं.

मध्य प्रदेश में कोरोना सरकार की गलती और कुप्रबंधन के चलते ज्यादा फैला क्योंकि 23 मार्च को शपथ लेने वाले शिवराज सिंह ने एक महीने तक तो अपना मंत्रिमंडल ही नहीं बनाया और बनाया भी तो सिर्फ 5 मंत्रियों का जो हालात संभालने के लिए नाकाफी साबित हो रहा है. अब जिस राज्य में स्वास्थ्य मंत्री और स्वास्थ्य सचिव ही नहीं होगा वहां लोग तो बेमौत मारे ही जाएंगे. गौरतलब है कि शिवराज सिंह कांग्रेस के कमलनाथ से कुरसी छीन कर मुख्यमंत्री बने हैं जिस में उन्हें ज्योतिरादित्य सिंधिया ने सहयोग दिया है.

चौथी बार मुख्यमंत्री बने शिवराज को समझ नहीं आ रहा है कि क्या करें. उन के हाथपांव फूलने की वजहें राजनीतिक ज्यादा हैं. प्रदेश में 24 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होना है जिन की तैयारियां भी शुरू हो गई हैं. अगर जनता ने भाजपा और शिवराज को भाव नहीं दिया तो बहुमत के अभाव में यह सरकार भी गिर

सकती है. दूसरे, भाजपा के दिग्गज नेता उन्हें चौथी बार मुख्यमंत्री बनाए जाने से खफा भी हैं कि क्या इस पद का पट्टा पार्टी ने उन के नाम कर दिया है जबकि 2018 में जनता ने उन्हें नकार दिया था. तीसरी अहम बात यह कि शिवराज को अब बातबात में सिंधिया की सलाह और इजाजत का मुहताज होना पड़ रहा है. जाहिर है ऐसी कई बातों से उन का आत्मविश्वास लड़खड़ाया हुआ है.



कमलनाथ की कुरसी उलटने के बाद अब महाराज और शिवराज अपनी कुरसी बचाने की जुगत में कोरोना से ज्यादा ध्यान उपचुनावों पर दे रहे हैं.

इस लड़खड़ाए आत्मविश्वास को ठीक से खड़ा करने के लिए वे गलती पर गलती किए जा रहे हैं. धर्मगुरुओं से वीडियो कौन्फ्रैंसिंग के जरिए कोरोना संकट से निबटने के लिए वे निर्देश मांग रहे हैं तो इस से हैरानपरेशान लोगों में उलटा मैसेज ही जा रहा है क्योंकि जमीनी तौर पर सरकार लोगों के लिए कुछ नहीं कर पा रही है. मंडियों में किसान परेशान हैं, युवाओं में रोजगार को ले कर डर व्याप्त है, गरीब तबका, जिस की तादाद कोई 5 करोड़ है, खानेपीने को मुहताज हो चला है. इस तबके का धर्म, आध्यात्म, एकात्म वगैरह सब रोटी ही है. इन से भी ज्यादा अहम बात और शिवराज सिंह का वाजिब व जायज डर कर्मचारियों की नाराजगी है जिन का महंगाईभत्ता रद्द कर दिया गया है जो कमलनाथ सरकार उन्हें दे गई थी.

एक प्रोफैसर की मानें तो शिवराज सिंह चाहते तो अप्रैल में बढ़ी हुई पगार दे सकते थे लेकिन कमलनाथ सरकार का फैसला रद्द कर उन्होंने कर्मचारियों की नाराजगी मोल ले ली है और अब बाबाओं के चक्कर में आ कर तो उन्होंने रहीसही इमेज भी खराब कर ली है. कोरोना संकट से अगर इन्हीं धर्मगुरुओं के प्रताप से उन्हें जीतना है तो वे अस्पताल बंद कर दें. इस से पैसा भी बचेगा, फिर वे हमें हमारा हक भी दे सकते हैं.

इन प्रोफैसर के मुताबिक, राज्य सरकार बेवजह की फुजूलखर्ची आयुर्वेद का काढ़ा पिला कर भी कर रही है. गौरतलब है कि एक करोड़ लोगों को त्रिकुट नाम का आयुर्वेदिक काढ़ा इम्यूनिटी बढ़ाने के नाम पर पिलाया जा रहा है जिस के वैज्ञानिक होने में शक है.

शिवराज सिंह की मंशा साफ दिख रही है कि सनातन धर्म के प्रचारप्रसार और पोंगापंथ को हवा देने की है जिस के सहारे वे कोरोना के कहर को काबू कर पाएंगे, इस में शक बेहद कुदरती बात है. यानी नुकसान झेलने के लिए आम जनता को और तैयार रहना चाहिए क्योंकि अब सरकार इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए और भी प्रोडक्ट लाने की तैयारी कर रही है. इन टोटकों पर कितना सरकारी पैसा फुंक रहा है, यह किसी को नहीं मालूम. ●



शराब माफिया के दबाव में सरकार

• शैलेंद्र सिंह

कोरोना से बचाव के लिए सरकार ने शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया था. बीच राह में ही सरकार ने अपनी जेब भरने के लिए शराब की बिक्री पर लगा प्रतिबंध हटा लिया. जिस के चलते शराब अब न केवल कोरोना को फैलाने में सहायक होगी बल्कि घरेलू हिंसा का कारण भी बनेगी.

उत्तर प्रदेश सरकार ने आबकारी राजस्व में 75 फीसदी अधिक का लक्ष्य रखा है. लौकडाउन में 40 दिन की बंदी से यह लक्ष्य पूरा होता नहीं दिख रहा था. शराब सिंडिकेट का दबाव था कि लक्ष्य पूरा करने के लिए शराब की दुकानें खोली जाएं क्योंकि शराब की कंपनियों ने इस साल ज्यादा बिक्री के लिए अपना उत्पादन अधिक कर दिया था. लौकडाउन में यह सब बरबाद हो रहा था.



उत्तर प्रदेश सरकार ने लौकडाउन में शराब सहित भांग, बीयर और गांजा की भी दुकानें खोलने का फैसला किया है. इस फैसले के पीछे उत्तर प्रदेश के शराब माफिया का दबाव है.

सरकार ने अपने आदेश में कहा है कि ये दुकानें सोशल डिस्टैंसिंग का पूरी तरह से पालन करते हुए खोली जाएंगी और किसी को भी सार्वजनिक स्थलों पर शराब नहीं पीने दी जाएगी. शराब बेचने वाले मास्क और ग्लव्स पहनेंगे.

इस के बाद भी समाज का बहुत बड़ा वर्ग प्रदेश सरकार के इस काम का विरोध कर रहा है.

शराब का उत्पादन बढ़ा पर बिक्री घटी

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस साल शराब के कारोबार से अधिक मुनाफा कमाने की योजना बना रखी थी. इसी के अनुरूप शराब का अधिक उत्पादन भी कराने का लक्ष्य रखा गया. पिछले साल की तुलना



राजस्व की आड़ में लोगों को मदहोश रखने का षड्यंत्र रचने से फायदा शराब निर्माताओं, विक्रेताओं और सरकारी विभागों का होगा.

सरकार ने इस फैसले की वजह भी जनता के ऊपर ही ठोक दी है. सरकार और उन के समर्थकों ने जनता को यह समझाने का काम किया है कि राजस्व की कमी को पूरा करने व प्रदेश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए यह फैसला करना मजबूरी है. उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भक्त अब अर्थव्यवस्था के नाम पर सरकार के फैसले का समर्थन कर रहे हैं.

में इस साल राजस्व 75 फीसदी बढ़ा दिया गया था. सरकारी आंकड़े देखें तो 2018-19 के अप्रैल और मई महीने में सरकार को 4,558 करोड़ रुपए का राजस्व मिला था जो इस साल लौकडाउन की वजह से बहुत कम हो गया.

विदेशी शराब का उत्पादन पिछले साल अप्रैलमई में 233 लाख बोतलों का हुआ था. इस साल इन 2 महीनों में 372 लाख बोतलों की बिक्री का लक्ष्य रखा

गया था. लौकडाउन की वजह से ये बोतलें बंद ही रखी रह गईं.

इसी तरह देशी शराब का उत्पादन पिछले साल अप्रैल और मई महीनों में 549 लाख लिटर हुआ था. इस साल यह 699 लाख लिटर हुआ. इस के उत्पादन में 27 फीसदी बढ़ोतरी हुई. बियर का उत्पादन भी इस साल 25 फीसदी ज्यादा हुआ. पिछले साल अप्रैल और मई महीनों में इस का उत्पादन 553 लाख बोतल हुआ था तो इस साल 693 लाख बोतल हुआ. इन सब की बिक्री लौकडाउन की वजह से बंद हो गई थी.

राज्य सरकार ने इस साल 8 निवेशकों के साथ शराब उत्पादन का एमओयू साइन किया था. इन में लौड्र्स, रैडिको खैतान, आईजीएल, धामपुर, वेव, सुपीरियर, राजस्थान लिकर के साथ 3 नई कंपनियों हरियावन-हरदोई, साथियावा-आजमगढ़ और स्नेह रोड बिजनौर को शामिल किया गया था.

आंकड़े बताते हैं कि त्रिवेणी, बलरामपुर, मनकापुर और बाभनन शराब फैक्ट्रियों में भी उत्पादन बढ़ा है. बृजनाथपुर, गाजियाबाद और्गेनिक, नवाबगंज, गोंडा की जो शराब बनाने वाली फैक्ट्रियां बंद हो गईं थीं वे फिर से खुल गईं. लौकडाउन की वजह से शराब की बिक्री काफी कम हो गई. इन कंपनियों का सरकार पर दबाव था कि अगर शराब की बिक्री नहीं शुरू की गई तो यह कारोबार खत्म हो जाएगा.

शराब की लत छूटने का भय

असल में शराब का कारोबार करने वालों को इस बात का भय था कि अगर लोगों में शराब पीने की लत खत्म हो जाएगी तो उन को कारोबार फिर से फैलाना मुश्किल हो जाएगा. लौकडाउन के दौरान 40 दिन जिन लोगों ने शराब का सेवन नहीं किया वे अब इस की लत से बाहर आना चाहते थे. बहुत सारे लोगों ने यह सोच भी लिया था कि अब जब 40 दिन शराब नहीं पी है तो अब शराब को हाथ नहीं लगाएंगे.

शराब माफिया को डर था कि अगर शराब पीने वालों की लत एक बार छूट गई तो वे घर और परिवार के दबाव में दोबारा शराब नहीं पिएंगे. ऐसे में उन के शराब का कारोबार पूरी तरह से बंद हो जाएगा. इसलिए जरूरी है कि जनता शराब पीने की लत को छोड़ न सके और उसे लौकडाउन में भी शराब पीने को मिलती रहे, जिस से उस की लत बनी रहे और शराब का धंधा चाकचौबंद चलता रहे.

धर्म नहीं तो शराब सही

कोरोना वायरस के संकट से निबटने के लिए जब लौकडाउन का फैसला किया गया तो यह सोचा गया कि घरों में कैद लोग कैसे रहेंगे. सरकार के सलाहकारों ने तब रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक

बाहर शराब का नशा और घर में धर्म का. दोनों उपलब्ध हैं.



सीरियलों के फिर प्रसारण की व्यवस्था की. रामायण के प्रसारण को इस तरह से प्लान किया गया था कि 3 मई को जब दूसरे लौकडाउन का समय पूरा हो जाए तब तक ही यह सीरियल चले. सलाहकार यह समझ रहे थे कि 3 मई के बाद लौकडाउन नहीं करना पड़ेगा. अब जब 3 मई के बाद तीसरा लौकडाउन आगे बढ़ाया गया तो धार्मिक सीरियलों की जगह शराब की दुकान खोलने की अनुमति दे दी गई जिस से लोग बिना किसी तर्कवितर्क के नशे में कैद सरकार की हर बात को मानते रहें.

नशे का हर इंतजाम

सरकार ने केवल शराब का नशा करने वालों का ध्यान नहीं रखा है बल्कि बियर और गांजा, भांग जैसे नशे करने वालों के लिए भी सुविधा दे दी है.



किस के भले के लिए नशे के तमाम साधन मुहैया करा रही है सरकार?

सरकार ने अपने आदेश में कहा है कि शौपिंग मौल के अलावा जो भी देशीविदेशी शराब की दुकानें हैं, बीयर बार, मौडल शौप और भांग की दुकानें हैं वे खोल दी जाएंगी जिस से शराब जैसे नशे करने वाले लोगों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो और वे आराम से अपने नशे का सेवन कर सकें.

दरअसल सरकार यह जानती है कि कोरोना वायरस से लड़ने के लिए उस के इंतजाम नाकाफी हैं. ऐसे में वह जनता को पूरी तरीके से बरगलाना चाहती है. जिस समय कोरोना वायरस का संकट शुरू हुआ, सरकार ने लोगों को धर्म के नाम पर संतोष दिलाने का काम शुरू किया. इसी के तहत पुराने समय के धार्मिक सीरियल जैसे रामायण और महाभारत टीवी पर फिर से दिखाया जाना शुरू किया गया.

ध्यान भटकाने की कोशिश

40 दिनों के लौकडाउन के बाद देश की जनता का मोह इन धार्मिक सीरियलों से पूरी तरह हट गया. अब वह कोरोना को ले कर तरहतरह के विरोध करने लगी थी. वह सरकार से तमाम तरीके के ऐसे सवाल भी करने लगी जिन के जवाब सरकार के पास नहीं थे. सब से बड़ा सवाल मजदूरों को ले कर था. जैसे, मजदूर और छात्रों को ट्रेन या बस से लाने का फैसला 40 दिन बाद क्यों किया गया? यह फैसला लौकडाउन शुरू होने से पहले क्यों नहीं किया गया? यह ऐसा सवाल है जिस का जवाब सरकार के पास नहीं था. ऐसे में सरकार ने कोरोना वायरस की बदइंतजामी से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए अब उन को नशे की दुनिया में ले जाने के उपाय किए हैं.

यही वजह है कि फैक्ट्री, दुकान और दूसरी आवश्यक जगहों की जगह सब से पहले लौकडाउन-3 में शराब व नशे का कारोबार करने वाली दुकानों को खोलने

का फैसला किया गया. यही नहीं, वैसे तो सरकार यह कहती है कि पुलिस बल कम है, इसलिए अपराध रोकने का काम नहीं हो पा रहा, पर यहां सरकार ने एक शराब की दुकान पर नियम और कानून का पालन कराने व सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर 2 से 4 पुलिसकर्मियों को तैनात करने का फैसला किया. उदाहरण के लिए राजधानी लखनऊ में तकरीबन हजार दुकानें हैं जो नशे का कारोबार करती हैं. ऐसे में केवल लखनऊ में 4 हजार पुलिसकर्मियों की ड्यूटी इन दुकानों पर लगानी पड़ी.

बढ़ेगी घरेलू हिंसा

लौकडाउन के दौरान घरों में तमाम तरह की दिक्कतें आ रही हैं. पतिपत्नी के बीच तालमेल न होने के मामले में तनाव के क्षणों में लोग एकदूसरे को सहन करने लगे थे. अब नशे की दुकानें खुलने के बाद यह सहनशीलता खत्म हो जाएगी. आपसी तनाव नशे की हालत में मारपीट और लड़ाईझगड़े में बदल जाएंगे. आंकड़े यह बताते हैं कि घरेलू हिंसा के मामलों में नशे का अहम रोल होता है. जो पति नशा नहीं करता उस का पारिवारिक विवाद मारपीट की हालत तक नहीं पहुंचता है.

नशे की दुकानें खोलने के बाद पतिपत्नी के बीच होने वाले झगड़ों में मारपीट होने की संभावना बढ़ जाएगी. लौकडाउन के दिनों में रोजीरोजगार न होने की वजह से घरों में पैसों की कमी है जिस की वजह से तमाम जरूरतें पूरी नहीं हो पा रही हैं. ऐसे मामलों में तनाव का होना स्वाभाविक हो जाता है. कई बार आपस में वादविवाद भी होता है. अब यह सवालजवाब मारपीट और झगड़े तक पहुंचने लगेगा.

नशे की भेंट चढ़ेगा सरकारी सहायता का पैसा

शराब की दुकान खोलने का सब से अधिक प्रभाव कमजोर वर्ग पर पड़ेगा. आर्थिक रूप से यह वर्ग पहले से ही परेशान है. थोड़ीबहुत सरकारी सहायता और सुविधा मिलने की वजह से इन के घरों की गाड़ी किसी तरीके से चल रही थी. अब ये लोग सरकारी सहायता में मिलने वाले पैसे का प्रयोग अपने नशे के लिए करेंगे, जिस से घरों में तनाव बढ़ेगा और लड़ाईझगड़े के हालात बनेंगे.

शराब पीने के लिए गरीब वर्ग हर तरीके के दूसरे उपाय भी करेगा जो समाज में अपराध बढ़ाने का काम करेंगे. ऐसे में साफ है कि सरकार का यह फैसला किसी भी दृष्टिकोण से जनता के हित में नहीं है. यह केवल जनता के पैसे शराब माफिया के कारोबार को बढ़ाने और सफेदपोश नेताओं की जेबें भरने के काम आएगा. ●





कोविड-19 के इलाज में कारगर प्लाज्मा थैरैपी?

• सोमा घोष





भारत में प्लाज्मा थेरैपी से किसी बीमारी से जंग पहली बार शुरू हुई है. विश्व के कई देश इसे अपना चुके हैं और इस के परिणाम भी सकारात्मक निकले हैं. आइए जानें क्या है प्लाज्मा थेरैपी और यह किस तरह कोरोना से लड़ने में कारगर है.

कोरोना मरीज के बढ़ते आंकड़ों ने पूरे विश्व में रिसर्च पर जोर दिया है. साइंटिस्ट और रिसर्चर दिनरात इस बीमारी की वैक्सीन व दवाई पर काम कर रहे हैं. ऐसे में प्लाज्मा थेरैपी उन मरीजों के लिए वरदान साबित हो रही है जो कोरोना से पीड़ित हैं और सीरियस स्टेज में जा रहे हैं. इस बारे में मुंबई की रिजनरेटिव मैडिसिन रिसर्चर स्टेम आरएक्स बायोसाइंस सोल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के डा. प्रदीप महाजन कहते हैं कि प्लाज्मा थेरैपी कोई नई नहीं है. सार्स वायरस, मिडिल ईस्ट वायरस, इबोला, एच1एन1 आदि सभी में इस थेरैपी का प्रयोग हुआ है. भारत में कई मरीज इस थेरैपी से ठीक हो चुके हैं जो अच्छी बात है. असल में जब वायरल इन्फैक्शन किसी भी शरीर में होता है तो शरीर 2 फौर्म्स में काम करता है.

इन्मेट इम्युनिटी और अडौप्टिव इम्युनिटी

इन्मेट इम्युनिटी में शरीर में जो वायरस है उसे टारगेट करने के लिए नैचुरल

किलर सैल्स ऐक्टिव हो जाते हैं. ये वायरस को सैल्स के अंदर जाने से पहले और बाद में पहचान कर डायरैक्टली अटैक करते हैं. असल में वायरस के सैल्स के अंदर जाते ही एंटीजन आती है, वे नैचुरल किलर सैल्स और टी सैल्स होते हैं जो अटैक करते हैं. लेकिन अगर सैल्स की संख्या बढ़ जाती है और अटैक कम होता है, तो वही सैल्स बीटा सैल्स को इन्फौर्म कर एंटीबौडी बनाना शुरू कर देते हैं. इसे ही प्लाज्मा थेरैपी कहते हैं.

कैसे करती है काम

प्लाज्मा थेरैपी के प्रयोग से सार्स, स्वाइन फ्लू, इबोला आदि वायरस को खत्म करने में अच्छा रिस्पौंस मिला था, क्योंकि उन वायरसों के बारे में सब को पता था. कोरोना वायरस के बारे में किसी को कुछ पता नहीं था. ऐसे में यह थेरैपी कारगर होगी या नहीं, समझना मुश्किल था. चीन, इटली, अमेरिका, इसराईल आदि सभी जगहों पर इस थेरैपी का प्रयोग हो चुका है. भारत में यह पहली बार हो रहा है. विदेशों में इस के परिणाम अच्छे रहे. इस की प्रक्रिया में 3 बातों का ध्यान रखना जरूरी है :

- इम्युनिटी अच्छी होने पर अगर कोई व्यक्ति कोरोना वायरस से ठीक हो जाता है, तो वायरस के प्रवेश के 72 घंटे के बाद में एंटीबौडी का लैवल बढ़ना शुरू हो जाता है और यह 3 महीने तक बना रहता है. इस के बाद उस का स्तर कम होने लगता है. प्लाज्मा थेरैपी के लिए सेम ब्लड ग्रुप मैच का होना जरूरी है.
- व्यक्ति को रिकवरी की स्टेज में रहने की जरूरत है. जब प्लाज्मा का लैवल अधिक हो, इन्फैक्शन के 6 महीने के बाद अगर कोई ब्लड देता है तो उस में एंटीबौडी बहुत कम होती है. उस प्लाज्मा का कोई अर्थ नहीं होता.
- कितनी मात्रा में प्लाज्मा रोगी को देना है, इस बारे में भी जानकारी होने की जरूरत है. इसे मरीज के वैंटिलेटर में जाने से पहले या बाद में 24 से 48 घंटों में दिया जा सकता है और 7 दिनों में मरीज पूरी तरह से रिकवर हो जाता है.

इलाज का खर्चा

यह खर्चीला नहीं है. इस में ठीक हुए रोगी को ब्लड डोनेट करना है. उस में से व्हाइट ब्लड सैल्स निकाल देने पड़ते हैं और बचा हुआ ब्लड मरीज को दे दिया जाता है. ब्लड डोनेशन ही इस में प्रमुख होता है. यह आमतौर के प्लाज्मा से थोड़ा अलग होता है, क्योंकि इस में कोरोना वायरस से ठीक हुए मरीज का ब्लड ही काम में लाया जाता है.

डोनेशन की कैसी हो व्यवस्था

भारत में यह नई थेरैपी है, ऐसे में बहुत कम लोगों को इस की जानकारी है. व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि अधिक से अधिक लोग ब्लड डोनेट कर सकें. इस बारे में पूछे जाने पर डा. महाजन कहते हैं कि सरकार की तरफ से एक स्कीम या फाउंडेशन होने की जरूरत है जिस से कोविड-19 से ठीक हुए मरीज ब्लड डोनेट कर के ही अस्पताल से जाएं, ताकि जरूरत के अनुसार मैचिंग ब्लड ग्रुप के आधार पर प्लाज्मा रोगी को दिया जा सके.

कोरोना वायरस से जो भी मरीज अधिक सीरियस हैं और रिस्पौंस अच्छा नहीं कर रहे हैं, वे इस थेरैपी से जल्दी ठीक हो सकेंगे और मृत्युदर कम होगी.

ब्लड प्लाज्मा में अंतर

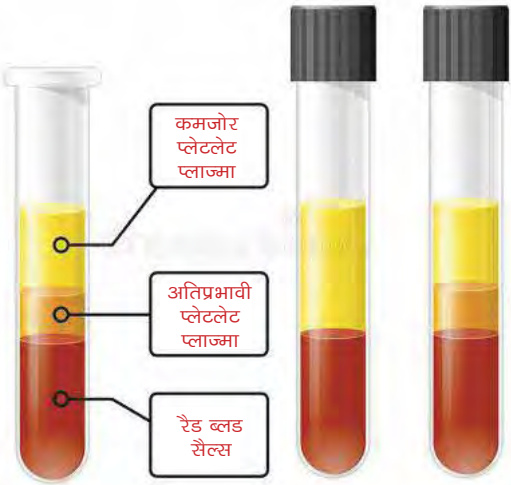

प्लाज्मा थेरैपी : कोरोना से संक्रमित मरीज के स्वस्थ होने के बाद उस के ब्लड प्लाज्मा को दूसरे संक्रमित मरीज के शरीर में प्रविष्ट कराने से मरीज स्वस्थ हो जाता है.

इस के अलावा इस प्रोसैस को हर अस्पताल नहीं कर सकता, क्योंकि हर किसी को इस का लाइसैंस नहीं मिल सकता. कब ब्लड लेना है और कब ब्लड देना है, इस सारी प्रक्रिया को सही तरह से करना आवश्यक है. हर किसी को यह प्रोसैस करने नहीं दिया जा सकता. इस के लिए आईसीएमआर और सैंट्रल ड्रग कंट्रोल अथौरिटी से परमिशन लेने की जरूरत होती है, नहीं तो लापरवाही होने की आशंका हो सकती है.

इस के अलावा डा. महाजन स्टेम सैल्स थेरैपी को भी इस दिशा में कारगर मानते हैं जिस में मेजोन गामा स्टेम सैल्स और नैचुरल किलर सैल्स के प्रयोग से भी कोरोना वायरस के रोगी को ठीक करने का सुझाव है. इस के प्रयोग के लिए परमिशन ली जा रही है और जल्द ही इस पद्धति से भी इलाज शुरू हो जाएगा. इस पद्धति से भारत में कोरोना वायरस का इलाज पहली बार किया जाएगा.

अभी अधिक रोगियों के मरने की वजह डा. प्रदीप मरीजों का अधिक होना, बैड्स कम होना, वैंटिलेटर्स के लिए राह देखना, डाक्टरों और हैल्थ केयर्स के स्टाफ का कम होना आदि मानते हैं. सही समय पर सही इलाज मिलने पर मृत्यु कम होती है. उन के हिसाब से यह बीमारी घबराने या डरने वाली नहीं है, पर मीडिया, डाक्टरों और सरकार ने इसे विश्व में इतना बढ़ाचढ़ा दिया है कि लोग डरने लगे हैं.

इस में बीमार लोगों से अधिक वे खतरनाक हैं जो इस बीमारी को कैरी कर रहे हैं जबकि उन में कोई लक्षण नहीं हैं और वे लोग उसे बुजुर्गों और पहले से मधुमेह, दिल के मरीज, कैंसर आदि बीमारियों से पीड़ित लोगों को अनजाने में इस वायरस को बांट रहे हैं जो सब के लिए खतरा बन रहा है. सभी को घर में रहना बहुत जरूरी है ताकि यह रोग अधिक न फैले. डाक्टरों और हैल्थ केयर के लोगों में इस वायरस के अधिक फैलने की वजह इन्फ्रास्ट्रक्चर में कमी का होना है. सोशल डिस्टैंसिंग और लौकडाउन से ही इस बीमारी को काफी हद तक रोका जा सका है, जो सही कदम है. ●



हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन रोचक जानकारी

• प्राची भारद्वाज



दुनियाभर में मलेरिया की दवा हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन चर्चा का विषय बनी हुई है. फिलहाल कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए कोई दवा या वैक्सीन अभी तक नहीं बनी है, इसलिए कोरोना वायरस के संक्रमण रोकने में यह दवा कारगर साबित हो रही है.



आजकल एक दवा का नाम काफी चर्चा में है और वह है हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन. भारत इस के निर्माणनिर्यात में विश्व में अग्रणीय स्थान पर आता है. कोरोना वायरस के संकट को देखते हुए मलेरिया के इलाज में इस्तेमाल होने वाली दवा हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन आजकल खबरों में बनी हुई है क्योंकि यह दवा आर्थराइटिस, मलेरिया और काफी हद तक कोविड-19 के इलाज में भी प्रयोग में आ रही है.

आज कई सारे देश इस दवाई की मांग कर रहे हैं. भारत सरकार अब उन जी-20 देशों को, जिन्हें इस की जरूरत है और जिन्होंने रिक्वैस्ट की है, यह दवा उपलब्ध करवा रही है. हालांकि, सरकार की प्राथमिकता घरेलू जरूरतों को पूरा करना है.

भारत में मौजूद गरीबी और असंख्य लोगों की अनेक बीमारियों के कारण सरकारों की पौलिसी ऐसी रही कि जनता का ध्यान पहले रखा गया. परंतु भारत जैसे देश में अच्छी गुणवत्ता की किंतु सस्ती दवाइयां मिलना एक चैलेंज रहा है. इस का उपाय ढूंढ़ा हमारे डाक्टरों ने जिन्होंने रिवर्स इंजीनियरिंग कर के जेनरिक दवाइयां ईजाद कीं. इस का परिणाम यह रहा कि आज भारत को विश्व की फार्मेसी कहा जाता है. भारत में इन दवाइयों का आविष्कार हुआ हो या नहीं किंतु यहां इन दवाइयों का उत्पादन भारी मात्रा में होता है. और फिर ये दवाइयां विश्वभर में निर्यात की जाती हैं. यही कारण है कि आज की कोरोना वायरस की स्थिति में हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन पाने के लिए सारे विश्व की नजर भारत पर आ कर टिक गई है.

हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन का उत्पादन करने वाली कुछ फार्मास्युटिकल कंपनियां हैं इपका लैब्स, जाइडस, सिपला, एलकेम, टौरेंट और माइक्रो लैब्स. इन में से मुंबई स्थित इपका लैब्स और जाइडस सब से बड़ी उत्पादक हैं. इपका लैब्स भारत सरकार को करीब 10 करोड़ हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन दवाइयां और साथ ही 3-4 करोड़ राज्यों के लिए भी बना कर दे रही है. इपका लैब्स के जौइंट एम डी ए के जैन का कहना है कि इस स्थिति में हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन बनाने के लिए कुछ सौल्वेंट्स और कैमिकल्स में बदलाव लाने की आवश्यकता है जिस से इस को बनाने की लागत में वृद्धि होगी

किंतु भारी मांग की वजह से दवा की कीमतें शायद ही बढ़ाई जाएं.

आज अमेरिका व यूरोपीय देशों द्वारा भारत से दवाइयों की ताबड़तोड़ खरीदी की खबरें आ रही हैं. करीब 30 देशों ने भारत से हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन की विनती की है. भारत ने अपनी खपत और हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन की उपलब्धता को देखते हुए 25 देशों की मांग को स्वीकार कर लिया है. अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, श्रीलंका, ब्राजील, जरमनी, ब्रिटेन आदि के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों ने अपनेअपने ट्वीट में भारत को धन्यवाद दिया है.

क्या आप को इस दवा का इतिहास पता है?

कई वर्षों तक कुनैन को दक्षिण अमेरिकी पेड़ सिनकोना पौधे की छाल से प्राप्त किया गया जो मुख्यरूप से अमेजन के वर्षावन में पाया जाता है. इस छाल का पेरू, इक्वाडोर और कोलंबिया के पूर्व कोलंबियाई संस्कृतियों द्वारा इस के उपचार और औषधीय प्रभावों के लिए बहुत उपयोग किया गया था. कुनैन एक प्राकृतिक श्वेत क्रिस्टलाइन एलक्लाइड पदार्थ होता है जिस में ज्वररोधी, मलेरियारोधी, दर्दनाशक (एनल्जेसिक), सूजनरोधी गुण होते हैं.



सिनकोना पौधे की छाल मलेरिया के इलाज में प्रयोग की जाती थी.

हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन के पीछे एक अत्यंत रोचक कथा है. इस की कहानी वर्ष 1638 में शुरू हुई जब पेरू के वायसराय की पत्नी काउंटेस औफ चिंकोना को मलेरिया ने जकड़ लिया. सर्वाधिक मान्यताप्राप्त इलाज करने के बजाय उन की चिकित्सा में एक पेड़ की छाल का प्रयोग किया गया (बाद में इस पेड़ का नाम उन्हीं के नाम पर चिंकोना पेड़ रखा गया). इस पेड़ की छाल से काउंटेस औफ चिंकोना को नाटकीय रूप से आराम मिला. जब पेरू के वायसराय स्पेन लौटे तब वे अपने साथ काफी मात्रा में इस पेड़ की छाल का पाउडर लेते आए जिस का नाम जेसुइट पाउडर पड़ा.

इस छाल का उपयोग प्राकृतिक उपचार के रूप में विभिन्न प्रकार की स्थितियों के लिए किया जाने लगा, खासतौर पर ज्वरनाशक. इस के सभी उपयोगों के ऊपर प्रकाश डाला गया. इस कारण से यह सोने की कीमत पर बेचा जाने लगा और इस की मांग अधिक होने लगी.

ईसाई मिशन से जुड़े कुछ लोग इसे दक्षिण अमेरिका से ले कर आए थे. पहलेपहल उन्होंने पाया कि यह मलेरिया के इलाज में कारगर होती है, किंतु बाद में यह ज्ञात होने पर कि यह कुछ अन्य रोगों के उपचार में भी काम आ सकती है, उन्होंने इसे बड़े पैमाने पर दक्षिण अमेरिका से लाना शुरू कर दिया.

मूल शुद्ध रूप में कुनैन एक सफेद रंग का क्रिस्टल युक्त पाउडर होता है जिस का स्वाद कड़वा होता है. यह कड़वा



हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन जहां मलेरिया बुखार, जोड़ों के दर्द, गठिया, चर्मरोग आदि बीमारियों में कारगर साबित हुई है, वहीं कोरोना वायरस के इलाज में देशविदेशों में इस की मांग बढ़ी है.

स्वाद ही इस की पहचान बन चुका है. इस कारण इसे टौनिक वाटर और अन्य पेय पदार्थों में मिलाया जाता है.

कुनैन को पेड़ की छाल से अलग हो कर अपनी पहचान बनाने में लगभग 2 शताब्दियां लगीं. 20वीं शताब्दी तक कुनैन का प्रयोग अमेरिकी राज्यों में लोक दवा के तौर पर मलेरिया का उपचार करने के लिए और सामान्य बीमारियों के लिए किया जाने लगा.

क्लोरोक्वीन का आविष्कार वर्ष 1934 में अमेरिकी दवा कंपनी बेयर द्वारा किया गया. किंतु इस में मौजूद विषाक्तताओं के कारण इसे अगले दशक तक बाजार में उपलब्ध नहीं करवाया गया. लेकिन दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान वर्ष 1940 के दशक में क्लोरोक्वीन का प्रयोग मलेरिया के उपचार के लिए पैसिफिक में लड़ रहे अमेरिकी सैनिकों के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया. इस के बाद वर्ष 1945 में इस के यौगिक में बदलाव कर के हाइड्रौक्सिलिन द्वारा हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन उत्पन्न की गई जो कम विषाक्त थी और तब से आज तक इस में कोई बदलाव नहीं किया गया.

आज हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन का प्रयोग जोड़ों के दर्द के इलाज में काफी किया जाता है. यह एक ऐसी औषधि है जो कई तरह के उपचारों में काम आती है, जैसे चर्मरोग, औटोइम्यून कोऔग्लोपैथी, गठिया, संधिवात गठिया, संधि रोग आदि.

दिल्ली के ड्रग्स कंट्रोल औफिसर अतुल नासा ने कहा कि जब से स्वास्थ्यकर्मियों और कोविड-19 के संपर्क में आने वाले मरीजों को हाइड्रौक्सीक्लोरोक्वीन देने की खबर आई थी, तब से लोग इस दवा को खरीदने के लिए दवा की दुकानों पर पहुंचने लगे थे. जबकि इस दवा की जरूरत सभी को नहीं है. उन्होंने कहा कि इस दवा को 15 साल से कम उम्र या 60 साल से ज्यादा आयु वाले लोगों को नहीं दिया जा सकता क्योंकि इस के साइड इफैक्ट्स भी हैं. ●

शब्दों की बाढ़ और हिंदी कहानियां

• डा. रामेश्वर द्विवेदी

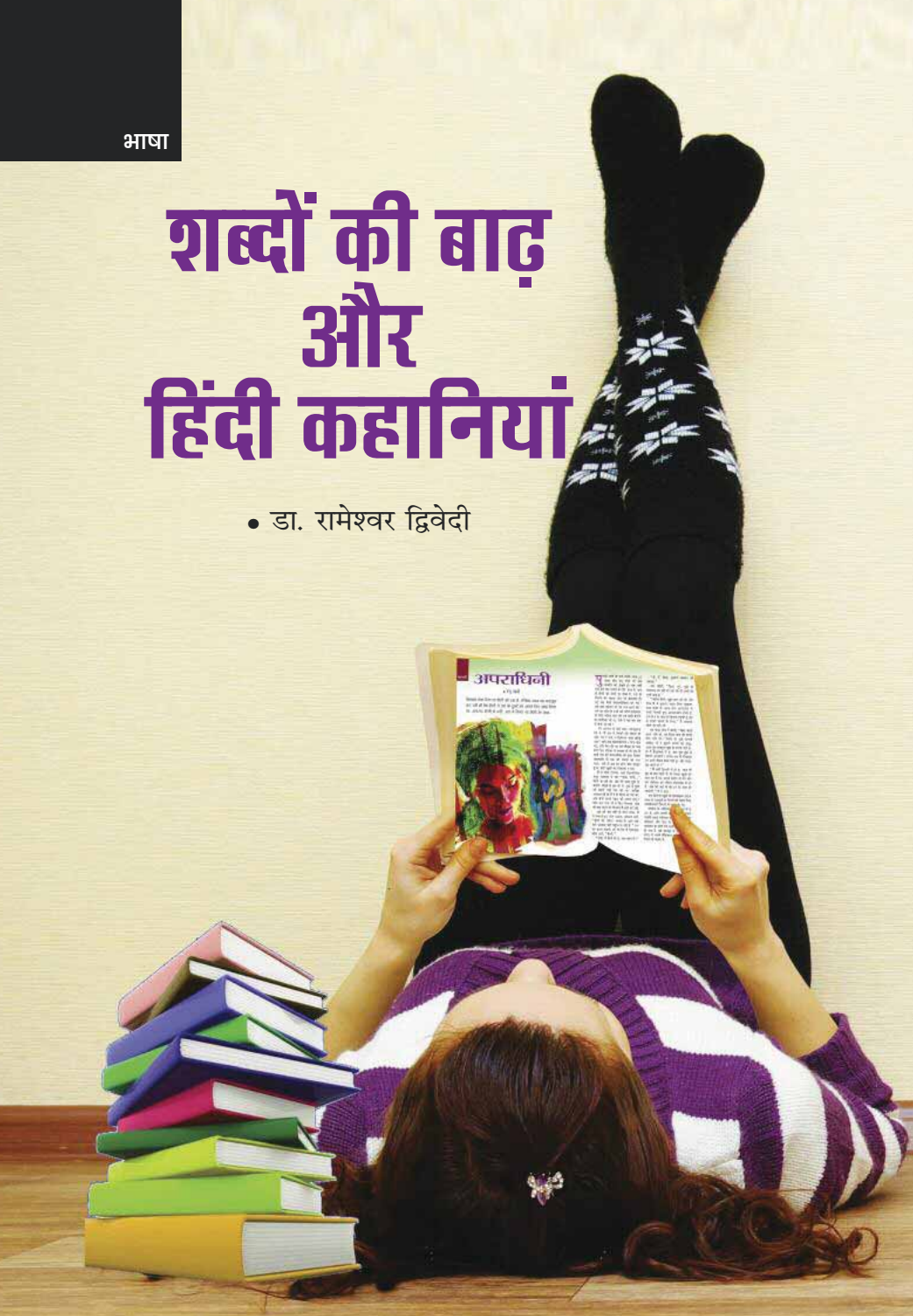



विषयों के अलावा हिंदी कहानी की भाषाशैली भी अकसर चर्चा का कारण रही है. उस की संपूर्णता पर भी संदेह जबतब व्यक्त किया जाता रहा है, लेकिन इसे कहानी की विपन्नता नहीं कहा जा सकता.

रचना प्रभावशाली हो, कहने का तरीका आकर्षक हो और रचना की परंपरा में उस से वास्तव में कोई इजाफा हो रहा हो तो अनाम गोत्र नए रचनाकारों की रचना भी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में स्थान पाती हैं. यह बात संपादक के साहित्यिक संस्कार और रचनाधर्म की ईमानदारी से जुड़ी है, मगर खासकर हिंदी साहित्य का एक सच इस से ज्यादा बड़ा है और खतरनाक भी जिसे खबर की तरह प्रकाशित किया और कहा जाना चाहिए. वह बात है कि तमाम अकादमिक संबद्ध रचनाकार, अधिकारी रचनाकार, संपादक रचनाकार और पत्रिका को किसी भी रूप में आर्थिक लाभ पहुंचाने वाले सरकारीगैरसरकारी रचनाकारों की कमजोर और उद्देश्यहीन रचनाएं भी पत्रिकाओं के हर अंक में थोक के भाव में छपती हैं.

हिंदी में यह काम 'मैं तुझ को खुदा लिखूं तुम मुझ को खुदा कहना' के रूप में खूब होता रहा है. ऐसी रचनाएं लंबी होती हैं जिन की शब्दों की संख्या बनाम फुजूलखर्ची का खयाल उस के लेखक को तो नहीं ही रहता, संपादक को भी इस की चिंता नहीं होती, क्योंकि मामला अन्योन्याश्रितन लोभलाभ का होता है. कुछ माने हुए लेखकसंपादक मनचाही चीज नईनई प्रवेश करती लड़कियों की बकवास रचनाओं को अपनी जबरदस्ती की टिप्पणी से महान रचना घोषित कर प्रकाशित ही नहीं करते, उसे पुरस्कृत भी करतेकरवाते हैं.

शब्दों की बाढ़ से विचारों को बहा ले जाती इन लंबीलंबी रचनाओं को कोई शुरू से अंत तक, अपने साथ कितनी भी जबरदस्ती कर के नहीं पढ़ सकता और लंबी उसांस लेता, बस, इतना कह कर कोई दूसरी सार्थक रचना तलाशने लगता है कि 'बड़े हुए तो क्या हुए जैसे ताड़ खजूर, पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर.' यहां पहाड़ भी खोदिए और चुहिया भी नहीं मिलती. इन रचनाओं में शब्दों की फुजूलखर्ची नहीं, यहां

फुजूलखर्ची के रूप में शब्दों का सिर्फ अपव्यय होता है. यहां शब्द ब्रह्म नहीं होते, आवारागर्द छोकरे होते हैं.

हिंदी कहानी अपने वर्तमान रूप में किसी भी समृद्ध भाषा की कहानीविधा के साथ पूरी गरिमा से खड़ी है. बंग महिला की 'दुलाई वाली' से प्रेमचंद के 'कफन' तक और 'रेणु' से 'नथानी' तक समकालीन कहानियां तेजी से बदल रहे जीवन का प्रतिनिधित्व कर रही हैं. वे संक्रमण के ऊहापोहों की साक्षी हैं. उस में भविष्य में संसार के समक्ष आने वाले खतरों और चुनौतियों की आहट है. उस में प्रेम के बदलते रूप और मनोवैज्ञानिक तौर पर बदल रहे नए जनरेशन का प्रामाणिक खाका है. वे जीवन और समाज की धड़कनों का स्पंदन सुन व कह रही है. वह अपने मिजाज और उपलब्धि में किसी भी भाषा की कहानीविधा से कमजोर नहीं हैं. उस के पास अपने को सिद्ध कर चुके और सिद्ध कर रहे लेखकों का मेला है. उस में मानवीय जनून से उस के सावधान सपनों तक की मुकम्मल तसवीर है.

शायद ही कोई ऐसा नयापुराना विषय हो जिस पर हिंदी में कहानियां न लिखी गई हों. हिंदी कहानी ने जिस तरह जीवन को उस की पूरी परिधि में पाठक के सामने रखा है उसी तरह देशीविदेशी भाषाओं से शिल्प का अनुसरण और संधान भी किया है. अभिभूत करने वाली कहानियों के साथ आक्रांत करने वाली शिल्पप्रविधि तक कहानी का संसार कहीं कम रोचक और उत्साहवर्द्धक नहीं है, पर अनेक कहानियां शब्दों की मितव्ययिता की दृष्टि से रेखांकित की जा सकती हैं. यह बात हिंदी की लंबी कहानियों में अकसर देखने को मिलती है.

50 प्रतिशत लंबी कहानियां जरा सी बात कहने को कही गईं. अथवा कई बार बहुत वाचाल हो कर कुछ भी नहीं कहने को कही गई होती हैं. सो, आलाप लेले कर कहने के कारण वे सिर्फ आकार में तो बड़ी हो जाती हैं, गुणवत्ता में नहीं. यह बात बड़े स्थापित रचनाकारों की रचना में भी देखी जा सकती है, नए लेखकों में तो अमूमन होती ही है.

इस के अनेक नकारात्मक कारणों में से एक सकारात्मक कारण है, भाषा की कलात्मकता. यह रचना का वही तत्त्व है जो भाषा को ऐश्वर्यवान बनाता है और रचनाकार को वस्तुवादी की जगह शिल्प व शैलीवादी. इस से भाषा का वैभव बेशक बढ़ता है.

यह बात और है कि इस वैभव के बाद रचना सामान्यजन या लोक से दूर हो कर सिर्फ लेखक और सच्चे एवं अच्छे बुद्धिजीवियों के उपयोग की वस्तु हो जाती है. उन के मानसिक विलास का सामना यों भी साहित्य के गंभीर पक्ष या संसार से रूबरू होने की फुरसत हमारे यहां उस लोक को नहीं है जिसे रोटी, कपड़ा और मकान के लाले पड़े हैं. उस की सारी कसक अनिवार्य आवश्यकताएं इस तरह निकाल लेती हैं कि न तो उसे साहित्य पढ़ने की फुरसत होती है न अवसर न शौक, भले जनवाद के नाम पर वह साहित्य उन के पक्ष में क्यों न लिखा गया हो. पर भाषा का कलात्मक पक्ष भाषा को अब तक बने उस के अंतिम पूर्णविराम से आगे जरूर ले जाता है.

ये कलात्मक रचनाएं भाषा का नया गियर बनाती हैं जो रचना को इतनी तेजी देती हैं कि आम पाठक की पकड़ में नहीं आतीं. यह सामान्यजन के लिए भाषा में शब्दों की फुजूलखर्ची है पर खास

पाठकवर्ग के लिए भाषा का शृंगार. यह कलातत्त्व सस्ते साहित्य जैसे गुलशन नंदा, रानू, कुशवाहा कांता के साहित्य से शास्त्रीय साहित्य का अंतर बनाता है. यही कलातत्त्व साहित्य को दर्शन, विज्ञान इतिहास और समाजशास्त्र से अलग भी करता है और उसे इन सब का समुच्चय बना कर वह ताकत भी देता है कि वह साहित्य में इन सभी विषयों की मौजूदगी महसूस कराए.

शब्दों की ऐसी अधिकता का एक उदाहरण याद आ रहा है. कभी जब 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' प्रकाशित हो रहा था. एक प्रभावशाली उपन्यास धारावाहिक रूप से छपता था, 'कोहरे'. लेखिका थी दीप्ति खंडेलवाल. उन का कहना था बारिश हो रही है तो उन्होंने लिखा, "काले कजरारे मेघों ने अपने श्यामल चितन का तीर चलाया है और धरती की राधा बावरी हो कर नाच उठी है. यह अलंकारिकता धीरेधीरे कम होती हुई लुप्त हुई है. आज लगभग समाप्त हो गई है. इस की जगह एक सपाटबयानी ने ले ली है. यहीं से शुरू होती है बेवजह की वर्णनात्मकता जो शब्दों की फुजूलखर्ची के बावजूद कोई मंतव्य नहीं स्पष्ट कर पाती. इतना ही नहीं, शब्दों के अपव्यय के साथ व्याकरण के नियमों को उलांघने की अराजकता भी बढ़ी है.

यह लापरवाही नए और कच्चे उन लेखकों में ही नहीं है जो कुछ न हुए तो नेता हो गए की तर्ज पर साहित्यकार होना चाहते हैं, साहित्य जिन के लिए पैशन या मिशन नहीं, बल्कि फैशन है, बल्कि उपलब्धिप्राप्त स्थापित रचनाकारों के यहां भी यह दोष दृष्टिगत होता है. यकीन न हो तो 'हंस', 'कथादेश' जैसी स्तरीय और मशहूर पत्रिकाओं में डा. दशरथ ओझा को पढ़ लें. इस बात की सचाई को गवाही मिल जाएगी. यों, सच को गवाह की क्या जरूरत. साहित्य में फैल रही इस अराजकता की जिम्मेदारी सिर्फ रचनाकार की अज्ञानता या असावधानी की नहीं है. इस के लिए संपादक भी उत्तरदायी हैं क्योंकि अनेक के पास आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसी लोहे की कलम नहीं है. आचार्य द्विवेदी के श्रम और समर्पण को आज हम अतीतकथा से अधिक कुछ नहीं कह सकते.

रचनाओं को देखने और मुकम्मल बनाने के लिए ठेके पर जो लोग अच्छी पत्रिकाओं में भी रखे जाते हैं उन से सारी सावधानी आजमा लिए जाने के बाद भी प्रकाशित रचनाओं में न सिर्फ फुजूल शब्दों की बाढ़ दिखती है बल्कि व्याकरणिक अशुद्धियों की संख्या भी भरपूर होती है. सो, रचना की भाषिक शैली के लिए रचनाकार और संपादक दोनों उत्तरदायी होते हैं.



ग्राहक बनें : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड, फोन नं. : 011-41398888 एक्सटेंशन नं. : 221, 281 ईमेल : subscription@delhipress.in/circulation@delhipressgroup.com

शब्द प्रयोग की अधिकता जहां कलात्मकता निर्मित करने के लिए भावी है, वह अब पैदा नहीं करती, लेकिन जहां वह असावधानी या भाषा पर नियंत्रण अभाव के कारण आती है, प्रभाव पैदा नहीं कर पाती. इस से न तो हम किसी उद्देश्य तक पहुंच पाते हैं न हमारा मनोरंजन हो पाता है और न वह पाठक के सौंदर्यबोध को तुष्ट कर पाता है.

ऐसा नहीं है कि शब्दों की इस बाढ़ की शिकार सिर्फ हिंदी कहानी है, बल्कि अनेक विधाओं में यह विडंबना देखने को मिल जाती है. कभी नाटकों में लंबेलंबे संवाद उपन्यास की अनावश्यक वर्णनात्मकता तो मुक्तछेद कविताओं की शुष्क गद्यात्मकता सब शब्दों के प्रति असावधानी के प्रमाण हैं. यह जरूरत से ज्यादा बोलने की तरह जरूरत से अधिक लिख सकने की एक मनोवैज्ञानिक बीमारी है जिस की जड़ में यह समझ है कि संख्या में लाखों और वजन में टनों कागज रंग कर ही अच्छा रचनाकार हुआ जा सकता है. इन की दृष्टि में इंग्लिश के जौन कीट्स, पीवी शैली तथा हिंदी में धूमिल, दुष्यंत और गुलेरी नहीं आते जिन की गिनती में कम रचनाओं ने गुणात्मकता की दृष्टि से अपने स्कूल स्थापित किए.



दिनकर ने भाषाई संतुलन बनाने की कोशिश की.

यों हिंदी कथा साहित्य का अंतिम सच यही नहीं है कि वे बड़बोली हैं. उस का अंतिम सच है भाषा, नई शिल्पप्रविधि विचार, संवेदना, उद्देश्य और मंतव्य में उस का निरंतर प्रगतिशील होना. पर ऐसी कहानियां 'हंसन की नन्ही पौत' की तरह वर्ष में दोचार ही आती हैं. इस का प्रमाण अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता के परिणाम भी होते हैं कि कभी तो लचर कहानियां विजेता घोषित हो जाती हैं और कभी स्तरीय रचनाओं के अभाव में पूरे आयोजन को निरस्त कर देना पड़ता है.

'कामायनी' जो अपने दर्शन में अधुनातन और भाषिक क्षमता में तब तक की खड़बोली हिंदी का अंतिम पूर्णविराम थी, उस में से भाषिक त्रुटियां निकाल कर प्रतिद्वंद्वी दिनकर ने 'दोषरहित दूषणसहित' निबंध द्वारा हिंदी पाठक के सामने पेश किया था. वे सब आधारहीन नहीं थीं, पर कहते हैं कि बड़ी प्रतिभा की छोटी गलतियां नहीं गिनी जातीं. पहाड़ का शिल्प मूर्तियों से नहीं मिलता. फुलवारी का अपना सौंदर्य, जंगल की अपनी गहनता अपना विन्यास.

डा. दशरथ ओझा की भाषिक सजगता समकालीन हिंदी साहित्य की भाषा को सधी चाल चलाने की मंशा में सक्रिय अंकुश है. यह निश्चित है कि शब्दों की आवश्यक बाढ़ का संबंध, जीवन को गंभीरता से न लेने वाले लेखकों की लापरवाही से है. जैसे गेहूं के साथ कुछ घास भी उगती है वैसे ही रचना के प्रति कुछ गैरगंभीर लोग फैशनपरस्ती या टाइमपास के लिए लेखन में आते हैं. वे बिना किसी प्रतिबद्धता के अपना बड़बोलापन उजागर करते हुए यानी कि बुलबुलों जैसे गुम भी हो जाते हैं. वे शब्दों के प्रति असावधान होते हैं और अपने खिलंदड़पन से रचना, भाषा और आखिरकार जीवन को अपमानित कर जाते हैं. ऐसे लोग हर दौड़ में हर कहीं होते हैं, वरना जो बेहतर हैं वे बेहतर क्योंकर होते? ●

दिल्ली प्रैस

तथ्य, तर्क, तकनीक, विज्ञान

ये आपके सुखद, स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक हैं

धर्म, पाखंड, अंधविश्वास, जाति और रंग को फिर से हावी न होने दें

सरिता गृहशोभा

सरस सलिल चंपक

सदा से जागरूकों की पत्रिका



भारत भूमि युगे युगे

सूतक में सियासत

अधिकतर राज्यों में राज्यपाल राजभवनों में आराम फरमाते लौकडाउन यानी वैज्ञानिक सूतक काल काट रहे हैं लेकिन पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की नाक में तरहतरह से दम करने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे. राजस्थान के झुंझनू के एक खातेपीते जाट परिवार के जगदीप की मारवाड़ियों में खासी पैठ है. राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोशिएशन के अध्यक्ष रह चुके धनखड़ कांग्रेस और जनता दल में भी रह चुके हैं लेकिन 2003 में वे भाजपा में शामिल हो गए थे. यानी घाटघाट का पानी उन्होंने पिया है.

भाजपा मुद्दत से लाख कोशिशों के बाद भी पश्चिम बंगाल से ममता का दबदबा भेद नहीं पा रही है, तो उस ने धनखड़ को राज्यपाल बना कर भेज दिया जिस के दिशानिर्देशों का पालन करते वे ममता को घेरने का कोई मौका नहीं गंवाते. उलटे, नएनए मौके पैदा कर लेते हैं. कई बार तो भ्रम होने लगता है कि वे राज्यपाल हैं या विपक्ष के नेता की भूमिका निभा रहे हैं. लौकडाउन के दौरान जब ममता बनर्जी राज्य के प्रबंधन में व्यस्त थीं तब उन्हें डिस्टर्ब करने की गरज से धनखड़ ने 14 पृष्ठों का एक (आरोप) पत्र उन्हें लिख डाला और फिर 3 मई को सरकार को लताड़ लगाई कि ममता सरकार गरीबों को राशन बांटने में देर और हिंसा कर रही है और अधिकारी राजनीति करते रहते हैं.



प्रतिक्रिया उम्मीद के मुताबिक हुई. जवाब में ममता ने भी 14 पृष्ठीय जवाब दिया जिस का सार यह था कि राज्यपाल महोदय कोरोना के कहर के दौरान सत्ता हड़पना चाहते हैं और इस बाबत धमकीभरी चिट्ठी उन्हें लिख रहे हैं. उन का पत्र संवैधानिक मर्यादाओं के खिलाफ है वगैरहवगैरह. धनखड़ की दिक्कत, जिस पर भाजपा आलाकमान को ध्यान

देना चाहिए, वह यह है कि पार्टी कोई जमीनी नेता पश्चिम बंगाल में खड़ा नहीं कर पा रही है और जो छोटेमोटे हैं वे धार्मिक विवाद और फसाद पैदा करने को ही राजनीति समझते हैं, जिस का अधिकतम फायदा भाजपा उठा चुकी है. कुछकुछ राजनीतिक पंडितों का मानना है कि धनखड़ को गवर्नरी छोड़ कर सक्रिय राजनीति में आ जाना चाहिए, इस से शायद कुछ और फायदा भाजपा को हो, लेकिन वह ममता से सत्ता छीनने लायक फिर भी नहीं होगा.

दिक्कत में दिग्विजय

एक कथित इंटरव्यू में कथितरूप से मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने एक ऐसी कथित बात उजागर कर दी जिसे हर कोई जानता है कि राज्य में सत्ता छीनने की एक वजह पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह हैं जिन्होंने उठापटक के दिनों में बिके यानी सिंधिया गुट के विधायकों के बाबत उन्हें धोखे या अंधेरे में रखा और 22 विधायक इस्तीफा दे कर ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ भाजपा में शामिल हो गए. हर कोई मानता व जानता है कि लड़ाई राज्यसभा सीट के साथसाथ दिग्विजय सिंधिया के शास्वत बैर और वर्चस्व की भी है या थी. जब सिंधिया को समझ आ गया कि उन की नहीं सुनी जा रही, तो वे बेवफाई करते भगवा खेमे की शरण में चले गए.

बात यहीं खत्म हो जाती, तो और बात थी, लेकिन कमलनाथ के खुलासे के बाद दिग्विजय सिंह की सिट्टीपिट्टी गुम है क्योंकि लौकडाउन के चलते राज्यसभा चुनाव आगे बढ़ा दिए गए हैं. अब ऐसे में कमलनाथ खेमा इस बात पर अड़ सकता है कि अंधेरे में रखने वाले या धोखा देने वाले दिग्विजय को राज्यसभा में क्यों भेजा जाए जिन की खुराफात कभी किसी सुबूत की मुहताज नहीं रही. गौरतलब है कि मध्य प्रदेश से राज्यसभा में एक



कांग्रेसी का जाना तय है, दूसरे पर नौबत आई तो वोटिंग होगी जिस में भाजपा का पलड़ा भारी है.

कमलनाथ खेमे से यह मांग दबी जबान से उठने लगी है कि दिग्विजय सिंह के बजाय दूसरे उम्मीदवार फूल सिंह बरैया को भेजा जाना ज्यादा फायदे का सौदा साबित होगा क्योंकि वे दलित समुदाय के हैं और उन की ग्वालियरचंबल संभागों में गहरी पैठ है, जहां 16 सीटों पर उपचुनाव होना है. उन्हें भेजने से दलित समुदाय में अच्छा मैसेज

जाएगा और कांग्रेस को चुनावी लाभ भी होगा. इस से भी ज्यादा अहम बात यह है कि दिग्विजय सिंह की बचीखुची राजनीति और गुट दोनों खत्म हो जाएंगे जिस से कांग्रेस की इमेज चमकेगी.

शायद यही दबाव था कि कमलनाथ को एक अप्रिय सत्य बोलना पड़ा जिसे बोलने की देर थी कि दिग्विजय सिंह ने कमलनाथ के फोन की घंटी बजाई. अगले ही दिन दोनों ने साथ सद्भावना डिनर किया और डकार लेने के बाद खंडन कर दिया कि ऐसा कुछ नहीं है जैसा कि वायरल हुआ था. लेकिन खटका और खतरा बरकरार है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि ये निर्देश ऊपर यानी दिल्ली से आ रहे हों.

चिराग बने हज्जाम और पत्रकार

लौकडाउन के वक्त में लोग अपनेअपने शौक पूरे कर रहे हैं, लेकिन बिहार के जामुई से लोजपा सांसद चिराग पासवान के मामले में सिंगमंड फ्रायड की थ्योरी के हवाले से कहा जा सकता है कि दमित इच्छाएं फूटफूट कर बाहर आ रही हैं. खूबसूरत चिराग हीरो बनना चाहते थे लेकिन पहली ही फिल्म 'मिले न मिले हम' महा फ्लौप हुई और उन्हें कुछ नहीं मिला तो वे समझदार युवा की तरह बिहार वापस आ गए और पिता की दलित राजनीति के कारोबार में हाथ बंटाने लगे, जो भगवा खेमे की कृपा से अभी ठीकठाक चल रही है. आगे क्या होगा, यह राम और रामविलास पासवान जानें.

फिल्मी परदे पर तरहतरह की भूमिकाएं निभाने की ख्वाहिश चिराग ने लौकडाउन के दौरान पूरी की. एक दफा वे अपने पिता रामविलास पासवान की हजामत बनाते नजर आए तो एक बार अपने मंत्री पिता का इंटरव्यू उन्होंने एक न्यूज चैनल के लिए किया. लेकिन ये टोटके ज्यादा चले नहीं, तो इस की वजह समझते चिराग को होशियार हो जाने की जरूरत है कि जब उन के गरीब, दलित मजदूर भाई देशभर में भूखेप्यासे भटक रहे थे तब वे शोहरत के लिए नकली हज्जाम और पत्रकार बन रहे थे.

जिस दलित समुदाय की राजनीति से वे आज संसद में हैं और उन के पिता केंद्रीय मंत्री हैं उसी समुदाय की अनदेखी उन्हें मंहगी पड़ सकती है. कुछ और न कर पाएं हर्ज की बात नहीं, पर हमदर्दी के दो बोल तो वे अपने वालों के लिए बोलते, उन के हक की भी बात करते तो ज्यादा प्रसिद्धि मिलती, जो चुनाव में भी काम आती. हाथ में उस्तरा और माइक थाम लेने से राजनीति ज्यादा नहीं चलने वाली. उन का नेता बुरे वक्त में क्या कर रहा था, वोटर इस पर नजर रखता है.



सरकारी सम्मान की हवस

भक्तों का लौकडाउन का वक्त पूजापाठ और श्रद्धा में कटे, इस के लिए सरकार ने पुराने धार्मिक सीरियलों के पुनर्प्रसारण की व्यवस्था कर दी तो 33 वर्षों बाद एक बार फिर रामानंद सागर खेमा और उन की रामायणी टीम की बल्लेबल्ले हो आई. राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल ने



कहा कि उन्हें कभी किसी सरकार ने सम्मान नहीं दिया. अरुण उत्तर प्रदेश के मेरठ के रहने वाले हैं और भाई के कारोबार में हाथ बंटाने मुंबई चले गए थे. 1987 में वे रामानंद सागर के संपर्क में आए और राम की भूमिका झटक ली. इस में ऐक्टिंग उन्हें ज्यादा नहीं करनी पड़ी क्योंकि आधा काम तो मेकअप से ही धार्मिक सीरियलों और फिल्मों में हो जाता है. बचे वक्त में पात्र को या तो मुसकराते रहना होता है या फिर क्रोधित होते श्राप देते रहना होता है. बाकी बचीखुची कसर भी पौराणिक भाषा वाली संवादअदायगी से संपन्न हो जाती है.

उम्मीद के मुताबिक, यह सीरियल दूसरी बार भी भक्तों ने देखा तो अरुण गोविल को याद आया कि दर्शकों ने तो खूब उन के पांव पड़े, जगहजगह पूजापाठ किया और आरती भी उतारी. लेकिन सरकारों ने अपनी सम्मान देने की जिम्मेदारी नहीं निभाई, तो यह दर्द या हवस दिल की हदें पार कर जबां पर आ ही गया. फिर तो सरकारी सम्मान रामायण के तमाम प्रमुख पात्र मांगने लगे, लेकिन तरीका बदल दिया. रावण बने अरविंद त्रिवेदी ने लक्ष्मण की भूमिका निभाने वाले सुनील लहरी को भी सम्मान और पुरस्कार देने की बात की तो जवाब में सुनील ने भी उन के लिए सम्मान देने की बात कर डाली. यानी दोनों एकदूसरे की पीठ खुजाते नजर आए जो रामजी की मंशा पर पानी फेरती राजनीति या कूटनीति कुछ भी कह लें, थी.

सरकारी सम्मान नहीं हुआ भंडारे का प्रसाद हो गया जिसे ये कलाकार बिना लाइन में लगे झटकना चाहते हैं. यह इन का लालच और हवस नहीं तो क्या है.

–भारत भूषण श्रीवास्तव ●



क्यों बनते हैं विवाहेतर संबंध

• वेणी शंकर पटेल ब्रज



पतिपत्नी संबंध प्यार और विश्वास पर टिके होते हैं. दोनों को एकदूसरे की शारीरिक जरूरतों को सम्मान देना चाहिए, वरना कोई भी पार्टनर भटक सकता है.

समाज में तेजी से बढ़ रहे विवाहेतर संबंध समाज के तानेबाने के टूटने का कारण बन रहे हैं. 2018 के जून माह में भंवरताल गार्डन, जबलपुर में रहने वाली आयशा ने स्वास्थ्य महकमे में डिप्टी डायरैक्टर के पद पर तैनात अपने पति डा. शफातउल्लाह खान की हत्या इसलिए करवा दी थी, क्योंकि उस का पति अपने विभाग की कई महिला कर्मचारियों से अवैध संबंध रखता था. अपनी ऐयाशी की वजह से पत्नी के साथ संबंध नहीं बनाता था और पत्नी को प्रताड़ित करता था अलग.

हद तो तब हो गई जब पति ने पत्नी की नाबालिग भतीजी को अपनी हवस का शिकार बना डाला और इस से नाबालिग को गर्भ ठहर गया. तंग आ कर पत्नी ने सुपारी दे कर उस की हत्या करवा दी. इसी तरह दिसंबर 2019 में नरसिंहपुर जिले के गोटेगांव थाना क्षेत्र में एक युवक आशीष की हत्या उस के ही दोस्त पंकज ने इसलिए कर दी थी

क्योंकि आशीष ने पंकज की पत्नी से सैक्स संबंध बना रखे थे.

ये घटनाएं साबित करती हैं कि समाज में बढ़ते व्यभिचार और विवाहेतर संबंधों के कारण अपराधों का ग्राफ तेजी से बढ़ रहा है.

आमतौर पर विवाह होने के बाद पति और पत्नी के बीच के सैक्स संबंध प्रारंभ के कुछ वर्षों में तो ठीक रहते हैं, परंतु बच्चों के जन्म के बाद पार्टनर की जरूरतों पर पर्याप्त ध्यान न दिए जाने व सैक्स संबंधों के प्रति लापरवाही कलह का कारण बन जाती है.

सैक्स स्पैशलिस्ट बताते हैं कि सुखद सैक्स उसी को माना जाता है जिस में दोनों पार्टनर्स ओर्गेज्म पा सकें. यदि पतिपत्नी सैक्स संबंधों में एकदूसरे को संतुष्ट कर पाने में सफल होते हैं तो उन के दांपत्य संबंधों की कैमिस्ट्री अच्छी रहती है.

राकेश और प्रीति की शादी को 5 वर्ष हो चुके हैं . उन की 2 साल की एक बेटी है. परंतु बेटी के जन्म के साथ ही प्रीति का ध्यान अपनी बेटी में ही रम गया है. पति की छोटीछोटी जरूरतों का ध्यान रखने वाली प्रीति अब पति के प्रति लापरवाह सी हो गई है.

कभी रोमांटिक मूड होने पर राकेश सैक्स संबंधी बातों के साथ जब सैक्स करने की पहल करता है तो प्रीति उसे यह कह कर झिड़क देती है कि तुम्हें तो बस एक ही चीज से मतलब है. इस से राकेश कुंठित हो कर चिड़चिड़ाने लगता है. वह अपनी कामेच्छा को मन मसोस कर दबा लेता है, परंतु सैक्स न करने की कुंठा से उस के मन में कहीं और शारीरिक संबध बनाने के खयाल भी आने लगते हैं. प्रीति जैसी अनेक महिलाओं का यही व्यवहार राकेश जैसे पुरुषों को दूसरी स्त्री के साथ संबंध बनाने को प्रोत्साहित करता है.

सैक्स की पहल आमतौर पर पति द्वारा की जाती है. पत्नी को भी चाहिए कि वह सैक्स की पहल करे. पतिपत्नी में से किसी के भी द्वारा की गई पहल का स्वागत कर सैक्स संबंध स्थापित कर एकदूसरे की संतुष्टि का खयाल रख कर विवाहेतर संबधों से बचा जा सकता है.



बच्चे और घर की जिम्मेदारी निभाने के चलते पत्नी अकसर पति के प्रति विमुख हो जाती है.

बच्चों के जन्म के बाद भी सैक्स के प्रति निरुत्साहित न हों. सैक्स दांपत्य जीवन का मजबूत आधार है. शारीरिक संबंध जितने सुखद होंगे, भावनात्मक प्यार उतना ही मधुर होगा. घर में पत्नी के सैक्स के प्रति रूखे व्यवहार के चलते पुरुष अन्यत्र सुख की तलाश में संबंध बना लेते हैं. कामकाजी पति द्वारा पत्नी को पर्याप्त समय और यौनसंतुष्टि न देने के मामलों में भी पत्नी द्वारा अन्य पुरुष से शारीरिक संबध बना लिए जाते हैं, जिस की परिणति से दांपत्य जीवन में तनाव और बिखराव देखने को मिलता है.

स्वाभाविक होता है बदलाव

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि संबंधों

फोरप्ले से आफ्टरप्ले तक का सफर

सफल दांपत्य जीवन जीने वाले पतिपत्नी के अनुभव बताते हैं कि किस तरह एकदूसरे की जरूरतों का ध्यान रख कर पार्टनर को भटकाव से बचाया जा सकता है. सैक्स को केवल रात्रिकालीन क्रिया मान कर निबटाने से सहसंतुष्टि नहीं मिलती. जब दोनों पार्टनर्स को और्गेज्म का सुख मिलेगा तभी सहसंतुष्टि प्राप्त होगी. स्त्री और पुरुष का एकसाथ स्खलित होना और्गेज्म कहलाता है. सुखद सैक्स संबंधों की सफलता में और्गेज्म या चरम सुख की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है. और्गेज्म पाने में फोरप्ले का रोल अहम रहता है.

पतिपत्नी के बीच आपस में उन के नाजुक अंगों को चूमने और सहलाने से आनंद की अनुभूति होती है. इस से दिलोदिमाग में सैक्स की तरंगें प्रवाहित होने लगती हैं. फोरप्ले के दौरान होने वाला स्त्राव जब महिला और पुरुष के यौनअंगों को अच्छे ढंग से गीला कर दे तभी सैक्स की ओर बढ़ना चाहिए. ऐसा करने से सहसंतुष्टि का सुख मिलता है. स्खलित होने पर एकदूसरे से मुंह फेरने के बजाय एकदूसरे के आलिंगन में रह कर आफ्टरप्ले का भी ध्यान रखना चाहिए.

सैक्स को शारीरिक तैयारी के साथ मानसिक तैयारी के साथ भी किया जाना चाहिए. यह पति व पत्नी की आपस की जुगलबंदी से ही मिलता है. सैक्स करने से पहले की गई सैक्स से संबंधित चुहल और छेड़छाड़ भूमिका बनाने में सहायक होती है. कमरे का वातावरण, बिस्तर की जमावट, अंडरगारमैंट्स का पहनावा जैसी छोटीछोटी बातें सैक्स के लिए उद्दीपक का कार्य करती हैं. सैक्स के दौरान घरपरिवार की समस्याएं बीच में नहीं आनी चाहिए.

सैक्स संबधों के दौरान छोटीछोटी बातों को ले कर की जाने वाली शिकायतें संबंधों को बोझिल बनाती और सैक्स के प्रति अरुचि भी उत्पन्न करती हैं. सैक्स के लिए नए स्थान और नए तरीकों के प्रयोग कर संबंधों को प्रगाढ़ बनाया जा सकता है. सैक्स की सहसंतुष्टि निश्चित तौर पर दांपत्य जीवन को सफल बनाने के साथ विवाहेतर संबधों को रोकने में मददगार साबित हो सकती है और विवाहेतर संबंधों की वजह से समाज में बढ़ रहे अपराधों पर भी काबू पाया जा सकता है.

में यह बदलाव स्वाभाविक है. शादी के आरंभिक सालों में पतिपत्नी एकदूसरे के प्रति जो खिंचाव महसूस करते हैं, वह समय के साथ खत्म होता जाता है और तब शुरू होती है रिश्तों में उकताहट. आर्थिक, पारिवारिक और बच्चों की परेशानियां इस उकताहट को बढ़ावा देती हैं. फिर इस उकताहट को दूर करने के लिए पतिपत्नी बाहर कहीं सुकून तलाशते हैं जहां उन्हें फिर से अपने वैवाहिक जीवन के आरंभिक वर्षों का रोमांच महसूस हो. यहीं से विवाहेतर संबंधों की शुरुआत होती है.

कैसे पनपता है यह संबंध

समाज के अलगअलग वर्गों में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि अलगअलग लोगों में विवाहेतर संबंधों के

कारण भी अलगअलग होते हैं. कई बार वर्कप्लेस पर लगातार एकांत में काम करने से, तो कभी किसी से भावनात्मक जुड़ाव हो जाने से भी संबंध बन जाते हैं. सैक्सलाइफ से असंतुष्टि, सैक्स से जुड़े कुछ नए अनुभव लेने की लालसा, वक्त के साथ आपसी संबंधों में प्रेम का अभाव, अपने पार्टनर की किसी आदत से तंग होना और कई बार एकदूसरे को



पतिपत्नी के रिश्ते में गरमाहट का होना जरूरी है लेकिन यह गरमी अकसर खत्म हो जाती है जो दोनों के बीच ठंडापन ला देती है.

जलाने के लिए भी विवाहेतर संबंध स्थापित हो जाते हैं.

स्त्री के प्रति दोयम दर्जे का व्यवहार

भारतीय समाज और संस्कृति में स्त्रियों के प्रति दोयम दर्जे का व्यवहार आज भी देखने को मिलता है. सामाजिक परंपराओं की गहराई में स्त्रीद्वेष छिपा है और यही परंपराएं पीढ़ियों से महिलाओं को गुलाम मानती आई हैं. सामाजिक ढांचे में उन्हें इस तरह ढाला जाता है कि वे अपने शरीर के आकार से ले कर निजी साजसज्जा तक के लिए स्वतंत्र नहीं हैं.

जो महिला अपने ढंग से जीने के लिए परंपराओं और वर्जनाओं को तोड़ने का प्रयास करती है उस पर समाज चरित्रहीन होने का कलंक लगा देता है. पुरुष को घर में व्यवस्था, पत्नी का समय व बढ़िया तृप्तिदायक खाना, सुखचैन का वातावरण और देह संतुष्टि की कामना रहती है, लेकिन कभी पुरुष उन की सुखसुविधाओं व शारीरिक जरूरतों का उतना खयाल नही रखता.

पत्नी से यह अपेक्षा जरूर की जाती है कि वह पति की नैसर्गिक चाहें पूरी करती रहे. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, "विवाहेतर संबंधों को रोकने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है. यदि आपसी रिश्तों की गरमाहट कम हो गई है तो रिश्तों को पुराने कपड़े की तरह निकाल कर नए कपड़ों की तरह नए रिश्ते बनाना समस्या का हल नहीं है. अपने पार्टनर को समझाने के कई तरीके हैं. उस से बातचीत कर समस्या को सुलझाया जा सकता है. सैक्स को ले कर की गई बातचीत, सैक्स के नएनए तरीके प्रयोग में ला कर एकदूसरे की शारीरिक संतुष्टि से विवाहेतर संबंधों से बचा जा सकता है. ●



जीवन की मुसकान

दिल्ली में मैं परिवार के साथ अपने देवर की लड़की की सगाई में शामिल होने के बाद पश्चिम विहार से रात साढ़े 12 बजे अपने घर दिलशाद गार्डन वापस जा रही थी कि अचानक हमारी कार आजाद मार्केट के पास खराब हो गई. बरसात काफी हो रही थी और वहां पर चढ़ाई थी.

मैं, मेरे पति, मेरी बेटी हम सब कार को धक्का लगा रहे थे और मेरा बेटा गाड़ी को एकतरफ लगाने की कोशिश कर रहा था. इतने में एक कार हमारे आगे आ कर रुक गई. हम डर गए कि इतनी रात को गाड़ी हमारे पास क्यों रुक गई. उस गाड़ी से 2 जवान लड़के निकले और हमारे पास आ कर मुझे और मेरी बेटी को गाड़ी में बैठने को कहा और खुद हमारी गाड़ी को खोल कर ठीक करने की कोशिश करने लगे. हम ने उन की गाड़ी में एक नई दुलहन जैसी लड़की को बैठे देखा तो हमें थोड़ा सुकून हो गया.

काफी कोशिश करने के बाद भी गाड़ी ठीक नहीं हुई तो उन्होंने सोचा कि शायद पैट्रोल की वजह से गाड़ी नहीं चल रही. मेरे पति को ले कर वे पैट्रोल पंप तक गए और पैट्रोल ला कर फिर गाड़ी ठीक करने की कोशिश की. किंतु कुछ नहीं हुआ. आधापौना घंटा बीत चुका था. तब पास में एक व्यक्ति ने बताया कि थोड़ी दूरी पर एक मिस्त्री मिल जाएगा. वे फिर उस मिस्त्री को ढूंढ़ने गए और मिस्त्री को ले कर आए. मिस्त्री ने गाड़ी को जल्दी ही ठीक कर दिया क्योंकि उस में ज्यादा खराबी नहीं थी लेकिन मिस्त्री बोला कि इस को बंद नहीं करना. इस कार्य में लगभग सवा घंटा बीत चुका था.

इसी बीच हमें बातों में पता चला कि वे अपने किसी रिश्तेदार को छोड़ कर आ रहे थे और हमारी खराब गाड़ी को धक्का लगाते देख हमारी सहायता के लिए रुक गए थे.

हम ने थोड़ा पैट्रोल और लेने के लिए रास्ते में गाड़ी को रोका और वे भी हमारे साथसाथ चल रहे थे. पैट्रोल लेने के बाद सीलमपुर तक वे हमारे साथ रहे और उस के बाद वे अपने रास्ते चले गए और हम अपने घर पहुंचे.

हम ने उन को जब धन्यवाद दिया तो उन्होंने कहा कि हम भी आप के बच्चों जैसे हैं. बिना अपना नाम अथवा कुछ भी बताए वे चले गए.

आज भी जब कभी किसी गाड़ी के खराब होने के बारे में सुनते हैं तो वह नजारा हमारे सामने आ जाता है और फिर दिल से उन के लिए स्नेह उमड़ता है.

सीमा भसीन (श्रेष्ठ) ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा.

पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/औडियो** भी कर सकते हैं.*

08527666772



खतरनाक है दवाओं का अधिक सेवन

• शिखर चंद जैन





किसी भी दवा को बिना डाक्टरी सलाह के लेने की गलती न करें क्योंकि हर दवा की कुछ डोज होती है. उस के अधिक या कम मात्रा में सेवन करने से सेहत के लिए नुकसान हो सकता है. सो, खुद ही डाक्टर बन कर अपनी सेहत से खिलवाड़ न करें.

राजीव कमरदर्द से परेशान था. एक नामी अस्थि विशेषज्ञ को दिखाया. डाक्टर ने 5 दवाएं लिख दीं, जिन में से एक दवा में निमुसलाइड था (उन्नत देशों में लिवर टौक्सिन के कारण प्रतिबंधित), दूसरी दवा में हार्ट अटैक का खतरा बढ़ाने वाला कंपाउंड था (विदेशों में प्रतिबंधित), तीसरी दवा, जो एक पेनकिलर थी, उसे आमतौर पर उपरोक्त दवाओं के साथ नहीं दिया जाता था (रक्तपात और लिवर फेल्योर के डर से), चौथी दवा एक एंटी बैक्टीरियल थी (डायबिटीज का खतरा बढ़ने के कारण विदेशों में नहीं दी जाती) और 5वीं दवा विटामिन बी कौम्प्लैक्स थी. यह नुकसानदायक प्रिस्क्रिप्शन पूरी तरह डाक्टर साहब की लापरवाही, हड़बड़ी और गैरजिम्मेदारी का नतीजा था. सब से बड़ी गलती तो एक ही मरीज को 2 नौन स्टेरौयडल एंटी इन्फ्लेमेटरी ड्रग (एनएसएआईडी) लेने की सलाह थी...और शायद उन की यह सोच भी कि, 'एक नहीं तो दूसरी काम करेगी'.

नन्हा कार्तिक अभी सालभर का पूरा नहीं हुआ है. बुखार और डायरिया से परेशान था. उस की मम्मी उसे एक शिशुरोग विशेषज्ञ के पास ले गई. डाक्टर साहब ने निमुसलाइड और पैरासिटामौल के कौंबिनेशन वाली दवा दी (भारत के अलावा यह कौंबिनेशन दुनिया में कहीं स्वीकार्य नहीं). इतना ही नहीं, डाक्टर ने नाइट्राजोक्सानाइड, ओफ्लोक्सासिन और ओंडाटिरौन के कौंबिनेशन वाली दवा भी दे दी. ध्यान दें, ओफ्लोक्सासिन 6 साल से कम के मरीजों के लिए नहीं होती, इस से शारीरिक ढांचा गड़बड़ा सकता है. ओंडासिटेरौन सिर्फ कैंसर के रोगियों को (रेडियोथेरैपी या कीमोथेरैपी के वक्त) जी मिचलाने और वमन से बचाने के लिए दी जाती है.

ये मात्र 2 उदाहरण हैं चिकित्सकों की लापरवाही के. आप को ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिल जाएंगे, जिन में चिकित्सकों ने एकसाथ 2 एंटीबायोटिक दवाएं, साथ में कोई आयुर्वेदिक दवा, दोदो पेनकिलर व नुकसानदायक दवाएं मरीजों को प्रिस्क्राइब की हैं.

जरूरी है सही विश्लेषण

इंडियन मैडिकल एसोसिएशन की कोलाकाता शाखा के सचिव डा. अमित अग्रवाल, जो कई चिकित्सकों के लापरवाहीपूर्ण रवैए से बेहद चिंतित हैं. उन का मानना है कि चिकित्सकों को सही ढंग से रोग का विश्लेषण कर के बेहद जरूरी टैस्टों की रिपोर्ट करवाने के बाद ही एंटीबायोटिक लेने की सलाह देनी चाहिए. दर्दनिवारक दवाओं का भी सीमित व बेहद जरूरी होने पर ही प्रयोग करना चाहिए.

हिट या मिस का फार्मूला

कोलकाता के रवींद्रनाथ टैगोर मैडिकल इंस्टिट्यूट के मैडिसिन विशेषज्ञ डा. अरिंदम विश्वास कहते हैं, "आजकल चिकित्सक हिट या मिस वाला फार्मूला अपना रहे हैं और एकसाथ कई दवाओं का प्रयोग यह सोच कर करते हैं कि एक नहीं तो दूसरी दवा तो काम करेगी ही. जबकि, उन को अपने मरीज की सेहत और बजट के लिहाज से दवाइयां देनी चाहिए."

सरकार, डाक्टर और मरीज तीनों दोषी : डा. विश्वास के अनुसार, इस प्रवृत्ति के लिए डाक्टर, सरकार और खुद मरीज तीनों दोषी हैं. सरकार विदेशों में प्रतिबंधित दवाओं को यहां खुलेआम बेचने देती है, यह उस की गलती है. वर्तमान में कम से कम 15 दवाएं भारत में बेची जा रही हैं जो दुनियाभर में प्रतिबंधित हैं. सैकड़ों दवाएं ऐसी बिक रही हैं जो अनापशनाप व नुकसानदायक कौंबिनेशन वाली हैं. इस प्रकार, सरकार का रवैया ढीला है. दूसरी ओर, कुछ डाक्टर लोभ में आ कर ऐसी दवाएं लिखते हैं. वहीं, मरीज इन चीजों के प्रति जागरूक नहीं हैं.

क्या करें मरीज : डा. अमित कहते हैं, "अपने चिकित्सक से प्रिस्क्रिप्शन मिलने पर उसे गौर से देखें. उन्होंने जो दवाएं लिखी हैं उन के बारे में जान लें कि कौन सी दवा किस काम की है. उन से रोग के बारे में भी परचे पर लिखने को कहें. डाक्टर जो जांच करवाने को कहें, उन्हें करवा लें. लेकिन आप को लगे कि दवाओं की संख्या ज्यादा है या कौंबिनेशन दवाएं लिखी गई हैं तो सैकंड ओपिनियन लेने में न हिचकें. हां, प्रतिबंधित दवाओं की जानकारी इंटरनैट के माध्यम से अवश्य रखें. आप को अपनी सेहत के लिए जागरूक होना पड़ेगा."

दवा लेने के सुरक्षित तरीके

दवा लेने के कुछ कायदे होते हैं, उन का ध्यान रखा जाए, तो कई प्रकार की संभावित जटिलताओं से बचा जा सकता है.

- आप का नियमित डाक्टर आप की फैमिली हिस्ट्री व मैडिकल कंडीशन से काफी हद तक वाकिफ होता है. लेकिन अगर किसी नए डाक्टर के पास जा रहे हैं तो उन्हें आप अपनी मैडिकल हिस्ट्री व चालू दवाओं की जानकारी अवश्य दें. बेहतर होगा पिछले प्रिस्क्रिप्शन उन्हें दिखा दें.
- अपने मन से पुराने प्रिस्क्रिप्शन के आधार पर दवाएं न लें. कई दवाएं लक्षणों व तात्कालिक इलाज के हिसाब से दी जाती हैं.
- किसी दवा को लेने पर पेट खराब हो जाए, स्किन पर रैशेज या सूजन आ जाए, तो दवा बंद कर के चिकित्सक से मिलें.
- दवा खाली पेट लेनी है या खाना खा कर, इस बात की जानकारी जरूर लें.
- दवा की एक्सपायरी डेट जरूर देख लें. एक्सपायरी नहीं आई हो लेकिन दवाई पिघली हुई, बदशक्ल या बदरंग लग रही है, तो भी उस दवा को न लें और तुरंत फेंक दें.

दवा लेने के गलत तरीके

- कई बार देखा जाता है कि कुछ मरीज, विशेषरूप से बच्चे या बुजुर्ग, जब टेबलेट या कैप्सूल लेने में दिक्कत महसूस करते हैं, तो वे खुद

या उन के परिजन टेबलेट को चूर देते हैं या कैप्सूल खोल कर उस के दाने या पाउडर निकाल कर किसी तरल चीज में मिला कर खा लेते हैं. कुछ लोग टेबलेट को चूसने या चबाने लगते हैं और उस के टुकड़े कर के गटकते हैं. लेकिन ऐसा करना कई मामलों में सेहत के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है.

- कई पिल्स धीरेधीरे घुल कर एक खास समय पर, खास स्पीड से, विशेष लोकेशन पर अपना असर



कुछ मरीज जल्दी ठीक होने के चक्कर में गलत तरीके से दवाओं का सेवन करने लगते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है.

छोड़ती हैं, जहां उन की सब से ज्यादा जरूरत होती है. जो दवाएं तुरंत असर के लिए होती हैं वे पेट में जा कर हाथोंहाथ घुल जाती हैं और रक्त में मिल कर काम करना शुरू कर देती हैं. जबकि एस्प्रिन और ओमेप्राजोल (हार्ट बर्न, गैस की दवा) जैसी दवाओं में विशेष एसिड रेजिस्टैंस कोटिंग होती है, ये पेट से हो कर गुजरती जरूर हैं लेकिन घुलती छोटी आंत में जा कर हैं और वहीं इन का विशेष काम होता है. इन दवाओं को तोड़ने पर इन की कोटिंग नष्ट हो जाती है और ये बेअसर हो जाती हैं.

- कुछ दवाएं, जैसे एलेनड्रोनेट, राइजड्रोनेट, इबानड्रोनिक एसिड आदि रजोनिवृत्त महिलाओं को ओस्टियोपोरोसिस के इलाज के लिए दी जाती हैं, उन्हें अगर चबाया या चूसा जाए, तो ये भोजननली को भारी नुकसान पहुंचा सकती हैं. इन्हें साबुत ही पर्याप्त पानी के साथ निगलना चाहिए.
- आप ने देखा होगा कि कुछ टेबलेट्स पर ससटेंड रिलीज, कंट्रोल्ड रिलीज या एक्सटेंडेड रिलीज लिखा होता है. ये दवाएं धीरेधीरे 12 से 24 घंटे तक रिलीज हो कर असर छोड़ती रहती हैं. ऐसी टेबलेट्स को तोड़ना, चबाना या चूसना, पेट, आंत या मुंह को नुकसान पहुंचा सकता है. हार्ट की दवा डाइगोक्सिन, एंटी कोगुलेंट दवा डेबीगेट्रोन और एंटी हाइपरटैंसिव टेबलेट इस श्रेणी में आती हैं. डाइगोक्सीन को क्रश कर के लेना मृत्यु का सबब तक बन सकता है. इसी प्रकार एंटी हाइपरटैंसिव दवा को चूसना तेजी से ब्लडप्रैशर में गिरावट और मृत्यु का सबस बन सकता है. इसलिए, दवा को सही तरीके से लें.

दवाएं जो शाम को होती हैं असरदार

स्वास्थ्य विज्ञानियों की मानें तो ब्लडप्रैशर कंट्रोल करने के लिए दवा पर निर्भर लाखों लोग अगर सुबह के बजाय रात को दवा लें, तो वे अपने दिल की बेहतर सुरक्षा कर सकते हैं. किडनी की समस्या से ग्रस्त 650 मरीजों पर किए

गए अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि इन मरीजों ने ब्लडप्रैशर नियंत्रित करने वाली कम से कम एक दवाई सुबह के बजाय रात को ली, तो उन में हार्ट अटैक, स्ट्रोक और हार्ट फेल्योर के मामले दूसरों के मुकाबले काफी कम (33 फीसदी से भी कम) मिले. नतीजे पर पहुंचने से पहले इन मरीजों पर 5 सालों तक गहन अध्ययन किया गया.

अमेरिका के क्लीवलैंड क्लिनिक के कार्डियोलौजिस्ट एवं मैडिसिन ऐक्सपर्ट डा. डेविड जे फ्रिड कहते हैं, "दूसरे अध्ययनों में भी दवा की इवनिंग डोज का यही हार्ट प्रोटैक्टिव इफैक्ट पाया गया है. जब आप सुबह उठते हैं, तो उस समय आप का ब्लडप्रैशर और हार्ट रेट सब से ज्यादा होते हैं. रात को दवा लेने का मतलब है कि अगली सुबह के लिए आप को अच्छा प्रोटैक्शन मिला हुआ है."

विशेषज्ञों का कहना है कि अगर आप को एलर्जी या एंग्जायटी की कोई दवा दिन में एक बार खानी है तो उसे रात को सोते समय लेना बेहतर होगा. इस की वजह यह है कि ये दवाएं लेने पर आप दिनभर उनींदे और सुस्त रहेंगे तो किसी काम में मन नहीं लगेगा और सिर चकराने का भी एहसास होगा. इस से आप के दिमाग को भी आराम नहीं मिलेगा और तनाव बढ़ेगा.

सोचसमझ कर लें नींद की दवा

स्ट्रैस और अंसतुलित जीवनशैली के कारण ज्यादातर लोगों को इन दिनों नींद न आने की समस्या का सामना करना पड़ता है. कई लोग अच्छी नींद के लिए एलप्रोजोलाम, नाइट्रोजिपाम या लोराजिपाम जैसी दवाएं लेने लगते हैं. चिकित्सकीय जरूरत के कारण एक सीमित अवधि तक तो इन का इस्तेमाल ठीक है, लेकिन इन की आदत बनाना काफी नुकसानदायक हो सकता है. नैशनल मैडिकल कालेज के फार्माकोलौजिस्ट डा. स्वपन जाना के मुताबिक, इन के दुष्प्रभाव से मस्तिष्क की कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है. ये कई बार मस्तिष्क को शांत करने के बजाय उत्तेजित कर देती हैं. मरीज को मिरगी जैसा दौरा भी पड़ सकता है. विवेकशीलता का घटना, बात करने की क्षमता प्रभावित होना, भूख बढ़ना, वजन बढ़ना आदि समस्याएं भी हो सकती हैं.

बुढ़ापे में ज्यादा दवाएं ठीक नहीं

बुढ़ापे में कई तरह के रोग हावी हो जाते हैं, जैसे डायबिटीज, हाई ब्लडप्रैशर,



हाई ब्लडप्रैशर, डायबिटीज, हार्ट डिजीज, हाई कोलैस्ट्रौल जैसी बीमारियों से परेशान मरीज बुढ़ापे में मानसिक रूप से टूट जाता है.

हाई कोलैस्ट्रौल, हार्ट डिजीज, ओस्टियोआर्थराइटिस आदि. ऐसे में बीमार व्यक्ति कभी जनरल फिजीशियन (सामान्य रोग), कभी और्थोपैडिक

कौन सी दवा किस चीज के साथ

कुछ लोग दवा को सादे पानी से न ले कर नीमहकीमों या आधेअधूरे जानकारों के कहे में आ कर जूस, चाय, कौफी, दूध आदि पेय पदार्थों के साथ लेते हैं. लेकिन, इन के क्या नुकसान हो सकते है, जान लें-



अंगूर का रस : यह कुछ दवाओं को मेटाबोलाइज करने वाले एन्जाइम्स को निष्प्रभावी कर देता है जैसे हार्ट की दवाएं, एंटीडिप्रेसैंट और एंटीफंगल. इस से न सिर्फ दवाओं का असर कम हो जाता है, बल्कि साइड इफैक्ट्स का खतरा भी बढ़ सकता है.

कौफी, चाय, कोला : अस्थमा की दवाएं लेते समय अगर आप कैफीन का नियमित सेवन करते हैं, तो इस से पेट की गड़बड़ी हो सकती है. ऐसे लोगों को एस्प्रीन या इबूप्रोफेन सरीखी नौनस्टेरौयडल एंटीइंफ्लेमेटरी ड्रग्स से बचना चाहिए.

दूध : दूध में मौजूद कैल्शियम कुछ एंटीबायोटिक्स को एब्जौर्ब होने में दिक्कत कर सकता है.

अल्कोहल : नियमित रूप से ड्रिंक करने वाले पैरासिटामोल लेते हैं, तो लिवर डैमेज होने का खतरा बढ़ जाता है. यह अल्कोहल एंटीडिप्रैसैंट का असर कम कर सकता है एवं कई दूसरी दवाओं के साइड इफैक्ट्स को प्रबल कर सकता है.

फाइबर ड्रिंक : फलों या सब्जियों के रस में मौजूद रेशे कई दवाओं के प्रभाव को कम या निष्क्रिय कर सकते हैं.

(अस्थिरोग), कभी कार्डियोलौजिस्ट (हृदयरोग), तो कभी डायबिटोलोजिस्ट (मधुमेह) के चक्कर लगाता है और सब के परामर्श को मान कर उन की सुझाई हुई दवाएं चनाचबैना की तरह खाने लगता है. इस से मरीज को लाभ होने के बजाय तिहरा नुकसान होता है. पहला- अलगअलग चिकित्सकों की फीस एवं ढेर सी दवाओं की कीमत का बोझ, दूसरा- खूब सारी दवाएं खाने की मजबूरी से मानसिक परेशानी और समय की बरबादी, तीसरा और सब से अहम यह है कि कई दवाएं ऐसी होती हैं जो परस्पर एकदूसरे की प्रभावशीलता को कम कर सकती हैं.

ओरिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के सेहत विशेषज्ञों ने अपने अध्ययन में पाया कि खूब सारी अलगअलग दवाओं के सेवन से जितना फायदा हो सकता है उतना ही नुकसान भी हो सकता है. बल्कि, कुछ दवाएं न खाना ठीक रहता है. ऐसे में मरीज क्या करें, विशेषज्ञों ने सलाह दी है कि जहां तक संभव हो सके, ऐसे वृद्ध मरीजों को अपने शहर में जेरियाट्रिशियन का पता लगा कर उन से अपना इलाज कराना चाहिए. जेरियाट्रिक्स वृद्ध मरीजों की चिकित्सा के लिए एक अलग विभाग है, जो उम्र के साथ हावी होने वाले रोगों की बेहतर समझ रखता है. इस में कम दवाएं खा कर भी स्वस्थ रहा जा सकता है. ●

मासिकधर्म, धर्म और बिटिया

• नीरज कुमार मिश्रा





मासिकधर्म को अधर्म बताने का षड्यंत्र आज भी रचा जाता है. जाने क्यों धर्म के दुकानदार इसे सहजता से नहीं लेते और न ही लेने देते हैं. क्या है इस के पीछे की अवैज्ञानिक मानसिकता, आइए देखें.

मैं पुरुष हूं, इस नाते मुझे महिलाओं के जैसे होने वाले मासिकधर्म का कोई डर नहीं रहा. पर 2 ऐसी घटनाएं मैं ने अपनी बहन के साथ देखीं जिन्होंने मेरे मन को पूरी तरह हिला दिया, न केवल हिलाया बल्कि स्त्री के प्रति और भी श्रद्धा से भर दिया.

मेरी दीदी, जो मुझ से 5 साल बड़ी हैं, जब 10वीं में थीं तब वे अचानक कालेज से एक दिन जल्दी ही घर वापस आ गईं. उन के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था. उन के कुरते के पिछले हिस्से पर खून के निशान थे जिसे उन्होंने पानी से धोया था. उन के कपड़े पूरी तरह गीले हो गए थे. मेरे पूछने पर वे बात टाल गईं और मां ने मुझे डांट कर चुप रहने को कहा था. बड़े होने पर धीरेधीरे मैं स्वयं ही समझ गया कि उस दिन दीदी के साथ क्या हुआ होगा. जो भी हुआ, उस समय दीदी की मनोदशा को सोच कर मैं आज भी कांप उठता हूं.

मुझे मेरे बचपन की दूसरी घटना याद आती है. दीदी की शादी के बाद मैं पहली बार उन के घर गया था. एक सुबह मैं ने देखा कि दीदी जमीन पर सो रही थीं, जबकि जीजाजी ऊपर बिस्तर पर सो रहे थे. दीदी से मैं ने इस का कारण पूछा तो उन्होंने सहजता से बता दिया कि स्त्रियों में जब मासिकचक्र होता है तो वे अछूत हो जाती हैं और उन को जमीन पर ही सोना पड़ता है. उस समय तो उन की बात बहुत अजीब लगी पर मैं करता भी क्या, इसलिए चुप ही रहा.

अपने जीवनकाल में हर महिला को मासिकचक्र से गुजरना पड़ता है, जो कि एक बहुत ही सामान्य प्रक्रिया है. लेकिन धार्मिक दृष्टि से औरतों को अपवित्र माना जाता है. कम से कम हिंदू धर्म में तो ऐसा आज भी माना जाता है. पर यदि मासिकधर्म के होने से महिलाएं अपवित्र हो जाती हैं तब तो इस दुनिया का हर एक पुरुष और महिला अपवित्र है क्योंकि जन्म के समय हर बच्चा उसी रक्त में लिप्त और सना हुआ होता है.



महिलाओं को मासिकधर्म के समय शारीरिक पीड़ा के साथसाथ धर्म के ठेकेदारों के थोपे गए नियम और बंदिशें भी झेलनी पड़ती हैं.

अगर खुलेदिमाग से गौर किया जाए तो मासिकचक्र के दौरान स्त्री को अपने से अलग रखना पुरुष के मिथ्या अहंकार को पोषित करने के अलावा और कुछ नहीं. हिंदू धर्म के पुराणों की एक कथा के अनुसार, इंद्र देवता ने अपने हिस्से का पाप औरतों को भी दे दिया था और इसी कारण महिलाओं को प्रतिमाह इस मासिकधर्म की पीड़ा से गुजरना पड़ता है.

अंधविश्वास के कारण हिंदू धर्म में मासिकधर्म के दौरान कई काम करने की मनाही होती है.

गाय माता को न छूना : मासिकधर्म के समय महिलाओं को गाय तक को छूने की मनाही होती है क्योंकि अगर रजस्वला स्त्री ने गाय माता को छू लिया तो गाय दूध देना बंद कर देगी. यह कितनी अजब, हास्यप्रद और अवैज्ञानिक बात है. न गाय माता है और न उस रजस्वला स्त्री के छूने से उस का दूध बंद होगा. कोई पशु इस का भेद कर ही नहीं सकता कि छूने वाला किस स्थिति में है.

कोने में पड़ी रहना : अचार न छूना, किसी को पानी तक न देना और घर के एक कोने में ही पड़ी रहना जो पूरी तरह से किसी भी यातना से कम नहीं है, रजस्वला औरत के लिए जरूरी है.

गंभीर मनाही : इन दिनों के दौरान हिंदू स्त्रियों को मंदिर जाने की भी मनाही होती है, सबरीमाला के मंदिर में 10 साल से ले कर 50 साल की स्त्रियों के प्रवेश की जो मनाही है वह स्त्री के रजस्वला होने के कारण ही बनाई गई है और



धर्म और मासिकधर्म के नाम पर धर्म के ठेकेदारों द्वारा हमेशा से पाबंदियां लगाई जाती रही हैं.

तुलसी के पौधे से दूर रहना : महिलाओं को तुलसी के पौधे से भी दूर रहना होता है. अगर मासिकधर्म के दौरान स्त्री की छाया भी तुलसी के पौधे पर पड़ गई तो पुराणपंथियों के अनुसार, वह सूख जाएगा. इस का वैज्ञानिक कारण पूछने पर कोई बता नहीं पाता और सिर्फ यह कह कर पल्ला झाड़ लेते हैं कि यह बात उसे उस के बड़ेबुजुर्गों ने बताई है. इसलिए, वह इस को मानता आ रहा है.

स्त्रियां घर में ही किसी प्रकार का पूजापाठ नहीं कर सकती हैं. और तो और, महिलाएं इन दिनों भगवान के नामों का उच्चारण भी नहीं कर सकती हैं. अगर ऐसा कर दिया तो उन को बड़ा पाप लग सकता है. मंदिर में जाने से औरतों का कल्याण तो नहीं होता, पर न जाने देना उन पर सामाजिक अत्याचार है.

धर्मों में मासिकधर्म : ईसाई धर्म में स्त्रियों को किसी तरह की खास मनाही नहीं है. अगर स्त्रियां चाहें तो वे चर्च जा

सकती हैं. वहीं, सिख धर्म एक रजस्वला स्त्री को इन दिनों में और भी ज्यादा पवित्र मानता है.

सिख धर्म के अनुसार, जिस रक्त से जीवन पनपता है और जो स्त्री पूरे संसार को जन्म देती है, वह भला अपवित्र कैसे हो सकती है बल्कि वह तो इन दिनों में और भी पवित्र हो जाती है. इसी अवधारणा के चलते सिख महिलाओं पर कोई पाबंदी नहीं होती, वे गुरुद्वारे भी जा सकती हैं.

मां की ड्यूटी : हर मां को चाहिए कि वह अपनी बेटी को मासिकधर्म के बारे में सहीसही बताएं.

जैसे ही आप की बेटी 9 से 10 साल की हो जाए, तभी आप उस को मासिकधर्म के बारे में सबकुछ बताना शुरू करें, ताकि बेटी का बालमन उसे आसानी से समझ सके.

अगर मातापिता दोनों बाहर काम पर जाते हैं तो बेटी के लिए एक आकस्मिक मासिक किट तैयार कर दें जिस में एक पैंटी का जोड़ा और 2 से 3 पैड्स रख दें. शुरुआत में मासिकधर्म काफी अनियमित हो सकता है. ऐसे में यह किट आप की बेटी को स्कूल में भी भयमुक्त रखेगी. यदि हो सके तो बेटी को यह भी बताएं कि यह जीवन को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक प्रक्रिया है. इस से उस से शर्म न महसूस कर के अपनेआप को गौरवान्वित महसूस करना चाहिए. अपनी बिटिया को बताएं कि यह एक नैसर्गिक क्रिया है.

हैप्पी टू ब्लीड : पिछले दिनों सोशल मीडिया पर 'हैप्पी टू ब्लीड' नामक कैंपेन काफी लोकप्रिय हुआ था. इस कैंपेन में एक लड़की को समय से पहले ही मासिकधर्म होने लगा था, जिस का उसे पता नहीं चला और पुरुष उसे अजीब नजरों से घूरते रहे. उस की अनभिज्ञता देख रास्ते में एक महिला ने उसे सैनिट्री पैड दिया तब उस की समझ में आया कि उसे मर्द रास्ते में क्यों घूर रहे थे.

उस लड़की ने खून में भीगा हुआ अपना पजामा सोशल मीडिया पर भी शेयर किया था और लिखा, "मेरी यह पोस्ट उन महिलाओं के लिए है जिन्होंने मेरे स्त्रीत्व को छिपाने में मेरी मदद की. मेरे लिए यह कोई शर्म की बात नहीं है, बल्कि हर महीने दर्द के साथ होने वाली एक सामान्य प्रक्रिया है."



मां की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह अपनी बड़ी होती बेटी को शारीरिक बदलाव की जानकारी दे.

जिस स्त्री को पीरियड नहीं आते, वह भी तनाव में रहती है और हर महिला को इसे सामान्य ढंग से ही लेना चाहिए, न कि इसे एक पाप और टैबू मान कर अंधविश्वास में जिंदगी बसर करनी चाहिए. ●



बैंक में मृतक के खाते वारिस के दावे

• निरंजन धुलेकर



व्यक्ति के जीवन का कोई भरोसा नहीं है. जो, आज है कल नहीं भी हो सकता. ऐसे में व्यक्ति की संपत्ति को ले कर उस के वारिस कभी बैंक के, तो कभी कोर्ट के चक्कर काटने को मजबूर हो जाते हैं. सो, अपनी मृत्यु से पहले ही व्यक्ति को अपनी संपत्ति से जुड़े फैसले कर देने चाहिए.



मृत्यु पर किसी का बस नहीं, वह कब किसे उठा ले, पता नहीं. वक्त के साथ घरवाले, वारिस दुख से उबरते जाते हैं और अन्य बातों पर भी बातचीत शुरू हो जाती है. चर्चा का एक प्रमुख मुद्दा मृतक की विरासत का बंटवारा भी होता है. मृतक के नाम पर अनेक तरह की संपत्तियां होने के साथ ऋण की जिम्मेदारियां भी हो सकती हैं. मानव स्वभाव ऐसा होता है कि मीठामीठा खा कर कड़वाकड़वा थूक देता है.

संपत्ति की मीठी खुशबू लेने के लिए सभी वारिस जमा होने लगते हैं. मृतक का यदि ऋण बकाया हो तो उस के बंटवारे के प्रति लोग रुचि नहीं दिखाते और जिम्मेदारी को एकदूसरे पर खिसकाने का प्रयास करते हैं.

मृतक की संपत्ति

संपत्ति 2 तरह की होती है, चल संपत्ति और अचल संपत्ति. चल संपत्ति जैसे वाहन, कार, बाइक, बस, ट्रक, टैंपो, जीप आदि. अचल संपत्ति की श्रेणी में घर, खेत, प्लौट, बिल्डिंग, बैंक में जमा धनराशि , लौकर्स, शेयर्स, डिविडैंड आदि आते हैं. साथ ही, मृतक द्वारा किसी व्यक्ति को दिया गया ऋण, जिस की वसूली होनी बाकी है, भी इसी श्रेणी में आता है. बैंक में मृतक का धन अमूमन बचत खातों और विभिन्न प्रकार के फिक्स्ड डिपौजिट व रैकरिंग खातों के रूप में रखा होता है और दौलत लौकर्स में.

मृतक के लौकर

लौकर में नोट, सोनाचांदी, हीरे, जवाहरात और प्रौपर्टी के कागजात, शेयर

सर्टिफिकेट आदि रखे जाते हैं. यानी, आप अपनी कोई भी कीमती चीज लौकर्स और सेफ डिपौजिट में रख सकते हैं. लौकर की चाबी होने भर से कोई उस का मालिक नहीं हो जाता. जब तक कि लौकर का वारिसाना हक न हो, कोई उसे खोल नहीं सकता.

महत्त्वपूर्ण यह है कि लौकर में जो भी सामान रखा होगा उस की पूरी जिम्मेदारी लौकर के ग्राहक की ही होती है, बैंक किसी भी सूरत में जिम्मेदार नहीं होता.

इस संबंध में एक छोटी सी सत्य घटना बहुतकुछ बताती है :

बैंक के एक प्रतिष्ठित खातेदार चल बसे. पत्नी ने बैंक के तमाम बचत और मियादी खातों में रखे धन की प्राप्ति का दावा पेश किया. मृतक का एक लौकर बैंक में था और वे महीने में 2-3 बार उसे



खातेदार को बैंक में किसी भी प्रकार की पूंजी जमा करने या अन्य जगह इन्वैस्ट करने की सूचना अपने वारिसों को देते रहना चाहिए.

औपरेट जरूर करते थे. बैंक का स्टाफ उन्हें अच्छी तरह जानता था. बैंक ने भलमनसाहत में पत्नी को बताया कि आप ने क्लेम फौर्म में मृत पति के नाम पर अलौट लौकर का जिक्र नहीं किया है उसे भी जोड़ दीजिए. वे चौंक गईं. उन्हें लौकर की कोई जानकारी नहीं थी.

बैंक के आग्रह पर उन्होंने लौकर पर क्लेम दर्ज कर दिया. चूंकि चाबी पत्नी के पास नहीं थी, सो, लौकर को पत्नी और 2 गवाहों की उपस्थिति में तोड़ कर खोला गया और जो मालमत्ता निकला उस में थे खालिस सोने के मंगलसूत्र, बहुत सारे गहने और किसी अन्य महिला को लिखे गए प्रेमपत्र. गहनों की खरीद की रसीदें भी मिलीं जिन पर उसी महिला का नाम अंकित था.

जाहिर है इस गुप्त धनदौलत, कागजपत्तर को देख कर आगे क्या होता, कल्पना आसानी से की जा सकती है. जन्मों से अर्जित विश्वास लौकर खुलते ही टूट गया.

खातेदार की मृत्यु के बाद का सच

अकसर खाताधारक की मृत्यु होने पर घर वाले तनाव में आ जाते हैं, यह सोच कर कि बैंक अब परेशान करेगा, पैसा कैसे निकलेगा आदि. अगर उन्हें मृतक के खातों का पता न हो तो घर के लोग मृतक की तिजोरी, अलमारी खंगालते हैं ताकि पासबुक या अन्य कागजात के जरिए मृतक द्वारा बैंकों में रखी धनदौलत की जानकारी ले कर उसे पा सकें. पर अगर मृतक ने पारदर्शिता और स्पष्टता रखी है तो चिंता की कोई बात नहीं.

बैंक के नियम

यदि खातेदार ने बैंक को उस के जमा धन के वारिसाना हक की सूचना नहीं दी हो तो जो भी व्यक्ति अपनेआप को कानूनन मृतक का वारिस सिद्ध कर देगा, मृतक का उस बैंक में रखा माल उस का. बैंक ग्राहक से खाता खोलते समय ही यह पूछता है कि क्या वे नौमिनेशन करवाना



खाताधारक को बैंक की पौलिसी लेते समय बैंक एजेंट के कहेनुसार फौर्म में अपनी पर्सनल डिटेल्स सही तरह से भरनी चाहिए, ताकि मृत्यु के बाद वारिस व परिवार वालों को परेशानी न उठानी पड़े.

चाहेंगे ? यदि हां, तो उस का नाम फौर्म में भर दें.

अन्क्लेम्ड डिपौजिट्स

अगर किसी व्यक्ति ने अपने खातों की जानकारी घर वालों को नहीं दी और पासबुक, चैकबुक आदि भी घर में न रखी हो तो उस का पैसा घर वालों के काम नहीं आ पाएगा क्योंकि वे जानकारी के अभाव में दावा पेश नहीं कर पाएंगे. बैंक ऐसे खातों की सुरक्षा के लिए सजग होते हैं जिन का कोई वारिस सामने नहीं आता क्योंकि ऐसे अप्रचलित खातों में फ्रौड होने की संभावना अधिक होती है.

एक निश्चित अवधि के बाद ऐसे खातों की रकम, जिसे अन्क्लेम्ड डिपौजिट्स भी कहते हैं, को शाखा से निकाल कर बैंक अपने हैड औफिस ट्रांसफर कर देता है. भविष्य में यदि कोई दावेदार सामने आता है तो बैंक उस के कानूनी हक की सारी जानकारी ले कर हैड औफिस से राशि वापस भी मंगवा सकता है.

खातेदार की मृत्य होने पर वारिस क्या करे?

पहली बात, मृतक का मृत्यु प्रमाणपत्र शीघ्रातिशीघ्र बनवा लें और उस की फोटो कौपियां निकाल लें. दूसरी बात, जिनजिन बैंकों में मृतक का किसी भी प्रकार का खाता हो उन सभी को लिखित में सूचित करें ताकि वे जमा धन की सुरक्षा हेतु उचित कदम उठाएं. सूचनापत्र के साथ मृत्यु प्रमाणपत्र की प्रति अवश्य लगाएं.

संयुक्त खातों में भी मृत्यु सूचना देना आवश्यक है ताकि बैंक खातेदार के टाइटल को बदल सके. मृतक के ऋण खातों वाले बैंकों में भी ऐसा ही पत्र देना जरूरी है.

वारिस प्रमाणपत्र

मृतक द्वारा नौमिनेशन न करवाने या संयुक्त खाता न होने की स्थिति में दावेदार को एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज लाना होगा जिसे कहते हैं वारिस

प्रमाणपत्र. इसे वकील की मदद से कोर्ट और्डर के रूप में प्राप्त करना होता है, इसलिए इसे बनाने में वक्त लग सकता है.

एकल और बिना नौमिनेशन वाले खातेदार की मृत्य से पैदा हुई असमंजस की स्थिति में बैंक जानना चाहेगा कि खाते की राशि पर कानूनन वारिसाना हक किस का है.

मृतक का बैंकों में ऋण और बंधक जमीन

यदि मृतक का ऋण खाता है तो भी मृत्यु सूचना बैंक को देनी आवश्यक है ताकि बैंक ऋण दस्तावेजों का दुरुस्तीकरण अथवा नवीनीकरण कर के या तो वारिसों के नाम पर ऋण को चढ़ा दे अथवा तत्काल पूरे ऋण की वसूली के उपाय करे.

अकसर यह देखने में आता है कि मृतक द्वारा लिए गए ऋण की सिक्योरिटी के रूप में घर, प्लौट, बिल्डिंग आदि गिरवी या मोर्टगेज रखी होती है जिस का बंटवारा भी वारिसों में होता है परंतु मालिकाना हक के कागजात वारिस नहीं बनवा पाते क्योंकि मूल रजिस्ट्री के पेपर्स बैंक में बंधक रखे होते हैं. अब अगर इस मूल रजिस्ट्री के कागजात उन्हें वापस चाहिए हों तो बैंक का ऋण खाता बंद करना होगा.

बैंक ऐसी परिस्थिति में वारिस को ऋण अदायगी का पूरा मौका देते हैं और वारिस की आर्थिक स्थिति के अनुसार ऋण अदायगी का समय भी बढ़ा सकते हैं.

इंडेमिनिटी बौंड

वारिसाना हक साबित होने पर बैंक दावेदारों से कुछ फौर्म्स भरवाते हैं. इन में

आवश्यक सावधानियां

जन साधारण को चाहिए कि वह अपने तमाम खातों में निम्न बातें अवश्य सुनिश्चित करे :

- हर खाते में नामांकन जरूर करवाएं और चाहें तो नामित व्यक्ति को इस की सूचना भी दे कर रखें.
- नामित व्यक्ति का पूरा नाम मय वल्दियत लिखें ताकि किसी तरह का असमंजस न रहे.
- अगर संभव हो तो नामित व्यक्ति का भी एक बचत खाता बैंक की उसी शाखा में खुलवा दें.
- एक रजिस्टर या डायरी में विभिन्न बैंकवार खातों का विवरण लिख कर उसे अपडेट करते रहें और इस की जानकारी निकटतम संबंधी अर्थात पति या पत्नी को अवश्य दे कर रखें.
- बैंको के लौकर्स को भी 'आइदर सर्वाइवर' की सुविधा के साथ ही लेना चाहिए.
- लौकर में रखे गए सामान की सूची बना कर इस की जानकारी पति/पत्नी या वारिस को दे कर रखें.
- जमा खाता हमेशा संयुक्त रूप में खोलना बेहद समझदारी का काम होता है.
- इन खातों में बैंक को ये निर्देश दिए हों कि खाते से आहरण 'दोनों में से कोई भी एक या जीवित' मतलब 'आइदर सर्वाइवर' के अनुसार होगा.
- अपने हर खाते को आधार कार्ड से लिंक करवा दें.



खाताधारक की मृत्यु के बाद वारिसाना हक के लिए उस के रिश्तेदार खातों से हिस्सा लेने के लिए बैंक में चक्कर काटने लगते हैं, जिस के चलते कानूनी प्रक्रिया शुरू हो जाती है.

एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज होता है इंडेमिनिटी बौंड. इस बौंड के जरिए दावेदार बैंक को भविष्य में उस खाते से प्राप्त राशि संबंधी किसी भी तरह की दावेदारी या मुकदमेबाजी आदि से मुक्त कर देता है.

मृतक के खाते के धन का वारिसों में बंटवारा

यदि एक से ज्यादा व्यक्तियों की दावेदारी सिद्ध हो जाती है तो बैंक उन सभी से कहता है कि खाते की धनराशि आपस में किस अनुपात में बांटी जाए, इस बाबत बैंक को निर्देश एक संयुक्त पत्र के माध्यम से दें.

इस तरह का कोई निर्देश न मिलने की स्थिति में मृतक के खाते में जमा धनराशि को बैंक कानूनी वारिसों में बराबर बांटने का अधिकार रखता है.

न्यायालय, दावे और बैंक

बैंक न्यायालय के अधीन होते हैं. उक्त प्रक्रिया के बीच यदि कोई व्यक्ति मृतक के खाते पर अपना कानूनन हक जताते हुए कोर्ट का स्टे लाता है तो बैंक उस का पालन करने को बाध्य हैं और कोर्ट का अंतिम निर्णय आने तक बैंक आगे की कार्यवाही रोक देते हैं.

ऐसे बहुत से मामले आते हैं जिन में दूरदराज बैठे वे वारिस जिन्होंने जीतेजी खातेदार की कोई खबर नहीं ली, मृत्यु होते ही खातों से हिस्सा लेने आ धमकते हैं और तब कानूनी दावपेंच चालू हो जाते हैं. कानूनी कार्यवाहियों के पूरा होते ही बैंक मृतक के एकल खाते की रकम मय ब्याज के दावेदार को दे कर खाता बंद कर देता है.

दावेदारी में पेचीदगियां जितनी कम होंगी उतनी ही जल्दी मृतक के खाते का पैसा वारिस को मिल जाएगा. अनहोनी कभी भी हो सकती है पर उस के बाद की स्थिति से निबटने की तैयारी तो हम जीतेजी कर के रख ही सकते हैं. सारी धनदौलत यहीं धरी रह जाती है पर मृत्य से पूर्व उसे सही हाथों में सौंपने की पक्की व्यवस्था करना भी तो एक जिम्मेदारी है. ●

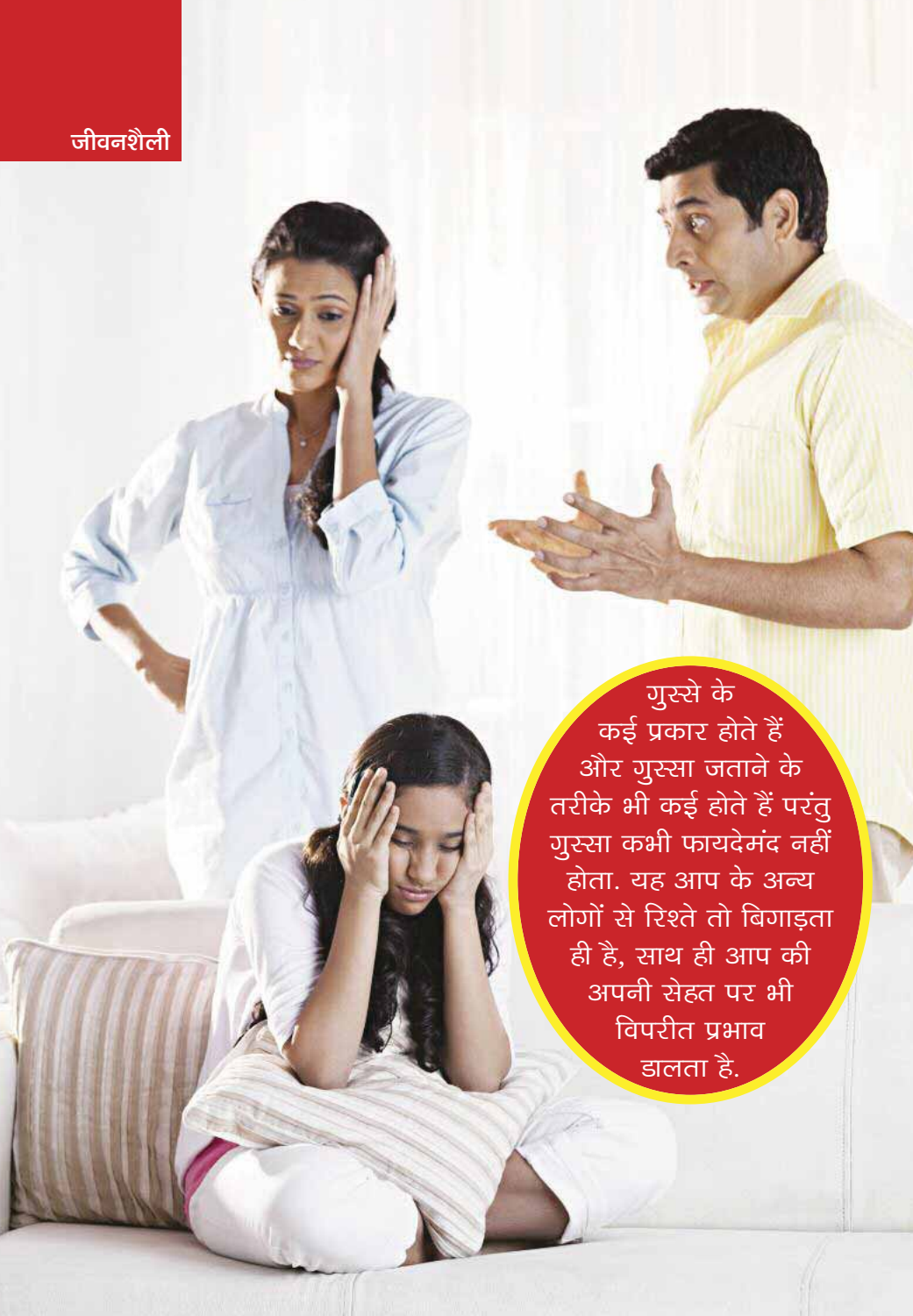

गुस्से के कई प्रकार होते हैं और गुस्सा जताने के तरीके भी कई होते हैं परंतु गुस्सा कभी फायदेमंद नहीं होता. यह आप के अन्य लोगों से रिश्ते तो बिगाड़ता ही है, साथ ही आप की अपनी सेहत पर भी विपरीत प्रभाव डालता है.

काबू में रखें गुस्सा

• डा. अजय जोशी

गुस्सा एक मानसिक स्थिति है और हमारी भावना के प्रकटीकरण का ही एक रूप है. मनुष्य की यह भावना स्वाभाविक है, गुस्सा आ ही जाता है. यह भी माना जाता है कि युवाओं का खून गरम होता है, इसलिए उन को गुस्सा कुछ जल्दी ही आता है. इस का आना गलत भी नहीं है. कई बार गुस्सा आना अच्छा भी होता है, इसे अच्छी सेहत का प्रतीक भी माना जाता है.

यूनिवर्सिटी औफ मिशिगन के मनोचिकित्सक शिनोबु किटायामा का मानना है कि गुस्से को बुरा और बुरे स्वास्थ्य से जोड़ कर देखना आमतौर पर पश्चिमी संस्कृति का हिस्सा है जिस में यह माना जाता है कि गुस्से में मायूसी, निराशा, डिप्रैशन जैसे कारक सम्मिलित होते हैं जो स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं, जबकि उन्होंने अमेरिका व जापान में किए गए अपने शोध अध्ययन के आधार पर बताया कि गुस्सा जैविक स्वास्थ्य के खतरे के स्तर को कम करता है और यह अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है.

यह अध्ययन एक हद तक ठीक है लेकिन बातबात में गुस्सा करना अपना ही खून जलाना है क्योंकि गुस्सा मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न करता है जो शरीर को विभिन्न रूपों में नुकसान पहुंचाता है. व्यक्ति बीमार भी पड़ सकता है, उस का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है जोकि उस के पारिवारिक रिश्तों तथा कैरियर को नुकसान पहुंचाता है. कुछ नाजुक रिश्तों, जैसे प्रेमीप्रेमिका, पतिपत्नी के साथ रिश्तों में गुस्से की संभावना बहुत अधिक होती है. अन्य रिश्तों, जैसे भाईबहन, ननदभाभी, भाईभाई, मातापिता आदि में भी गुस्से की संभावना काफी बनी रहती है. कैरियर में अपने सहकर्मियों के साथ भी गुस्सा बना रह सकता है. अपने बौस के साथ किया गया गुस्से वाला व्यवहार व्यक्ति के कैरियर को बरबाद भी कर सकता है. दोस्तों के बीच गुस्सा अच्छी मित्रता को खराब कर सकता है.



ऐसे करें कंट्रोल

गुस्से से होने वाले शारीरिक, मानसिक

व सामाजिक नुकसान से बचने के लिए गुस्से को काबू में रखा जाना जरूरी है. गुस्सा आने पर उस से निबटने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं.

गुस्से को रोकने का सर्वाधिक प्रचलित तरीका है किसी पर गुस्सा आने पर उसे कुछ बोलने से पहले धीमी आवाज में या मन में 1-10 तक गिनती करना. इस गिनती के बाद व्यक्ति का मन स्थिर हो जाता है. यह गुस्से को कंट्रोल करने में काफी हद तक सहायक माना जाता है.

जिस बात पर गुस्सा आ रहा है उस के संबंध में अपनेआप से तर्क करें. अपनेआप से गुस्से का कारण जानने का



गुस्से का कारण चाहे पारिवारिक झगड़ा, सहकर्मियों या यारदोस्तों में आपसी तकरार हो, उसे जीवनशैली में बदलाव कर के और धैर्य से नियंत्रण में रख सकते हैं.

प्रयास करें. जिस कारण से गुस्सा आ रहा है, उस के दूसरे पहलू पर विचार करें या जिस पर गुस्सा आ रहा है उस की स्थिति में स्वयं को रख कर सोचें. शायद आप का मन इस से शांत हो जाएगा और गुस्सा समाप्त हो जाएगा.

कई बार किसी ऐसे कारण से व्यक्ति को गुस्सा आ रहा होता है जिस का उस से या उस के परिवार से कोई लेनादेना नहीं होता. ऐसे में यह सोच कर गुस्से को शांत करने की कोशिश करें कि जिस के लिए हम गुस्सा कर रहे हैं वह तो हमारे सामने है ही नहीं. जो गुस्से का कारण है उस का हम से कोई संबंध ही नहीं है तो उस के लिए अपनी मानसिक शांति क्यों भंग करना.

अपनी जीवनशैली में बदलाव कर के भी गुस्सा कम किया जा सकता है. ऐसे कार्य जो गैरजरूरी हैं तथा बिना मतलब आप की भागदौड़ को बढ़ा रहे हैं, उन को न करना ही बेहतर रहेगा. अनावश्यक व्यस्तता से बच कर अपने लिए तथा परिवार के लिए समय निकालें. आप के गुस्सा करने के अवसर कम हो जाएंगे.

अनावश्यक बातों को छोड़ें

गुस्सा किन्हीं ऐसे कारणों या व्यवस्था के कारण आ रहा है जिन का सुधार आप के नियंत्रण में नहीं है, उन पर गुस्सा करना फालतू है. यह मान कर चलें कि सारी दुनिया आप की इच्छा के अनुसार नहीं चलती. यह मंत्र ध्यान में रखते हुए अनावश्यक बातों को छोड़ते चलें.

यह भी माना जाता है कि ज्यादा पानी पीने से गुस्सा कम आता है. खाने में तरल पदार्थों का ज्यादा उपयोग, हरी सब्जियों को पर्याप्त मात्रा में भोजन में शामिल करने से भी गुस्सा नियंत्रित होता है.

गुस्से के समय अकसर व्यक्ति आपा खोने की स्थिति में होता है. इन उपायों को अपनाना आसान नहीं होता लेकिन फिर भी ये उपाय अपनाने का प्रयास किया जाए, धैर्य रखा जाए. गुस्से की स्थिति से दूर रहने के लिए निरंतर प्रयास किया जाए तो गुस्से पर काबू पाना मुश्किल नहीं है. सफल और सुखद जीवन के लिए गुस्से को नियंत्रित रखना बहुत जरूरी है. ●

अपनेआप में गुम है

कहां पे जा के रुकेगा,
ऐ गम, बता तो जरा
जमीं पे डाले रहेगा
तू कब तलक डेरा...

महकते फूल न हों,
कांटों पे हम तो चल लेंगे,
खुशी की खूशबू से
कह दो लगाए अब फेरा...

जिसे भी देखिए
वो अपनेआप में गुम है,
कोई पुकार तो गूंजे,
कोई थमे तो जरा...

शब ए गम पूछती रहती है
सहर से अकसर,
समां क्या यों ही रहेगा
ये सिसकियों से भरा?

ये सब परिंदे भी
उन्मुक्त उड़ान भरते हैं
सहम के डाल पर बैठे हैं,
दे रहे पहरा...

ये लंबी रात तो
सोने भी नहीं देती है
सहर बता के रहेगी
चमकने दो तो जरा.

• डा. अंजु लता सिंह



कहानी

सौ वर्ष पूर्व घटी एक सत्य घटना पर आधारित

समझौता जिंदगी और मौत का

• रंजना भारिज



जिंदगी जीने का अपनाअपना नजरिया होता है. चाहे तो रो कर जी लो या इस से समझौता कर के जीने की राह पकड़ लो. निम्मो ने तो समझ लिया था कि वक्त के साथ चलने में ही समझदारी है.

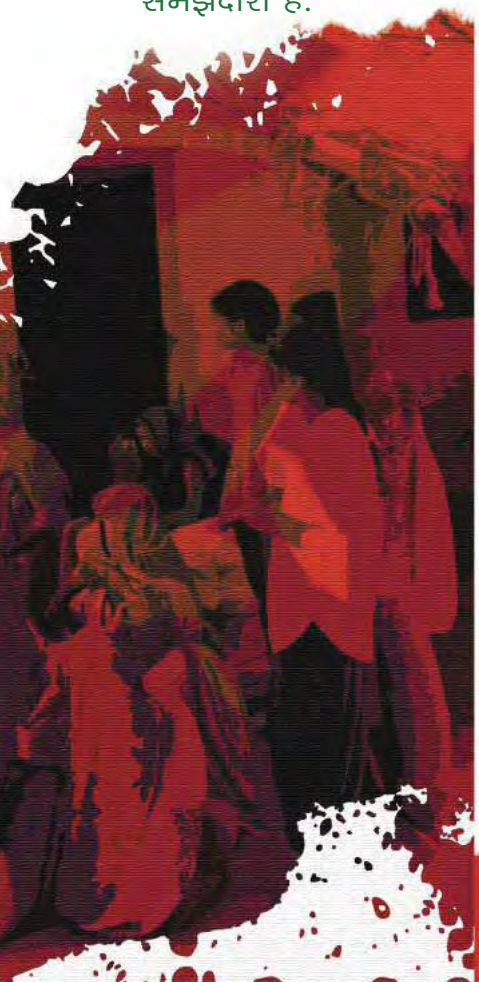

बात वर्ष 1920 की है. कार्तिक का महीना था. गुलाबी सर्दी पड़ने लगी थी. पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बसे छोटे से गांव गिराहू में सभी किसान दोपहर बाद खेतों में थकेहारे लौटे थे. बुवाई का समय निकला जा रहा था, सभी व्यस्त थे. पर सब लोग पंचों की पुकार पर पंचायत के दफ्तर में इकट्ठे हो गए थे. बस, पंचों के आने का बेसब्री से इंतजार हो रहा था.

एक ओर गांव की औरतें होने वाली दुलहन निम्मो को जबरन पंचायत के दफ्तर में ले आई थीं और दूसरी तरफ कुछ आदमी होने वाले दूल्हे रामबिलास का हाथ पकड़ कर बाहर पेड़ के नीचे खड़े थे. वह भी इस शादी के नाम पर हिचकिचा रहा था.

सारे गांव वाले इस शादी के पक्ष में थे. पर वर और वधू दोनों ही इस शादी के लिए तैयार न थे. आखिरकार मामला पंचायत में पहुंचा दिया गया था. पंचायत का फैसला तो सब को मानना ही पड़ेगा.

अंदर के कमरे में बैठी निम्मो शादी के लिए तैयार ही नहीं हो रही थी.

"मुझे यह शादी नहीं करनी है," कहते हुए निम्मो ने एक बार फिर हाथ छुड़ाने का असफल प्रयास किया तो पड़ोस की बुजुर्ग काकी बोली, "चुप कर, मरी. शादी नहीं करेगी तो भरी जवानी में कहां जाएगी?"

सभी उपस्थित औरतों ने काकी की बात से सहमति में सिर हिलाया.

"हां तो और क्या? मरद के सहारे के बगैर भी भला औरत को कोई पूछे है क्या?" दूसरी पड़ोसिन बोली.

"काहे का सहारा देगा मुझे? अपनी सुध तो है नहीं उसे. अरे बच्चा है वह तो?" निम्मो ने खीझ कर पलटवार किया.

काकी ने एक बार फिर ज्ञान बघारा,

"कैसा बच्चा? अरे मरद तो है न घर में? मिट्टी का ही हो, मरद तो मरद ही होता है. और क्या चाहिए औरत को?"

बाहर कुछ सरगर्मी हुई. शायद पंच आ गए थे. पंचायत बैठी तो फैसला सुनाने में 2 मिनट भी न लगे. रामबिलास, अपने भाई हरबिलास की विधवा निम्मो को चूड़ी पहनाएगा और आज से वे मियांबीवी कहलाएंगे. निम्मो ने आवाज उठाने की कोशिश की तो सब ने उसे चुप करा दिया.

उधर सरपंच ने ऊंची आवाज में कहा, "अरे ओ रामबिलास, कहां मर गया रे. चल, जल्दी कर. ये लाल चूड़ियां डाल दे अपनी भाभी के हाथ में. चल आज से यह तेरी जोरू हुई. खयाल रखना इस का और इस के लड़के का. वह भी आज से तेरा लड़का ही हुआ."

"चलो अच्छा ही है. बिना शादी किए ही लड़का मिल गया," किसी ने पीछे से चुटकी ली. पंचायत के दोटूक फैसले से सहमा सा रामबिलास जब चूड़ियां ले कर निम्मो के पास पहुंचा तो निम्मो ने अपने हाथ पीछे खींच लिए. पर गांव की औरतें कहां मानने वाली थीं? साथ बैठी औरतों ने उस के हाथ जबरन पकड़े और रामबिलास से उन में लाल कांच की चूड़ियां डलवा दीं. कहीं से कोई एक चुटकी सिंदूर भी ले आई और रामबिलास से निम्मो की मांग में डलवा दिया. निम्मो की नम आंखों को किसी ने नहीं देखा या शायद देखा तो अनदेखा कर दिया. पास बैठी औरतों में से एक ढोलक उठा लाई और सब ने शादी के गीत गाने शुरू कर दिए. और इस तरह रामबिलास की शादी अपने बड़े भाई हरबिलास की विधवा निम्मो से हो गई.

इसी तरह बन्नेबन्ने गातेगाते रात हो गई और गांव की औरतें निम्मो को उस की कोठरी में धकेल कर बाहर निकल गईं. पड़ोस की काकी ने बाहर से आवाज दी, "अरी निम्मो, तेरा बेटा हरिया आज हमारे घर में रहेगा. फिक्र न करना."

निम्मो का दिमाग तो बिलकुल सुन्न हो गया था. उसे समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे. कुछ देर सोचती रही, फिर थक कर बिस्तर पर बैठी ही थी कि कोई रामबिलास को भी कमरे में धकेल गया और बाहर से कुंडी लगा दी. सहमासकुचाया सा रामबिलास कोठरी में आ कर 2 मिनट तो खड़ा रहा. फिर जैसे ही लालटेन की बत्ती बुझाने बढ़ा, निम्मो ने खिन्न मन से कहा, "देवरजी, यह बत्तीवत्ती बाद में बुझाना. यह दरी ले लो और उधर जमीन पर सो जाओ."

रामबिलास ने चुपके से दरी उठाई और कोठरी के एक कोने में बिछा ली. वह सुबह से परेशान था और थका हुआ था. थोड़ी ही देर में उस के खर्राटों की आवाज कोठरी में गूंजने लगी. पर निम्मो की आंखों में नींद कहां थी. यह वही कोठरी थी जहां उस के पति की मृत्यु हुई थी. वही चारपाई थी और वही लालटेन थी.

उस के पति को मरे अभी एक साल भी नहीं गुजरा था और देवर से चूड़ी पहनवा कर जबरन उस की शादी करवा दी गई थी. ये पंच भी कैसे पत्थर दिल हैं. इन के दिल में भावनाएं नहीं हैं क्या? क्या कोई अपनों को इतनी जल्दी भुला देता है? क्या पतिपत्नी का रिश्ता सिर्फ जिस्मानी रिश्ता है? निम्मो का दिमाग पूरी तरह अशांत था. उस के दिमाग में पिछले सालभर की घटनाएं फिल्म की तरह घूम रही थीं.

करीब एक साल पहले की ही तो बात

थी. पूस का महीना था. कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी. हवा के थपेड़े तो इतने तेज कि मानो झोंपड़ी पर पड़े छप्पर को ही उड़ा कर ले जाएंगे. टूटी हुई खिड़की पर ठंडी हवा को रोकने के लिए लगाया हुआ गत्ता हिलहिल कर मानो हवा को अंदर आने का बुलावा दे रहा था. कोठरी के अंदर दीवार के कोने पर लटकी हुई लालटेन की लौ लगातार भभक रही थी. शायद उस में तेल शीघ्र ही समाप्त होने वाला था.

कोने में एक टूटी सी चारपाई पर हरबिलास लेटा हुआ था. उस का बदन तीव्र ज्वर से तप रहा था. पुरानी मैली सी रजाई में उंकड़ू हो कर किसी तरह वह अपनी ठंड मिटाने का असफल प्रयास कर रहा था. पर उस के शरीर की कंपकंपाहट थी कि खत्म होने को नहीं आ रही थी. पास ही एक पीढ़े पर वह बैठी थी. 3 वर्ष का हरिया उस की गोद में सो रहा था. चिंता के मारे उस का सुंदर चेहरा स्याह पड़ गया था. पति के माथे पर ठंडे पानी की पट्टी रखरख कर उस के हाथ भी ठंड से सफेद हो गए थे. पर बुखार था कि उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था. पति के होंठ कुछ बुदबुदाए तो उस ने आगे झुक कर सुनने की कोशिश की.

'रामबिलास कहां है?' वह पूछ रहा था.

'उसे भी तेज बुखार है. वह दूसरी कोठरी में लेटा है,' उस ने धीरे से जवाब दिया था.

'निम्मो, कितने लोग और चल बसे?' हरबिलास की आवाज कमजोरी और डर के मारे और भी मंद हो गई थी.

'आप फिकर नहीं करोजी, कोई नहीं

इन्हें आजमाइए

✓ ऐक्सरसाइज करें, व्यायाम करें या रनिंग करें, कुछ भी करें लेकिन कम से कम एक घंटे की कुछ न कुछ ऐक्टिविटी जरूर करें. यह आप के स्वास्थ्य व शरीर को फिट रखने के लिए बेहद जरूरी है.

✓ फिटकरी में एंटी बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं, यह इन्फैक्शन, अशुद्धि, बदबू, चोट, सूजन और भी बहुत सारी बीमारियों के लिए फायदेमंद है. अगर सैनिटाइजर उपलब्ध नहीं है तो फिटकरी इस्तेमाल करें.

✓ गृहिणियां यह न सोचें कि वे घरबैठे कुछ नहीं कर सकतीं. पढ़ीलिखी हैं, तो फ्रीलांसिंग वर्क, जैसे लेखन, कोडिंग, व्याकरण, विभिन्न भाषा, सौफ्टवेयर डैवलपिंग, ट्रांसलेटिंग, आईटी और नैटवर्किंग आदि क्षेत्रों में हाथ आजमाइए.

✓ बौडी ही नहीं, मन का भी डिटौक्सिफिकेशन जरूरी है. एकांत इस प्रक्रिया के लिए जरूरी है जो मन को सेहतमंद और नई ऊर्जा जुटाने का काम करता है.

✓ आप को खुश रहते हुए जिंदगी के मजे लेने चाहिए. यह डिपैंड करता है आप के ऊपर कि आप खुश रहना चाहते हो या फिर दुखी.

✓ स्किन पर अगर कीलमुंहासों की समस्या हो तो एवोकाडो का औयल और उस का फेसपैक बहुत फायदेमंद होता है.

गया है. सब ठीक हो रहे हैं,' उस ने अपने स्वर को संभाल कर झूठ बोला था.

'मुझे नहीं लगता मैं ठीक हो पाऊंगा. यह महामारी तो कितने प्राण ले चुकी है. लगता है इस का कोई इलाज भी नहीं है,' उस ने फिर कहा था.

'नहींनहीं, रामू काका कह रहे थे कल सरकारी अस्पताल का डाक्टर गांव में आएगा,' उस ने पति को उम्मीद दिलाने की कोशिश की थी.

'अरे डाक्टर ही क्या कर लेगा. इस प्लेग का तो कहते हैं कोई इलाज ही नहीं है. मैं ने सुना था बड़ेबड़े अंगरेज भी मर गए हैं इस से. फिर हम गरीबों का क्या?'

पास रखी अंगीठी की आंच तेजी से कम होती जा रही थी और लाल अंगारों पर राख की मोटी परतें जमने लगी थीं. क्या यह मात्र संयोग था या फिर आने वाले काल का संकेत? तभी पास के मकान से हृदयविदारक विलाप की चीखें सुनाई पड़ीं.

'लगता है बाबूलाल भी गया. मुझे लगता है अब मेरी बारी है,' हरबिलास की आवाज कांप रही थी.

'शुभशुभ बोलो. तुम कहीं नहीं जाओगे मुझे और हरिया को छोड़ कर,' उस ने प्यारभरी झिड़की दी थी.

'ना निम्मो. लगता है मेरा टाइम आ गया है. हरिया और रमिया का खयाल...' कहतेकहते उस की सांसें उखड़ने लगी थीं.

घर्र...घर्र...घर्र... और फिर उस का सिर एक ओर लुढ़क गया था.

उस को कुछ समझ नहीं आया था. वह पथराई आंखों से कुछ क्षण उसे देखती रही. फिर जोर से आवाज दी. 'रमिया, जल्दी आ. देख तो तेरे भाई को क्या हो गया,' कहते हुए उस ने हरिया को गोद से धक्का दिया और अपने पति की छाती को झकझोरने लगी थी.

'क्या हुआ भैया को?' कहते हुए जब रामबिलास कोठरी में घुसा तो उस का चेहरा भी तेज बुखार से तप रहा था और आंखें गुड़हल के फूल की तरह लाल थीं. एक मिनट तो उस ने भाई की नब्ज देखने की कोशिश की पर वह यह सदमा न सह पाया और बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा था.

यह घटना वर्ष 1919 की थी. सारे देश में प्लेग की महामारी फैली हुई थी. गिराहू गांव भी इस से अछूता न था. मौत का तांडव हर रोज 8-10 लोगों की बलि ले रहा था. बस, एक यही घर बचा हुआ था जिस में भी आज मौत के पांव पड़ गए थे. घर का इकलौता कमाऊ आदमी आज मौत के घाट उतर गया था.

रामबिलास को होश आ गया था और अब वह जमीन पर बैठा हुआ, रीती आंखों से फर्श की ओर घूर रहा था. 8 साल की उम्र में मांबाप दोनों भगवान को प्यारे हो गए थे. तब से आज तक बड़े भैया ने ही उसे बच्चे की तरह संभाला था. पिछले 13 साल कैसे निकल गए, उसे पता ही नहीं चला था. बड़े भैया ने उसे हर तकलीफ से दूर रखा था. उन के बगैर पता नहीं वह जिंदगी कैसे जिएगा?

वह थोड़ी देर तो गुमसुम बैठी देखती रही, फिर दहाड़ें मार कर रोने लगी थी. उसे पता भी न चला कि रामबिलास कोठरी से कब बाहर निकल गया. कुछ देर बाद जब भोलेभाले हरिया ने उस का हाथ खींचना शुरू किया तो उसे होश आया. आसपास देखा तो रामबिलास कहीं न दिखा. उस ने मन पक्का किया और देवर को देखने बाहर निकली. उस का कहीं

नामोनिशान नहीं था. कहां चला गया? अभीअभी तो यहीं था. घनी काली रात थी और बर्फीली हवाएं अभी भी चल रही थीं. कहां जाए, किस को बुलाए? पास के घर में तो अभी कुछ मिनट पहले ही बाबूलाल की मौत हो चुकी थी. वहां से रोने की आवाजें अभी भी आ रही थीं. हरिया को कमर पर उठाए वह दरवाजे पर खड़ी ही थी कि अचानक चंदन काका दिख गए जो शायद बाबूलाल के घर जा रहे थे.

'काका,' उस ने सिर पर पल्लू लिया और सिसकना शुरू कर दिया.

'क्या हुआ हरबिलास की बहू?' चंदन काका की आवाज में चिंता थी.

'हरिया के बापू भी चले गए,' किसी तरह उस के मुंह से निकला था. उस की सिसकियां किसी तरह भी रुक नहीं रही थीं.

अरे बिटिया रमिया कहां है?

पता नहीं काका. अभी तो यहीं था.

रामबिलास कहीं न दिखा तो चंदन काका पड़ोस से कुछ और लोगों को ले आए थे और उस के पति के शव को चारपाई से उतार कर जमीन पर रख दिया था. गांव के कुछ बड़े आ कर वहां बैठ गए थे. वे लोग मरने वालों की गिनती कर रहे थे. इस रफ्तार से तो पूरा गांव ही खत्म हो जाएगा. निम्मो उन की बातें सुन रही थी. वह तो बस सूनी आंखों से जमीन को देख रही थी. यह व्यक्ति, जो अभी तक उस का पति था, एक क्षण में लाश कहलाने लगा था. सुबह होते न होते उसे जला भी दिया जाएगा. यह कैसी रीत है? यह कैसी दुनिया है? निम्मो और उस का 3 साल का बच्चा हरिया, उन का क्या होगा? पर रमिया? रमिया कहां है? वह तो अपने बड़े भैया के बिना रह भी नहीं सकता. उसे इतना बुखार भी है, पर वह है कहां? सोचसोच कर उस का दिमाग सुन्न होने लगा था.

सुबह हुई और उस के पति का अंतिम संस्कार हो गया. साथ ही, उसी रात प्लेग की चपेट में आए 4 और लोगों का भी. 'औरतें श्मशान घाट नहीं जाती हैं' यह कह कर चंदन काका बस अपने साथ 3 वर्ष के हरिया को ले गए थे. उस ने आपत्ति की तो चंदन काका ने कहा था, 'बाप के मुंह में अग्नि कौन देगा? यही तो देगा न.'

'लगता है किसी मरने वाले की क्रिया या तेरहवीं भी नहीं हो पाएगी. पंडितजी खुद

हरिया को साथ ले रामबिलास खेत की ओर चल पड़ा और निम्मो काफी देर तक दोनों को जाते हुए देखती रही.



भी प्लेग की चपेट में आ गए हैं,' श्मशान घाट से लौटने पर उन्होंने कहा था.

रामबिलास का कुछ पता ही नहीं चल रहा था. हफ्तेभर तक गांव वाले उसे ढूंढ़ढूंढ़ कर हार गए थे. कहां चला गया? कोई शेर, चीता उसे खा गया या कोई भूतप्रेत उसे उठा कर ले गया था?

15 दिन कैसे कटे, यह तो अकेली निम्मो ही जानती थी. कितनी अकेली हो गई थी वह. 2 हफ्ते बाद का वह दिन क्या वह भूल पाएगी. शाम का झुटपुटा हो चला था और घर में अंधेरा होता जा रहा था. कितने दिनों से घर में चूल्हा नहीं जला था. वह हरिया को गोद में सुलाने की कोशिश कर रही थी. अचानक पड़ोस का लड़का गूल्हा रामबिलास को हाथ से पकड़े घर में घुसा, 'लो भाभी, रमिया भैया आ गए.'

रामबिलास खड़ाखड़ा सिर झुकाए फर्श को घूर रहा था.

उसे देख वह अपने गुस्से पर काबू नहीं कर पाई थी और इतने दिन की सारी भड़ास उस पर निकाल दी थी, 'अरे कहां मर गया था रे तू? मैं अकेली यहां परेशान हो रही हूं. तुझे किसी की कोई फिकरविकर है कि नहीं? सारी जिंदगी निकम्मा ही रहेगा?'

कहतेकहते उस के आंसू बह निकले थे. शायद इतने दिनों का रुका बांध टूट गया था.

गूल्हा पहले तो अकबका कर कुछ क्षण उसे देखता रहा था, फिर बोला था, 'अरे



भाभी, इस बेचारे को न डांट. यह तो पागल हो गया है. और तो और, इस की तो जबान भी गई. पहले ही गऊ था, पर अब तो...'

सुन कर वह सकते में आ गई थी. अपना रोनाधोना छोड़ कर बोली, 'हाय, इस का बुखार उतरा कि नहीं?'

भाग कर उस ने उस के मत्थे पर हाथ रखा और बोली, 'चल बुखार तो ठीक हो गया. खानावाना खाया कि नहीं? तेरा स्वेटर कहां गया रे? जा बिस्तर पर लेट जा. मैं तेरे लिए चाय लाती हूं.'

पिछले 4 वर्षों से उस ने छोटे देवर को अपने बच्चे की तरह संभाला था. वही ममता आज फिर उमड़ आई थी.

चाय बना कर लौटी तो देखा हरिया चाचा की गोद में बैठा हुआ था. रामबिलास के आंसू बह रहे थे और हरिया उन्हें पोंछ रहा था.

अगले 6 महीनों में प्लेग की महामारी कुछ थम गई थी और जिंदगी फिर से पुराने ढर्रे पर लौटने सी लगी थी. पर रामबिलास को न अपनी सुध थी और न ही वह बोल पा रहा था. बस, जब हरिया उस के पास होता उस के चेहरे पर हलकी सी खुशी दिखती थी. जैसेजैसे परिस्थितियां सामान्य होने लगीं, निम्मो उसे ले कर इलाज कराने चली. बेचारी कहांकहां नहीं गई थी और किसकिस वैद्य, हकीम और ओझाओं के चक्कर नहीं काटे थे. तब कहीं जा कर रामबिलास की जबान वापस आई थी. पर

दिल्ली प्रैस

आफर क्रमांक	पत्रिका	प्रतियों की संख्या	अंक	अवधि	प्रति मूल्य	वार्षिक मूल्य	सब्सक्रिप्शन आफर (रजिस्टर्ड डाक)	चिह्नित करें
1.	गृहशोभा	1	पाक्षिक	1 वर्ष	45.00	1080.00	950.00	☐
2.	सरिता	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	999.00	☐

यह फार्म अपने चैक/डी.डी. के साथ भेजे

नाम: ..... जन्मतिथि: DD MM YY

पता: .....

..... पिन:

मोबाइल न.: फोन नं.: ई-मेल:

चैक / डी.डी. नं.: तिथि:

DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड: अमेक्स वीसा मास्टर कार्ड अंतिम तिथि: MM YY

जारी करने वाले बैंक का नाम: ..... हस्ताक्षर ..... तिथि

नियम व शर्तें : कृपया इस फार्म को चेक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें-
DELHI PRAKASHAN VITRAN PVT. LTD. ई-8, झन्डेवालान एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली – 110055 चेक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए कृपया 4-5 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आपको रजिस्टर डाक के द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधिन है. अधिक जानकारी के लिए दिल्ली प्रैस के सब्सक्रिप्शन विभाग से संपर्क करें: फोन-टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 फोन नंबर 41398888 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 से शाम 6:00 तक) ईमेल : subscription@delhipress.in, आप औनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी सब्सक्राइब कर सकते हैं.

एक उदासी सी उस के चेहरे पर हमेशा के लिए बस गई थी जो जाने का नाम ही नहीं लेती थी. भाई की कमी उसे हर वक्त खलती थी. हर वक्त हंसनेहंसाने वाला रमिया अब गंभीर रामबिलास बन गया था. उस को पति के रूप में स्वीकारना तो किसी भी हालत में संभव नहीं होगा. पर पंचायत के इकतरफा फैसले के बाद और चारा भी क्या है?

यों ही सोचतेसोचते कब निम्मो की आंख लग गई और कब सुबह हो गई, उस को पता ही नहीं चला. आंख खुली तो दिन चढ़ आया था. खिड़की से सूरज की किरणें अंदर झांक रही थीं. दरवाजा खुला हुआ था और रामबिलास कमरे में नहीं था.

निम्मो धीरे से उठ कर बाहर आई तो देखा पड़ोसिन हरिया को वापस छोड़ गई थी. आंगन में रामबिलास दातुन कर रहा था. साथ ही, एक छोटी सी दातुन उस ने हरिया को भी बना कर दे दी थी.



दोनों मिल कर हंस रहे थे. दातुन हो गई थी. अब रामबिलास हरिया को कुल्ला करना सिखा रहा था. निम्मो खड़ीखड़ी दोनों को देखती रही. दोनों एकदूसरे के साथ कितने खुश लग रहे थे. दातुन कर के रामबिलास खड़ा हुआ तो हरिया मचल उठा, "काका गोदी... काका गोदी..."

उस की आवाज सुन कर निम्मो का ध्यान टूटा तो देखा हरिया अपने चाचा की पीठ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था. रामबिलास ने दातुन खत्म की और हरिया को गोद में उठा लिया.

"उठ गई भाभी? अच्छा रोटी दे दे. खेत पर जा रहा हूं. बुवाई का समय निकलता जा रहा है, अभी खेती भी शुरू करनी है न. और हां, हरिया की रोटी भी बना देना. इसे भी साथ ले जा रहा हूं."

"हां, बस 5 मिनट में देती हूं," और निम्मो जल्दी से आटा गूंधने लगी.

नाश्ता कर के रामबिलास हरिया को अपने कंधे पर बैठा कर खेत की ओर चल पड़ा और निम्मो दरवाजे पर खड़ी काफी देर तक दोनों को जाते हुए देखती रही. लगता था रामबिलास को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास होने लगा था. कितनी आसानी से उस ने घर का जिम्मा संभाल लिया था. अपने मृतक भाई की सारी जिम्मेदारियां, उस की खेती, उस का बच्चा, उस की बीवी, सभी कुछ मानो आज उस की जिम्मेदारी बन गए थे. शायद जिंदगी को यही मंजूर था.

समय किसी के लिए नहीं रुकता और जीवन से समझौता करने में ही शायद सब की भलाई है. निम्मो को महसूस हुआ कि जिंदगी और मौत के बीच जिंदगी ही ज्यादा बलवान है. दोनों के बीच अब शायद एक समझौता हो गया था. ●



मेरे पापा

मेरी सहेली रत्ना का विवाह विदिशा के एक इंजीनियर से हुआ था. शायद वह कहीं विदेश में पोस्टेड था. रत्ना के विवाह के कुछ दिनों बाद मेरा भी विवाह उसी वर्ष हुआ.

हम दोनों अपनेअपने परिवारों में मस्त हो गए. इस दौरान हमारी आपस में कोई बातचीत भी न हुई. अभी कोई चारपांच महीने पूर्व मैं विदिशा किसी शादी में गई थी. ऐसे ही बाजार में खरीदारी करते हुए अचानक रत्ना मिल गई. हम दोनों ने एकदूसरे को पहचानने में कोई गलती नहीं की.

रत्ना के साथ एक बेहद सुदर्शन, आकर्षक व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था. साथ ही, एक वृद्ध भी थे. मैं ने नौजवान की तरफ देख कर पूछा, "ये कौन हैं ?"

"हां, ये मेरे पति अनूप हैं. यहीं यूनिवर्सिटी में प्रोफैसर हैं."

"परंतु तुम्हारे पति तो... इंजीनियर थे ? शायद कनाडा में थे ?"

"हां, कहानी लंबी है पर तुझे मैं संक्षेप में बता दूं.

"मेरे पति से मेरा विवाह अभी 4 महीने पूर्व हुआ है. पूर्व पति तो पहले ही विवाहित थे. उन्होंने हम से ही क्या, सब से झूठ बोला था. इस सारी कहानी में सिर्फ मेरे पापाजी (ससुर) ने साथ दिया. सभी रिश्तेदार, मायके वाले सब मेरे खिलाफ थे पर पापाजी ने कहा, 'बेटा यह घर तेरा है. मैं तेरे साथ हूं. तेरे साथ अन्याय हुआ है. और वह अन्याय करने वाला मेरा बेटा है. मैं उसे कभी माफ नहीं करूंगा.' और वे पापाजी... ये हैं."

पास खड़े व्यक्ति की ओर उस ने संकेत किया. मैं उस व्यक्ति को देख रही थी. जो ससुर नहीं, पिता बन कर एक स्त्री के साथ था.

"मेरी सास तो घर छोड़ कर मेरे देवर के पास चली गई थीं, ननदों ने भी मुंह मोड़ लिया था. ऐसे वक्त पर पापाजी ने मुझे अपनी पैंशन और घर के किराए से एमए, पीएचडी कराई और फिर अनूप से मेरा विवाह कराया. आज हम तीनों साथ रहते हैं."

रत्ना ने बड़ी श्रद्धा से अपने पिता को देखा. मैं ने मन ही मन कहा, 'पापाजी, तुसी ग्रेट हो.'

मृदुला नरुला (श्रेष्ठ) ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

अपना अनुभव ***नाम*** *व* ***पते सहित*** *आप नीचे लिखे नंबर पर* ***एसएमएस*** *या* ***व्हाट्सऐप*** *के जरिए* ***मैसेज/ औडियो*** *भी कर सकते हैं.*

08527666772

कहानी

दीवारें

• पिंकी खुराना

सास के आगे जबान नहीं खुलती थी मेरी और जब खुद सास हूं तो बहू के आगे जबान नहीं चलती. मन की इच्छाएं पहले भी दबी थीं और आज भी जैसे दबी की दबी ही रह गई हैं.

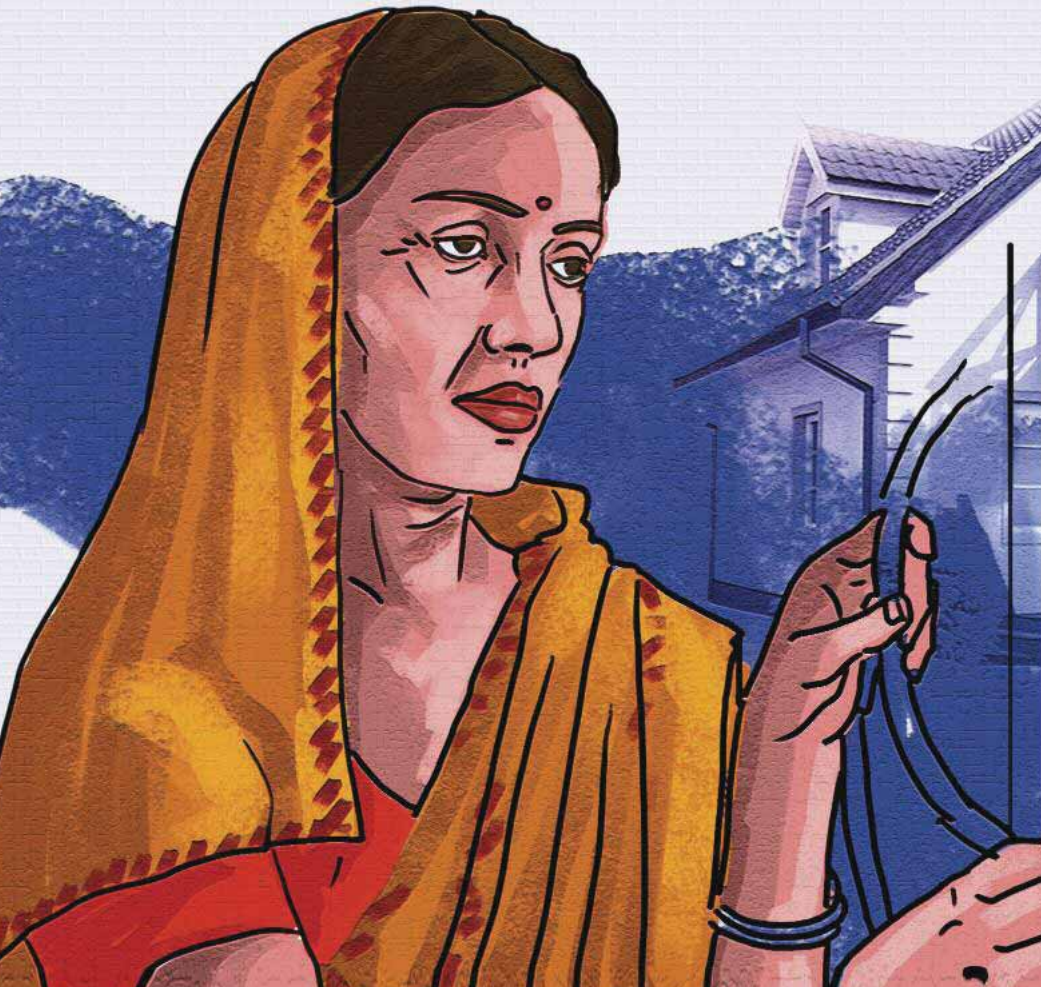

आज ये दीवारें मुझे इतनी अपनी क्यों लग रही हैं. 30 वर्षों की गृहस्थी में मैं ने इन दीवारों को कभी भी अपना नहीं समझा. लेकिन, अब महसूस हो रहा है कि इन दीवारों से ज्यादा अपना तो कोई है ही नहीं.

30 वर्षों पहले इस घर में ब्याह कर आई थी, तो इन दीवारों को अपनी सास के घर की दीवारें मान ली थीं. उस के बाद कितनी कोशिश की थी मैं ने इन दीवारों को अपना बनाने की, पर कभी भी इतना अपनापन मेरे मन में नहीं जागा था.



आते ही सास ने फरमान सुना दिया था, 'बहू, मेरे घर में ऐसा होता है,' वैसा होता है. कोई भी बात होती तो वह यही कहती थीं, 'यह मेरा घर है, इस में ऐसा ही होगा और अगर किसी को मेरी बात नहीं माननी तो वह मेरा घर छोड़ सकता है.'

लेकिन आज दोपहर को सोते वक्त ऐसा लग रहा था जैसे ये दीवारें मुझ से कह रही हैं, 'देखा तनु, हमें ठुकरा दिया पर हम तेरा साथ कभी भी नहीं छोड़ेंगे, हम आज भी तेरी हैं, सब तुझे धोखा दे देंगे पर हम तुझे कभी भी धोखा नहीं देंगी.'

आजकल क्या दीवारों से आवाजें आनी शुरू हो गई हैं, क्यों मैं दीवारों से बातें सुनती हूं, ऐसी तो कुछ भी अनहोनी नहीं हुई है मेरे जीवन में. हर मां के जीवन में ऐसा वक्त आता ही है, फिर मैं इतना अकेलापन क्यों महसूस कर रही हूं. पहले भी तो इतनी अकेली ही थी, फिर आज यह अकेलापन इतना ज्यादा क्यों खलने लगा है.

पड़ोस वाली आंटी कहने लगी हैं, 'अच्छा किया बेटा, फ्री हो गई है. बच्चों का ब्याह कर दिया. अब आराम कर, घूमफिर, अपने शौक पूरे कर.' पर कौन से शौक, कौन सा घूमनाफिरना, कौन सा आराम, सबकुछ तो मन से होता है और बहुत ज्यादा पैसों से. मन अगर स्वस्थ न हो तो कुछ भी नहीं होता है और अगर जेब में पैसा न हो तो कुछ हो ही नहीं सकता.

यह ठीक है कि जीवन आराम से बीत रहा है, पर इतना तो कभी भी नहीं हुआ कि रोजरोज घूमने जाऊं.

कोई कहता है कि अब भगवान का नाम लो, कीर्तनों में जाओ, कथाएं सुनो. पर जीवनभर मेरा घर ही मेरा मंदिर, काशी, काबा सब रहा है, तो अब 50 बरस की उम्र में यह नया शौक कहां से पालूं.

काम करने की सोची, तो लोगों ने यह कह कर काम नहीं दिया कि आप की उम्र के लोगों को अब आराम करना चाहिए. क्या 50 साल की उम्र में मैं बूढ़ी हो गई हूं. और अब सिर्फ भगवान, जो है भी कि नहीं, का ही सहारा लूं या फिर चुपचाप बैठ कर बेकार के भजनकीर्तन ही सुनूं?

बेटी का फोन आया, 'मां, आप कोई एनजीओ जौइन कर लो. आप का मन लग जाएगा और समाजेसवा करने से संतुष्टि भी मिलेगी.' लेकिन एक मध्यवर्गीय गृहस्थन क्या जाने यह समाजसेवा क्या होती है, जिस ने सारी उम्र अपने घर से बाहर कदम न रखा हो, वह क्या समाजसेवा करेगी.

बेटे का फोन आया, '4 घंटे का सफर है, मम्मी. जब आप को जरूरत होगी, आ जाऊंगा.' पर जब बहुत ज्यादा बीमार पड़ी थी. तब भी बेटे का फोन ही आया, 'मम्मी, आ तो जाऊं पर छुट्टी नहीं मिल रही है.'

'नहीं बेटा, मत आओ, मैं कर लूंगी और तुम्हारे पापा तो हैं ही न,' भरे मन से कहना पड़ा था.

उस वक्त भी तो सिर्फ ये दीवारें मुझ से कह रही थीं कि कोई बात नहीं, हम हैं न तेरा खयाल रखने के लिए, तू आराम कर, हम तेरा खयाल रखेंगी, हम हैं न तेरे साथ, जब तू थक कर सो जाएगी तो हम तेरा पहरा देंगी.

सारा जीवन मैं इन दीवारों से इतने अपनेपन का एहसास नहीं कर सकी. सारा जीवन सोचती रही कि कब इन दीवारों से पीछा छूटेगा और कब अपनी नई दीवारें बनेंगी.

यह तो बहुत ही छोटा सा घर है. चलो, पति ने नया घर नहीं बनवा कर दिया, उन की आमदनी इतनी नहीं थी कि एक नया घर ले लें. बहनभाइयों की जिम्मेदारी उठाते रहे. फिर अपने बच्चों की. इतना समय और पैसा ही नहीं बचा था कि अपना नया घर बनवा लेते.

बेटे की बहुत अच्छी नौकरी लगी थी.

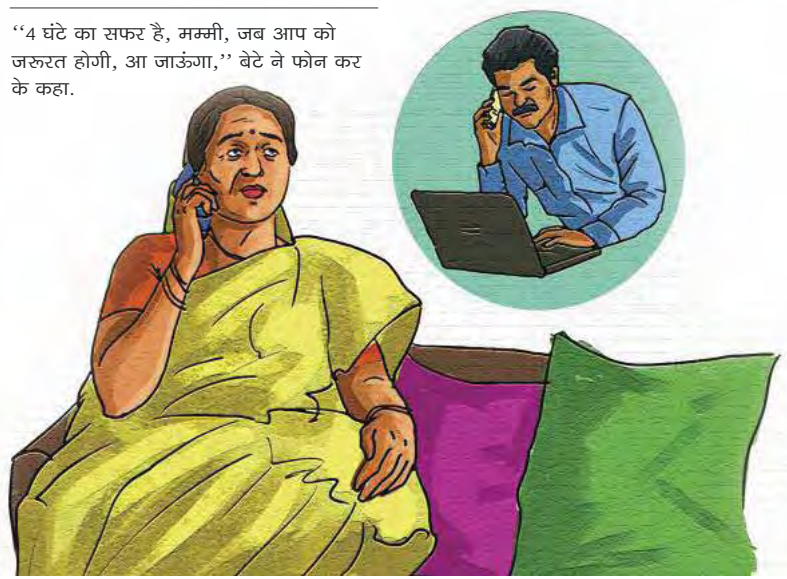

''4 घंटे का सफर है, मम्मी, जब आप को जरूरत होगी, आ जाऊंगा,'' बेटे ने फोन कर के कहा.

मन में एक उम्मीद जगी थी कि अब तो नया घर बनवा ही लेंगे, कुछ जमापूंजी हम लगाएंगे और कुछ बेटे से लेंगे और मैं स्वयं की खड़ी हुई दीवारों में जाऊंगी.

पर अपने शहर से दूर अच्छी नौकरी लगते ही बेटे के ऊपर मक्खियों की तरह लड़कियां भिनभिनाने लगी थीं. आखिर, एक लड़की के प्यार में मेरा बेटा फंस ही गया और आननफानन शादी का फैसला भी हो गया.

हमारी पीढ़ी की सासों की यही विडंबना है कि अपनी सासों से भी सारी उम्र डरती रहीं और अब पढ़ीलिखी सास होने के कारण बहुओं को कह कुछ नहीं पातीं. शायद मैं ने बेटे से कुछ ज्यादा ही उम्मीदें लगाई थीं. तभी हमेशा उस पर विश्वास कर के अपने घर का सपना देखती रही थी.

'बहुत अच्छी लड़की है, फिर घराना भी अच्छा है,' पति ने समझाया. 'मम्मी, अभी तो भाई को लड़की पसंद है, फिर बाद में ढूंढ़नी पड़ेगी,' बेटी ने समझाया.

'हां ये ठीक ही तो कह रहे हैं. कुछ अनहोनी तो नहीं हो रही है. सब बेटों की शादी होती है. तो फिर, मैं इतनी परेशान क्यों हूं.'

बड़े लाड़ से बहू को घर में ब्याह कर लाई थी. लेकिन आते ही बहू ने न सिर्फ बेटे को हथिया लिया था बल्कि सारे गहने भी अपने कब्जे में कर लिए थे. मैं अपनी खामोशी की आदत के कारण कुछ बोल ही नहीं पाई थी.

'मम्मीजी, यह तो बहुत ही सुंदर हार है. मैं इसे ले लूं अपनी सहेली की शादी में डालूंगी.'

एक बार भी तो न नहीं कर पाई थी. मन में खीझती रहती थी. पर ऊपर से कुछ नहीं कह पाती थी.

धीरेधीरे बहू प्यार से काफी गहने ले गई थी. पति भी उसी का साथ देते थे, 'उसी के लिए तो बनवाया है. फिर उसे देने में क्या हर्ज है.' कैसे बताती कि सारी उम्र मैं ने कभी अपनी सास से यह तक नहीं पूछा था कि मम्मीजी, मेरे गहने कहां रखे हैं. और आज मैं अपनी बहू से यह नहीं कह पा रही हूं कि बेटे, ये गहने मेरे पास ही रहने दो.

हमारी पीढ़ी की सासों की यही विडंबना है कि अपनी सासों से भी सारी उम्र डरती रही और अब पढ़ीलिखी सास होने के कारण बहुओं को कुछ कह नहीं पातीं. शायद मैं ने बेटे से कुछ ज्यादा ही उम्मीदें लगाई थीं. तभी हमेशा उस पर विश्वास कर के अपने घर का सपना देखती रही थी.

आखिरकार, वह मुबारक दिन आ ही गया था. लेकिन जमीन की रजिस्ट्री होने लगी, तो बेटे ने कहा, 'मम्मी रजिस्ट्री तो सुनंदा के नाम से करवाते हैं, लोन लेने में आसानी होगी. वह नौकरी करती है न.'

'लेकिन, पैसा तो पापा का भी लग रहा है,' सोच ही सकी पर मुंह से बोल नहीं पाई, क्योंकि उस से पहले ही पति बोल पड़े, 'कोई बात नहीं. किसी के नाम भी करवाओ. घर तो बन ही रहा है न. वैसे भी, हमारा जो है वो इसी का तो है.'

'मेरा मन चीखने लगा, मेरी दीवारें कहां हैं?'

सालों तक इंतजार करने के बाद भी मेरे हाथ कुछ नहीं आया, दीवारें तक नहीं. घर बन कर तैयार हो गया था. मैं स्वार्थी नहीं थी और न ही अपने बेटे के बारे में कुछ

बुरा सोच सकती थी. पर इस मन का क्या करती जो बरसों से एक ही आस मन में लगाए बैठा था कि मेरी भी अपनी दीवारें होंगी और उन दीवारों को मैं अपने हिसाब से सजा सकूंगी. लेकिन बेटे के लिए मन की सारी कुंठाएं मिटा कर उस का घर बनने का इंतजार करती रही.

मुझे वह दिन याद आ रहा था जब मैं ने इस घर में बदलाव लाना चाहा था. तब मेरी सास ने साफ इनकार कर दिया. 'इस घर में कुछ भी बदलाव नहीं होगा, यह मेरा घर है और इस में वही होगा जो मैं चाहूंगी.' उन की वह रोबीली आवाज आज तक मेरे कानों में गूंज जाती है और उन के मरने के इतने सालों बाद भी मैं इस घर में कुछ भी नहीं बदल सकी.

कुछ दिनों पहले सोफे बदलने चाहे थे तो पति ने मना कर दिया, 'अरे, अब इस पुराने घर में पैसा लगाने का क्या फायदा. नया घर बनवाएंगे, तो फिर सोफे भी बनवा लेना.'



मन फिर से उलझ गया, ठीक ही तो है, पुराने घर में पुराने सोफे ही तो चलेंगे. नए घर में नए सोफे की बात करनी चाहिए.' ठीक है, पर यह नया घर कब बनेगा और मुझे नई दीवारें कब मिलेंगी. अब तो जीवन की संध्या आ गई है.

बेटे का घर बन कर तैयार हो गया था. बेटे का इसलिए क्योंकि इस घर में कुछ पैसों के अलावा मेरी पसंद का कुछ भी नहीं था. सबकुछ बेटे और बहू ही पसंद कर के लाते थे. मैं मां थी, अपने ही बच्चे से ईर्ष्याभाव कैसे रख सकती थी. पर इस मन का क्या करूं जो सदा से कुछ अपनी दीवारें चाहता था.

गृहप्रवेश का समय तय हो गया था. 'मम्मा, आप जल्दी आना. आप को ही पहले घर में प्रवेश करना है,' बेटे का मान करना अच्छा लगा था. पर गाड़ी लेट हो गई थी. घर में सुनंदा की मां प्रवेश कर चुकी थी.

'आप देर से आईं, तो किसी बुजुर्ग को घर में प्रवेश करना था, सो, मोहित जिद कर के मुझे पहले ले आया था,' उस की बात मुझे कांटे की तरह चुभी थी. पता नहीं वह व्यंग्य कर रही थी या शायद ऐसे ही कहा था पर मेरा मन ऐसा रोया कि पूरे समय मैं व्याकुल ही रही थी.

'कैसा लगा घर, मम्मी,' रात को मोहित पूछ रहा था. एक कमरा मेरा भी बनाया गया था, उसे ही देख कर खुश हो रही थी.

'बहुत अच्छा बना है, बेटा,' मैं खुश हो कर बोली थी.

'यह घर आप का है, आप ही इस घर की मालकिन हैं, यह कमरा आप का है. जब आप आएंगी तो इस में रहेंगी.' मैं खुश हो गई थी. अभी भी बेटे और बहू को मेरी

परवा है, ऐसे ही गलत सोच रही हूं मैं, कभी नाखून भी मांस से जुदा होते हैं.'

'क्या सोच रही हो, मम्मी, आप का जब तक मन करेगा, यहीं रहें न,' बेटे ने फिर से कहा.

उदास हो गई थी मैं. क्या यह कहना जरूरी था. हां बेटा, ये दीवारें तू ने बड़ी मेहनत से खड़ी की हैं और अब इन दीवारों पर मेरा हक कहां, 'नहीं बेटा, ज्यादा नहीं रह पाऊंगी, तुम्हारे पापा तो चले जाएंगे और फिर उन्हें अकेला भी तो छोड़ा नहीं जा सकता.' कनखियों से देखा बहू और बेटे के चेहरे पर सुकून की रेखा नजर आई.

सच ही तो है, जितना भी चुप रहो, पास बैठ कर कुछ तो मुंह से निकल ही आता है, 'सुनंदा, हाथ धो कर रसोई में जाया करो.' सुनंदा ऐसे मुंह बनाती जैसे मुझ पर एहसान कर रही हो. मन मायूस हो जाता.

'सुनंदा रात को कपड़े बाहर से उठा लिया करो इतनी मेहनत से धुलते हैं और रात को ओस से गीले हो जाते हैं,' फिर बोल पड़ी थी.

'जी मम्मी' पर लगता है यह बात भी उसे पसंद नहीं आई थी. तभी तो सुबह तक कपड़े बाहर ही पड़े थे. फिर मन कह उठा, चुप रहा कर ज्यादा मत बोला कर. ऐसे ही कई छोटीछोटी बातें थीं. जिन्होंने मन को छलनी कर दिया था.

हफ्ताभर भी न रह पाई थी बच्चों के पास. शायद, मैं ज्यादा ही दखलंदाजी करने लगी थी. पर मेरी सास भी तो करती थी और मेरी हिम्मत नहीं होती थी उन्हें कुछ कहने की और उन की बात तो जैसे मेरे लिए पत्थर की लकीर होती थी. अगर कभी कुछ मना करने की सोचो भी, तो पति से डांट अलग पड़ती थी. पर वो ही



भाषा

अगर आप एक आदमी से उस भाषा में बात करते हैं जिसे वह समझता है, तो वह उस के दिमाग में जाती है, वहीं, अगर आप उस की अपनी भाषा में बात करते हैं तो वह उस के दिल में उतरती है. — ***नेलसन मंडेला***

सरिता

पति अपनी बहू के लिए कैसी अलग सोच रखने लगे हैं.

शायद जमाना बदल गया है. पर मेरे लिए क्यों नहीं बदला. शायद, मैं ही नहीं बदल पाई हूं या फिर मैं ने सब से कुछ ज्यादा ही उम्मीदें लगा रखी हैं या फिर पता नहीं क्यों. लेकिन कुछ तो है जो मुझे तकलीफ देता है और मैं उस तकलीफ से बाहर आना भी नहीं चाहती.

हफ्ते बाद ही मेरे जाने का समय आ गया था.

'मम्मी, जा कर फोन कर देना,' बेटे ने चिंता व्यक्त की.

'हां जरूर, अपना खयाल रखना.' अब मैं वापस अपनी दीवारों के पास जा रही थी. ●



काश

• गरिमा पंकज

कभीकभी ऐसा क्यों होता है कि खुशियों के दिन छोटे हो जाते हैं और दुख अपने पैर पसार लेता है. कुसुम की जिंदगी में भी पतझड़ आया लेकिन वह इस आस में थी कि बहारें कभी तो आएंगी.

"नहीं, पापाजी नहीं, आप ने गलत चाल चली है. यह तो चीटिंग है. गुलाम घोड़े की चाल नहीं चल सकता," मैं जोरजोर से चिल्ला रही थी. जबकि, पापाजी अपनी चाल पर अड़े हुए थे.

वे मुसकराते हुए बोले, "तो क्या हो गया बेटा, चाल तो चाल है, घोड़ा चले या गुलाम."

दूर खड़े प्रवीण अंकल पास आते हुए बोले, "सही बात है, अनुराग. अब लाड़ली को हराना है तो कुछ हथकंडे तो अपनाने ही होंगे, वरना वह कहां जीतने देगी आप को? आप दोनों झगड़ते खूब हो, पर जानता हूं मैं, आप प्यार भी उसे बहुत करते हो."

"क्या करूं प्रवीण, एक यही तो है जो बिलकुल मेरे जैसी है. मुझे समझती भी है और मेरे साथ मस्ती भी कर लेती है. वरना, आज के बच्चों के पास बुजुर्गों के लिए समय ही कहां है."

"यह लीजिए पापाजी, शह. बचाइए अपना राजा," मैं खुशी से तालियां बजाती हुई बोली. फिर सहसा खयाल आया कि पापाजी और प्रवीण अंकल को चाय देने का समय हो गया है.

"पापाजी, चाय बना लाती हूं," मैं उठती हुई बोली तो पापाजी प्रवीण अंकल से फिर मेरी तारीफ करने लगे.

वाकई, मैं और पापाजी बिलकुल एक से हैं. हमारी पसंदनापसंद हमारी सोच या कहिए पूरा व्यक्तित्व ही एकसा है. पापाजी मुझे बहुत प्यार करते हैं. मैं जहां उन के साथ मस्ती करती हूं, तरहतरह के गेम्स खेलती हूं तो वहीं गंभीर विषयों पर चर्चा भी करती हूं. वे मुझे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं, मेरी केयर करते हैं.

वैसे, बता दूं, हमारा कोई खून का रिश्ता नहीं और न ही उन्होंने मुझे गोद लिया है. अब आप सोच रहे होंगे कि वे मेरे पापा कैसे हुए? दरअसल, 'पापाजी' मैं अपने ससुर को कहती हूं. वे भी मुझे बेटी से कम नहीं समझते. बहू और ससुर का हमारा रिश्ता बापबेटी के रिश्ते सा मधुर और खूबसूरत है.

मैं जब इस घर में ब्याह कर आई थी तो असमंजस में थी कि इस नए घर में ऐडजस्ट कैसे कर पाऊंगी? तब जेठजेठानी ऊपर के फ्लोर पर रहते थे और देवर व सासससुर हमारे साथ थे. जेठजेठानी कुछ माह बाद ही दूसरे शहर में शिफ्ट हो गए थे.

सासुमां का स्वभाव थोड़ा अलग था. वे अपने रिश्तेदारों, महल्ले वालों, पूजापाठ वगैरह में ही लगी रहतीं. पति और बच्चों के लिए वक्त नहीं था उन के पास. देवर पढ़ाई और दोस्तों में व्यस्त रहते तो मेरे पति यानी कुणाल औफिस के कामों में ओवरबिजी थे. मेरे पति स्वभाव से अपनी मां की तरह ही रूखे थे. रह गए मैं और पापाजी. पापाजी रिटायर हो चुके थे. सासुमां के विपरीत पूजापाठ और पोंगापंथी में उन का जरा सा भी विश्वास

नहीं था. वे अपना समय पढ़नेलिखने और हलकेफुलके मनोरंजन करने में बिताते.

मैं तब बीए पास थी. पापाजी ने मुझे प्रेरित किया कि मैं प्राइवेट एमए की परीक्षा दूं. घर में इस बात को ले कर काफी हंगामा हुआ. सासुमां ने भुनभुनाते हुए कहा था, 'क्या करेगी पढ़ाई कर के? आखिर, घर ही तो संभालना है.'

मेरे पति ने भी टोका था, 'कुसुम, तू ग्रेजुएट है. यही काफी है मेरे लिए. बेकार झंझट क्यों पाल रही है?'

मगर पापाजी मुझे पढ़ा कर आगे बढ़ाने को कृतसंकल्प थे. वे मानते थे कि ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं जाता. उन के प्रयत्नों से मैं ने एमए पास कर लिया. इस बीच, मैं ने बेबी कंसीव कर लिया था. घर में खुशियां उमड़ पड़ीं. सब खुश थे. उन दिनों सास भी मेरी खास देखभाल करने लगी थीं.

मगर ऐनवक्त पर मेरा छोटा ऐक्सिडैंट हुआ और मिसकैरिज हो गया. इस घटना के बाद कुणाल मुझ से कटेकटे से रहने लगे. मेरी सास ने भी मुझे ही दोषी ठहराया. मगर पापाजी ने मुझे संभाला, "बेटा, इस तरह की घटनाएं कभी भी हो सकती हैं. इस की वजह से स्वयं को टूटने नहीं देना. रास्ते फिर निकलेंगे. वक्त जैसी परिस्थितियां सामने लाता है, उसी

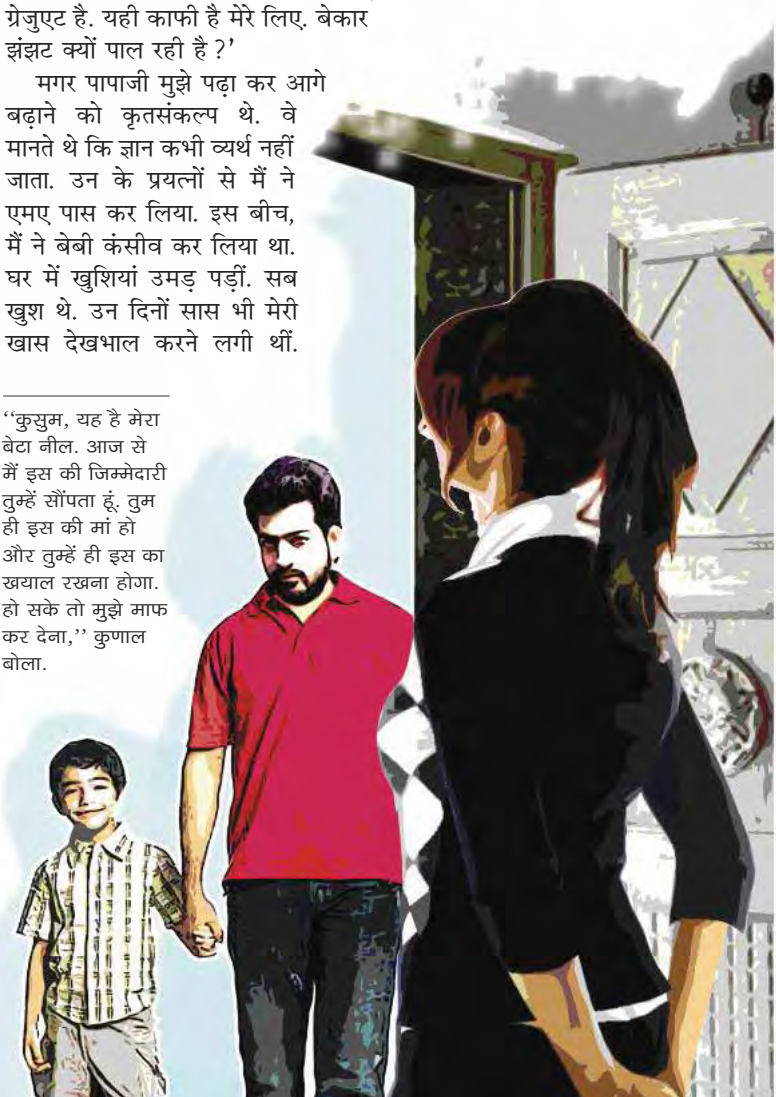

"कुसुम, यह है मेरा बेटा नील. आज से मैं इस की जिम्मेदारी तुम्हें सौंपता हूं. तुम ही इस की मां हो और तुम्हें ही इस का खयाल रखना होगा. हो सके तो मुझे माफ कर देना," कुणाल बोला.

के हिसाब से सब मैनेज करना होता है. तुम केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान रखो. बाकी चीजें स्वयं सुधर जाएंगी."

मुझे पापाजी के शब्दों से ताकत मिलती. पापाजी को मेरे प्रति असीम स्नेह की एक वजह यह भी थी कि उन की कोई बहन नहीं थी. वे 4 भाई थे. उन की कोई बेटी भी नहीं हुई. 2 बेटे ही थे. शायद यही वजह थी कि वे मुझ में अपनी बेटी देखते थे. एक वजह यह भी थी कि कुछ समय पहले जब वे बीमार पड़े तो मैं ने जीजान से उन की देखभाल की थी. तब से वे मेरे लिए कुछ भी करने को तैयार रहते. उन्होंने मुझे पीएचडी करने की सलाह दी तो मैं सोच में पड़ गई. उन्होंने आश्वासन दिया कि वे मेरी हर संभव सहायता करेंगे. वे स्वयं इंटर कालेज में लैक्चरर हो कर रिटायर हुए थे. निश्चिंत हो कर मैं ने फौर्म भर दिया.

समय यों ही गुजरता जा रहा था. देवर को बेंगलुरु में नौकरी मिल गई. वह वहां चला गया. सासुमां अपनी कीर्तनमंडली में और भी ज्यादा व्यस्त रहने लगीं जबकि मेरा ज्यादा समय पापाजी के साथ बीतता. इधर, मेरा रूटीन चेंज होने लगा था. सुबहसुबह मैं पापाजी के साथ जौगिंग के लिए जाती. दिन में उन की मदद से प्रोजैक्ट का काम करती और शाम को हम कभी बैडमिंटन, कभी चैस तो कभी ताश खेलते.

हम दोनों का प्रिय खेल शतरंज, प्रिय पेय ग्रीन टी, प्रिय भोजन कढ़ीचावल, प्रिय टाइमपास किताबें, प्रिय म्यूजिक गायक मुकेश के गाने थे. कुछ वे मौडर्न सोच वाले थे और कुछ मैं 'ओल्ड इज गोल्ड' में विश्वास रखने वाली. इसलिए हमारी खूब बन रही थी.

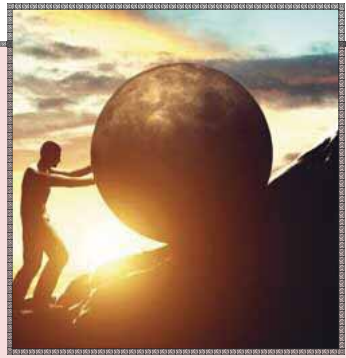

मेहनत

हर मिनट की शोहरत के पीछे 8 घंटे की कड़ी मेहनत होती है.

– जेसिका सैविच

सरिता

सासुमां भले ही हर मामले में पारंपरिक सोच रखती थीं पर परदा प्रथा पर ऐतबार नहीं था उन का. मुझे घर में किसी से परदा नहीं कराया जाता. कभीकभी जींस पहन लेने पर भी किसी को कोई आपत्ति नहीं थी. सबकुछ अच्छा चल रहा था. पर मुझे कभीकभी लगता कि सासुमां और कुणाल के बीच कोई खिचड़ी पक रही है.

मैं दोबारा कंसीव नहीं कर पा रही थी. इस बात को ले कर वे दोनों उखड़ेउखड़े रहते. सासुमां अकसर मुझे इस के लिए बातें सुनातीं. उन की जिद पर मेरी मैडिकल जांच हुई. रिपोर्ट आई तो मेरी जिंदगी में हलचल मच गई. मैं कभी मां नहीं बन सकती थी.

इस खबर ने सब को गम के सागर में डुबो दिया. मैं स्वयं अंदर से टूट रही थी पर मुझे संभालने के बजाय उलटा कुणाल

मेरा बातबेबात पर अपमान करने लगा. पापाजी इस बात पर कुणाल से नाराज रहने लगे. पर सासुमां कुणाल का ही पक्ष लेतीं.

इस बीच, कुणाल ने यह खबर दे कर सब को अचंभित कर दिया कि उसे कंपनी की तरफ से 2 सालों के लिए बेंगलुरु भेजा जा रहा है. मैं कुछ कहती, इस से पहले ही वह फैसला सुनाता हुआ बोला, "कुसुम, तुम मेरे साथ नहीं चल रहीं. मैं अकेला ही जाऊंगा. तुम मम्मीपापा की देखभाल करो."

मैं चुप रह गई. वैसे भी कुणाल के दिल में अब मुझे अपने लिए खास जगह नहीं दिखती थी. कुणाल चला गया. मैं अपनी पीएचडी पूरी करने में व्यस्त हो गई. महीनों बीत गए. कुणाल का फोन गाहेबगाहे ही आता और बहुत संक्षेप में हालसमाचार पूछ कर रख देता. मैं फोन करती तो कहता कि अभी व्यस्त हूं या रास्ते में हूं वगैरह.

एक दिन मेरी बेंगलुरु की एक सहेली ने फोन किया और बताया कि कुणाल आजकल एक लड़की के साथ बहुत घूमफिर रहा है. पापाजी ने सुना तो तुरंत फोन उठा कर उसे डांट लगाई पर कुणाल और भी भड़क गया.

उधर, सासुमां भी बेटे का पक्ष ले कर भुनभुनाती रहीं. उस रात मैं ने पहली बार देखा कि पापाजी रातभर जागते रहे हैं.

मैं और पापाजी बिलकुल अकेले रह गए. मैं ने पीएचडी पूरी कर ली और पापाजी की प्रेरणा से एक कालेज में लैक्चरर बन गई. इधर, कुणाल से हमारा संपर्क न के बराबर था. कभी होलीदीवाली वह फोन करता, तो पापाजी औपचारिक बातें कर के फोन रख देते.

बारबार दरवाजा खोल कर आंगन में टहलने लगते या किचन में जा कर कभी कौफी बनाते तो कभी पानी ले कर आते. मैं खुद भी जागी हुई थी और मेरे कमरे तक ये सारी आवाजें आती रहीं.

सुबह उठ कर उन्होंने जो फैसला सुनाया वह हतप्रभ करने वाला था. पापाजी सासुमां से कह रहे थे, "आशा, मैं अपना यह घर बहू के नाम कर रहा हूं. मेरे और तुम्हारे बाद इस पर कुणाल का नहीं, बल्कि बहू का अधिकार होगा."

"यह क्या कह रहे हो? कुणाल हमारा बेटा है," सासुमां ने प्रतिरोध किया पर पापाजी अपनी बात पर अड़े रहे.

मैं ने तुरंत आगे बढ़ कर उन से ऐसा करने को मना किया, मगर पापाजी नहीं माने. वकील बुला कर सारी कागजी कार्यवाही पूरी कर ली. मैं समझ रही थी कि पापाजी आने वाले तूफान से लड़ने के लिए मुझे मजबूत बना रहे हैं. सचमुच 2-3 माह बाद ही कुणाल ने मुझे तलाक के कागजात भेज दिए.

पहले तो मैं कुणाल के आगे रोईगिड़गिड़ाई, पर फिर पापाजी के कहने पर मैं ने सहमति से तलाक दे दिया.

जल्द ही खबर आ गई कि कुणाल ने दूसरी शादी कर ली है. पापाजी ने कुणाल से सारे संबंध काट लिए थे. जबकि, मैं बापबेटे को फिर से मिलाना चाहती थी. पापाजी इस बात के लिए कतई तैयार न थे. वे मुझे अपनी बेटी मानते थे. इस बात पर सासुमां ने कई दिनों तक बखेड़े किए. वे बीमार भी रहने लगी थीं. मैं समझ नहीं

पाती कि क्या करूं? मेरे घर में मां, 2 बहनें और एक छोटा भाई है. घरवालों ने मुझे पापाजी के हिसाब से चलने की सलाह दी थी. उन्हें पापाजी का नजरिया बहुत पसंद था. वैसे भी, तलाकशुदा बन कर वापस मायके में रहना मेरे लिए आसान नहीं था. ऐसे में पापाजी की बात मान कर मैं इसी घर में रहती रही. सासुमां अब ज्यादा ही बीमार रहने लगी थीं. एक दिन तेज बुखार में उन्होंने सदा के लिए आंखें बंद कर लीं. अब तक देवर की भी शादी हो चुकी थी. वह बेंगलुरु में ही सैटल हो चुका था.

मैं और पापाजी बिलकुल अकेले रह गए. मैं ने पीएचडी पूरी कर ली और पापाजी की प्रेरणा से एक कालेज में लैक्चरर भी बन गई. इधर, कुणाल से हमारा संपर्क न के बराबर था. कभी होलीदीवाली वह फोन करता तो पापाजी औपचारिक बातें कर के फोन रख देते.

वक्त इसी तरह गुजरता रहा. कुणाल पापाजी से इस बात पर नाराज था कि उन्होंने अपनी संपत्ति मेरे नाम कर दी थी और मेरी वजह से उस से नाता तोड़ दिया. उधर, पापाजी कुणाल से इस वजह से नाराज थे कि उन की बात न मानते हुए कुणाल ने मुझे तलाक दे कर दूसरी शादी की.

एक दिन शाम के समय कुणाल का फोन आया. पापाजी ने फोन मुझे थमा दिया. कुणाल भड़क उठा और मुझे जलीकटी सुनाने लगा. पापाजी ने फोन स्पीकर पर कर दिया था. हद तो तब हुई जब उत्तेजित कुणाल मेरे और पापाजी के

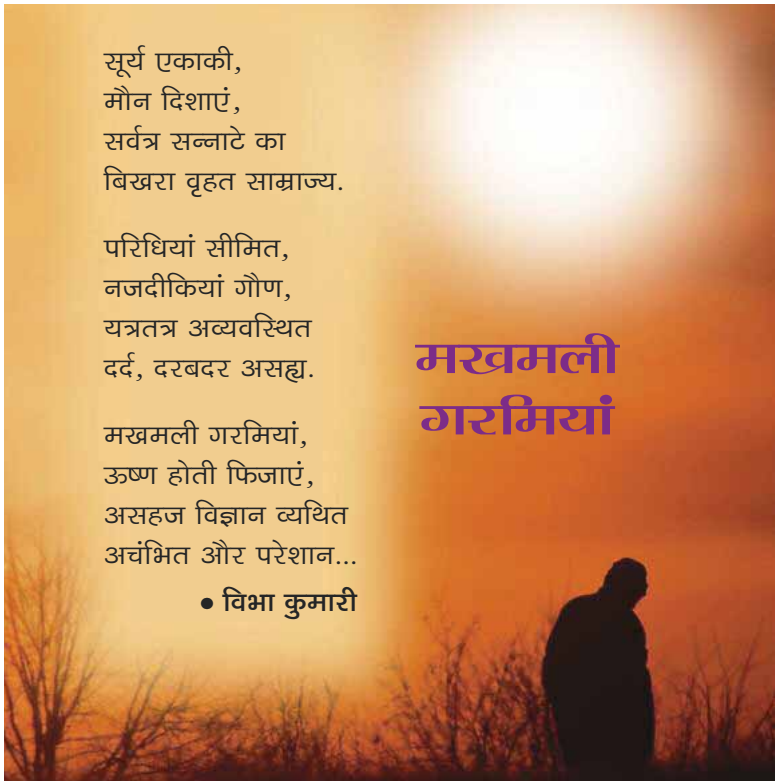

सूर्य एकाकी,
मौन दिशाएं,
सर्वत्र सन्नाटे का
बिखरा वृहत साम्राज्य.

परिधियां सीमित,
नजदीकियां गौण,
यत्रतत्र अव्यवस्थित
दर्द, दरबदर असह्य.

मखमली गरमियां,
ऊष्ण होती फिजाएं,
असहज विज्ञान व्यथित
अचंभित और परेशान...

• **विभा कुमारी**

संबंधों पर कीचड़ उछालने लगा. कुणाल कह रहा था, 'मैं समझ रहा हूं, पापाजी ने मुझे घर से बेदखल कर तुम्हें क्यों रखा हुआ है. तुम दोनों के बीच क्या चक्कर चल रहा है, इन सब की खबर है मुझे. ससुर के साथ ऐसा रिश्ता रखते हुए शर्म नहीं आई तुम्हें?'

वह अपना आपा खो चुका था. पापाजी के कानों में उस की ये बातें पहुंच रही थीं. उन्होंने मोबाइल बंद करते हुए उसे उठा कर फेंक दिया. मैं भी इस अप्रत्याशित इलजाम से सदमे में थी और मेरी आंखों से आंसू बहने लगे. पापाजी ने मुझे सीने से लगाते हुए कहा, "बेटा, जमाना जो कहे, जितना भी कीचड़ उछाले, मैं ने तुझे अपनी बेटी माना है और अंतिम समय तक एक बाप का दायित्व निभाऊंगा."

अगले ही दिन से उन्होंने मुझे वास्तव में दत्तक पुत्री बनाने की कागजी कार्यवाही शुरू कर दी. रिश्ते को कानूनी मान्यता मिलने के बाद उन्होंने फाइनल डौक्यूमैंट्स की एक कौपी कुणाल को भी भेज दी.

अब मैं भी निश्चिंत हो कर पूरे अधिकार के साथ अपने पिता के साथ रहने लगी. इधर, घर का ऊपरी हिस्सा पापाजी ने पेइंगगैस्ट के तौर पर 4 लड़कियों को दे दिया. उन लड़कियों के साथ मेरा मन लगा रहता और मेरे पीछे वे लड़कियां पापाजी की सहायता करतीं.

वक्त का चक्का अपनी गति से चलता रहा. मैं ने अपनी जिंदगी से समझौता कर लिया था. पर शायद कुणाल की जिंदगी के इम्तिहान अभी बाकी थे. कुणाल की बीवी की एक ऐक्सिडैंट में मौत हो गई. उस के 5 साल के बच्चे की देखभाल करने वाला कोई नहीं रहा. ऐसे में कुणाल को मेरी और पापाजी की याद आई. उस ने मुझे फोन किया, "प्लीज कुसुम, तुम्हीं इस बिन मां के बच्चे को संभाल सकती हो. मैं तो पूरे दिन बाहर रहता हूं. रात में लौटने का भी कोई टाइम नहीं है. श्रुति के घरवालों में भी कोई ऐसा नहीं जो इस की देखभाल करने को तैयार हो. अब मेरा बच्चा तुम्हारे आसरे ही है. इसे मां का प्यार दे दो. तुम्हें ही पापाजी से भी बात करनी होगी."

मैं ने उसे ऊपरी तौर पर तो हां कह दिया पर अंदर से जानती थी कि पापाजी कभी तैयार नहीं होंगे. मेरे अंदर की औरत उस बच्चे को स्वीकारने को व्यग्र थी. सो, मैं ने पापाजी से इस संदर्भ में बात की. वे भड़क उठे, "नहीं, यह मुमकिन नहीं. उसे अपने किए की सजा पाने दो."

"मैं मानती हूं पापाजी कि कुणाल ने हमारे साथ गलत किया. उस ने आप का दिल दुखाया है. पर पापाजी उस नन्हे से बच्चे का क्या कुसूर? उसे किस बात की सजा मिले?"

पापाजी के पास मेरी इस बात का कोई जवाब नहीं था. मैं ने भीगी पलकों से आगे कहा, "पापाजी, मुझे जिंदगी ने बच्चा नहीं दिया है. पर क्या कुणाल के इस बच्चे को अस्वीकार कर मैं आने वाली खुशियों के दरवाजे पर ताला नहीं लगा रही?"

"ठीक है बेटी," पापाजी का गंभीर स्वर उभरा, "तुम उस बच्चे को रखना चाहती हो तो रख लो. जिंदगी तेरी गोद में खुशियां डालना चाहती है तो मैं कतई नहीं रोकूंगा, वैसे भी, वह मेरा पोता है. उस का हक है इस घर पर. मगर याद रखना कुणाल ने मुझ पर और मेरे घर पर अपना हक खो दिया है."

मैं ने यह बात कुणाल से कही तो वह

खामोश हो गया. मैं समझ रही थी कि किसी भी बाप के लिए अपना बच्चा किसी और को सौंप देना आसान नहीं होता. कुणाल ऐसे मोड़ पर था जहां वह अपना पिता तो खो ही चुका था, अब बच्चे को भी पूर्व पत्नी के हाथ सौंप कर क्या वह बिलकुल अकेला नहीं हो जाएगा?

मैं कुणाल की मनोदशा समझ रही थी. 2-3 दिन बीत गए. फोन कर कुणाल से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई. उस दिन इतवार था. मैं घर पर थी और पापाजी के लिए दलिया बना रही थी. पापाजी कमरे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे. अचानक दरवाजे की घंटी बजी.

दरवाजा खोला तो चौंक पड़ी. सामने कुणाल खड़ा था, 5 साल के प्यारे से बच्चे के साथ.

"कुसुम, यह है मेरा बेटा नील. आज से मैं इस की जिम्मेदारी तुम्हें सौंपता हूं. तुम ही इस की मां हो और तुम्हें ही इस का खयाल रखना होगा. हो सके तो मुझे माफ कर देना. पापाजी से कहना कि कुणाल माफी के लायक तो नहीं, फिर भी मांग रहा था," यह कहते हुए उस ने नील का हाथ मेरे हाथों में थमाया और तेजी से बाहर निकल गया.

मैं नील को लिए अंदर पहुंची तो पापाजी को सामने खड़ा पाया. वे भीगी पलकों से एकटक नील की तरफ ही देख रहे थे. उन्होंने बढ़ कर नील को गले लगा लिया.

मैं सोच रही थी, काश, पापाजी के इन आंसुओं के साथ कुणाल के प्रति उन की नाराजगी भी धुल जाए और काश, नील बापबेटे के बीच सेतु का काम करे. काश, हमारी बिखरी खुशियां फिर से हमें मिल जाएं. ●

सरिता

के स्तंभों के बारे में सूचना

सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पूरा पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. सरिता में ये स्तंभ प्रकाशित किए जाते हैं :

बच्चों के मुख से
जीवन की मुसकान
हमारी बेड़ियां
ये पति
ये पत्नियां
सफर अनजाना
पाठकों की समस्याएं
ऐसा भी होता है

एक से अधिक स्तंभों की सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर भेजी जा सकती है.

भेजी गई सामग्री मौलिक और कम से कम शब्दों में होनी चाहिए. किसी भी पत्रपत्रिका से चुराई हुई या सुनीसुनाई नहीं होनी चाहिए. हर संस्मरण के साथ स्पष्ट शब्दों में अलग कागज पर मौलिकता का निम्न प्रमाणपत्र भी अवश्य भेजें कि मेरी रचना मौलिक है, इसे कहीं से लिया नहीं गया है.

अपने संस्मरण इस पते पर भेजें :

सरिता, दिल्ली प्रैस भवन,
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

आप 08527666772 नंबर पर एसएमएस या व्हाट्सऐप भी कर सकते हैं या article.hindi@delhipress.in पर पीडीएफ फाइल बना कर ईमेल कर सकते हैं.

ख़ानदानी सांत्वनाछाप मरहमखाना

• अशोक गौतम



सांत्वना कोई जज्बा नहीं बल्कि कारोबार है जिसे खास किस्म के लोग ही कर सकते हैं. आज हर किसी को सांत्वना की जरूरत है, इस का मरहम कितना उपयोगी है और कैसे रामबाण है, जान लें.

वे खानदानी सांत्वनाछाप मरहम वाले हैं. जब से जनता को शासन की सांत्वनाछाप मरहम की जरूरत लगी होगी, वे तब से ही सांत्वनाछाप मरहम बनाने का हुनर पाले हैं.

साहब के आगे झुकझुक कर पीड़ित रीढ़ की हड्डी के दर्द पर लगाने को मरहम लेने कल जब मैं उन के खानदानी मरहमखाने पर गया तो उन्होंने बातों ही बातों में बताया कि जले, कटे, फटे, दर्द वाले अंग पर



मरहम के बदले जनता के दिल और दिमाग पर सांत्वनाछाप मरहम बना शासन, प्रशासन को सप्लाई करने का उन का धंधा मुगलकाल के उन दिनों से है जब मुगल सल्तनत एक ओर आदेश दे हिंदुओं पर कहर बरपवाया करती थी और दूसरी ओर वही मुगल सल्तनत हिंदुओं को अपनी दरियादिली बताते हुए प्रताड़ित हिंदुओं के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जख्मों पर हमारे बापदादाओं का बनाया सांत्वनाछाप मरहम लगाया करती थी. असल में शरीर के जख्म उतना दर्द नहीं करते, जितना दिमाग और दिल के जख्म करते हैं.

हम दोनों आज कुछ फ्री से थे, सो, मैं ने उन से आगे पूछा, 'उस के बाद?'

'उस के बाद भाईसाहब, फिर अंगरेजों का राज आया. मेरे पुरखों को लगा कि शायद अब उन का सांत्वना का मरहम बनाने का धंधा बंद न हो जाए कहीं.'

'क्यों?'

'हर चीज विलायती ही तो थी उस वक्त, सूई से सच तक सब. यही सोच मेरे पुरखे अभी धंधा बदलने की सोच ही रहे थे कि अंगरेजी सरकार को कहीं से पता चला कि हम देश के लोगों के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जख्मों पर लगाने वाले सांत्वनाछाप मरहम बनाने के खानदानी माहिर हैं, तो उन्होंने विलायत से सांत्वनाछाप मरहम बनवा व लाना छोड़ हम से ही स्वदेशी सांत्वनाछाप मरहम सप्लाई का ठेका कर लिया.

'मत पूछो साहब, उन दिनों हमारे मरहम की कितनी कद्र थी. इधर अंगरेजी सरकार खुद जनता पर जुल्म करवाती और उधर दूसरी ओर तत्काल हमारा बनाया यही सांत्वनाछाप मरहम जनता के दिल व दिमाग पर मल देती दुलार से, तो जनता सरकार की जयजयकार कर उठती अपने जख्मों का सारा दर्द भुलाते हुए.

'जैसेतैसे देश से अंगरेज गए कि निकाले गए, निकालने वाले जाने या निकाले जाने वाले. जितने इतिहास, उतनी बातें.

'देश में जनाब लोकतंत्र आया. तो लगा, अब अपना सांत्वनाछाप मरहम कतई बंद. अपने लोग अपनों के जख्मों पर सांत्वना का जख्म क्यों लगाएंगे भला? दिमाग में वाजिब सा प्रश्न तैरा, तो हम अपने सांत्वना के मरहमखाने को लपेट पाकिस्तान जाने ही वाले थे कि एक तत्कालीन लोकतंत्र के नेता ने हमें रोक लिया.

'हम ने उन से पूछा कि साहब, अब देश में सांत्वनाछाप मरहम का क्या काम. अब तो सरकार जनता की और जनता सरकार की. जनता के घाव सरकार के, सरकार के घाव जनता के. पहले सरकार उन की थी तो घाव जनता के होते थे. वे सादर दबी जबान मुसकराते बोले थे कि अरे मियां, काहे डरते हो? सूरत ही तो बदली है. बस, गोरे से काले आ गए. सीरत तो वही है. मुगलों के वक्त की, अंगरेजों के वक्त की. मैं ने यह सुना, तो भैया, लपेटा हुआ सांत्वनाछाप मरहम का मरहमखाना, फिर बिछा दिया.'

'फिर?'

'फिर क्या मिया, वे बोले कि दिल खोल कर जमे रहो. आने वाला वक्त न मेरा, न तुम्हारा, सांत्वनाछाप मरहम का है. भविष्यवाणी करता हूं कि आने वाले दिनों में सरकार को जनता के लिए सांत्वना के मरहम की जरूरत कदमकदम पर पड़ेगी. किसी नेता का कहा पहली बार सच हुआ, भैया. पहले बेगाने जख्म दे सांत्वना का मरहम जनता के लगाते थे, अब अपने ही जख्म दे कर जनता पर सांत्वना का मरहम लगाने लगे, पूरे अपनेपन के साथ.'

'फिर?'

'फिर जनाब, हम टिक गए यहीं.'

'तो?'

'तो क्या, धंधा तुम्हारे सामने है. पहले दिल्ली से ही अपने सांत्वनाछाप मरहम का कारोबार चलता था, पर अब तो हर स्टेट में दिन दुगना रात चौगुना सांत्वनाछाप मरहम का धंधा फलफूल रहा है, साहब.'

'मैं समझा नहीं?'

'अरे भैया, पहले लोकतंत्र में कुछ इंसानियत थी, सो, सांत्वना का मरहम नेता लोग जनता पर लगाने को कम ही यूज करते थे. पर अब जिधर देखो, पीड़ित जनता के जख्मों पर लगाने के लिए सांत्वना के मरहम के सिवा और कुछ लग ही नहीं रहा.'

'मतलब?'

'मतलब बाबू यह है कि', उन्होंने अखबार के एक टुकड़े पर मेरी दर्द कर रही रीढ़ की हड्डी के लिए सांत्वना के

मरहम का चम्मच धरा और उस की पुड़िया मेरी ओर सरकाते बोले, 'इसे रीढ़ की हड्डी के दर्द वाली जगह नहीं, दिमाग के ऊपर लगा लेना.

'हां, तो मैं क्या कह रहा था कि जब से देश हादसों का देश हुआ है, अपने सांत्वनाछाप मरहम की मांग और बढ़ गई है. जितना सांत्वनाछाप मरहम बना लो, मांग फिर वहीं की वहीं. अब तो सयानी सरकार कई बार तो हमारे रूहअफजाई सांत्वनाछाप मरहम की पैकिंग पहले से ही तैयार रखती है. रखे भी क्यों न भैया, सरकार के बंदे हर जगह तो क्या, जहां उन्हें पहुंचना भी चाहिए, जब वहां भी नहीं पहुंचते तो सरकार जब कहीं कोई हादसा होता है, झट सांत्वनाछाप मरहम वहां पहुंचा देती है, जनता के जख्मों पर लगा देती है.'

'मसलन?'

'कहीं धर्मनिरपेक्ष देश में धार्मिक दंगा हो गया, तो सरकार झट वहां सांत्वनाछाप मरहम भेज देती है ताकि पीड़ितों के धार्मिक जख्म भर जाएं. जो कहीं सरकारी अमलीअमले की लापरवाही से दुर्घटना हो जाए तो इस से पहले कि सरकारी अमला वहां पहुंचे कि न पहुंचे, सरकार झट सांत्वनाछाप मरहम वहां पहुंचा रेडियो, अखबार, टीवी के माध्यम से पीड़ित जनता के लगा देती है. सच कहूं तो भैया, लोकतंत्र में इस सांत्वनाछाप मरहम की अब तो इतनी डिमांड बढ़ गई है कि सरकार तो सरकार, घरेलू स्तर पर भी इस का डट कर दुरुपयोग होने लगा है. जिधर देखो, सांत्वनाछाप मरहम के लिए हाहाकार. बंधु, सांत्वनाछाप मरहम की डिमांड मुगलों, अंगरेजों के वक्त भी ऐसी क्या ही रही होगी?'

देश की जनता के आगे एक प्रश्न छोड़, तनिक सांस लेने को रुके तो मैं ने उन से आगे पूछा, 'तो?' क्या भैया, मजे हैं. सांत्वनाछाप मरहम के नाम पर जो लगे, बेचे जाओ.'

'मतलब?'

'अरे भैया, देश में जहर का सैंपल भरा जा सकता है. पर सांत्वनाछाप मरहम का नहीं. सब जानते हैं कि जो इस का सैंपल भरा तो सांत्वनाओं के सहारे चलने वाला देश फिर चलेगा कैसे?'

'क्यों?'

'इस का भी सैंपल भर गया तो फिर देश की भूख, भय, गरीबी, बेरोजगारी से त्रस्त जनता के जख्मों पर लगाने को उन के पास बचेगा क्या?'

अब उन से आगे कोई बात करने की हिम्मत मेरी न थी. सो, उन के द्वारा कागज में लपेटा सांत्वना का मरहम उठाया और घर की ओर सांत्वना लिए मुड़ गया, अपनी रीढ़ की हड्डी के दर्द को खुद ही दबाए. ●



वेतन

आप का वेतन आप को अमीर नहीं बनाता, बल्कि आप की खर्च करने की आदत आप को अमीर बनाती है. –*चार्ल्स ए. जैफ्फ*

सरिता

कहानी

सरिता, बीस साल पहले, मई (द्वितीय) 2000

टूटा हुआ रिश्ता

• चंद्रशेखर दुबे



गांवभर की औरतें टूटिया खेल रही थीं. दुलहन बनी बसंती भाभी ने दूल्हा बनी रेखा को अपनी इच्छा के अनुसार सजाया था. पर कुछ पल के दूल्हे ने सुहागरात की रस्म पर ऐसा क्या कह दिया कि दुलहन की पलकें भीग गईं.



मालवा के विवाह के अवसर पर एक बड़ी मनोरंजक रस्म अदा होती है. बरात के रवाना हो जाने के बाद वर के घर पर रतजगा होता है. महल्ले व नातेरिश्ते की सभी स्त्रियां उस रात वर के घर पर इकट्ठी होती हैं और फिर जागरण की उस बेला में विवाह की सारी रस्में पूरे विधिविधान से संपन्न की जाती हैं. कोई स्त्री वर का स्वांग भरती है तो कोई वधू का.

फिर पूजन, कन्यादान, पलंगफेरे वगैरह की रस्में पूरी की जाती हैं. मंचोच्चार भी होता है, दानदहेज भी दियालिया जाता है, अच्छाखासा नाटक सा होता है. हंसीमजाक का वह आलम रहता है कि हंसतेहंसते स्त्रियों के पेट दुखने लगते हैं. घर में पुरुषों के न होने से स्त्रियां खूब खुल कर हंसतीखेलती हैं. सारे महल्ले को जैसे वे सिर पर उठा लेती हैं.

इस मनोरंजक प्रथा को इन स्त्रियों ने नाम दिया है, 'टूटिया' यानी टूटा हुआ. न जाने इस प्रथा को यह अनोखा नाम क्यों दिया गया? उधर असली विवाह होता है और इधर बरात में वर के साथ न जा पाने वाली स्त्रियां विवाह में भाग लेने के अपने शौक को इस 'टूटिया' रस्म द्वारा पूरा करती हैं.

बसंती भाभी को इस रस्म से बड़ा लगाव सा है. महल्ले में टूटिया का अवसर आते ही वे सब काम छोड़ कर दौड़ी चली जाती हैं. इस अवसर पर वधू बनने के लिए भी वे बड़ी उत्सुक रहती हैं. दूसरी स्त्रियों की तो इस के लिए खुशामद करनी पड़ती है, मगर बसंती भाभी तो खुद ही कह देती हैं, "अरी, तो चिंता क्यों करती हो? कोई नहीं बनती तो मैं ही बन जाती हूं दुलहन. दुलहन बनने में कैसा संकोच. औरत जात दुलहन बनने

के लिए ही सिरजी है. समय की बलवान ही दुलहन बनती है. और नकली दुलहन बनना भी सब को बदा है?"

यों दुलहन बनने के साथ ही अपने नकली वर का अपने हाथों से शृंगार करने का भी बसंती भाभी को शौक रहा है. दूल्हे का निर्णय होते ही वे उस का हाथ थाम कर गद्‌गद कंठ से कहती हैं, "चलो, दूल्हे राजा, मेरा मनचीता शृंगार करो. तुम मेरे दूल्हे बन रहे हो, तो मेरे मनमाफिक शृंगार करना पड़ेगा."

मास्टर साहब के लड़के की बरात जाते ही बंसती भाभी अपनी आदत के अनुसार सब से पहले उन के घर पहुंच गईं. आते ही स्त्रियों के इकट्ठा होने की बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा करने लगीं. उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि पड़ोसिनों व नातेरिश्ते वालियों का कामकाज अभी तक क्यों नहीं निबटा. अगर देर से टूटिया शुरू करेंगी तो सारी रस्में रातभर में पूरी नहीं होंगी. कैसी हैं ये औरतें? इन्हें इस मामले में उत्साह ही नहीं है. इस बहाने हंसनेखेलने का मौका मिल जाता है, इतना भी ये नहीं समझतीं. कामकाज तो रोज ही करना है, पर यह टूटिया रोज कहां होता है?

8-10 स्त्रियों के आ जाने पर सहज ही बात चल पड़ी, "आज दुलहन कौन बनेगी?"

बसंती भाभी ने फौरन जवाब दिया, "मैं बनूंगी. दुलहन की फिकर मत करो. दुल्हा की तलाश करो. बोलो, कौन बनेगा मेरा दूल्हा?"

सभी स्त्रियों ने इनकार करते हुए कहा, "नहीं, बाबा, तुम्हारा दूल्हा बनने की सामर्थ्य हम में नहीं है."

तभी रेखा आ गई. उस ने आते ही पूछा, "क्या बात है, दूल्हादुलहन अभी तक सजे क्यों नहीं?"

बसंती भाभी ने फौरन कहा, "अरी, मैं दुलहन बनी कब की सजीसंवरी बैठी हूं. लेकिन अभी तक दूल्हा ही नहीं सजा."

"क्यों?"

"बस, तेरा ही इंतजार था."

"क्यों भला?"

"तुझे दूल्हा बनाना है न."

"नहीं, बाबा, तुम्हारा दूल्हा मैं नहीं बन सकूंगी."

"क्यों? मैं क्या इतनी बुरी हूं?"

"नहीं, बसंती भाभी, तुम तो हजारों में एक हो. रूपरंग, चालढाल, नाकनक्श, बातचीत सब में हीरा हो."

"क्यों मजाक कर रही है रेखा?"

"यह मजाक नहीं है, बसंती भाभी. मैं अगर पुरुष होती तो..."

"तो क्या करती?"

"तो मैं सचमुच तुम से शादी कर लेती, और अगर शादी नहीं हो पाती तो मैं तुम्हें भगा ले जाती."

रेखा की इस बात पर ऐसे कहकहे लगे, ऐसी तालियां बजीं कि आसपास के घरों से जो स्त्रियां अभी तक नहीं आई थीं, वे भी निकल आईं.

बंसती भाभी रेखा का हाथ थाम कर गद्‌गद कंठ से बोलीं, "तब तो आज मैं तुझे दूल्हा बनाए बिना नहीं मानूंगी."

"नहीं, बाबा, मुझे बख्शो."

"नहीं, रेखा, मैं आज तुझे नहीं छोड़ूंगी."

"नहीं, बसंती भाभी, किसी और को दूल्हा बना लो."

"अरी, तेरे से अच्छा दूल्हा भला मुझे कहां मिलेगा."

रेखा ने चुहल की, "घर से ठेकेदार भैया को बुला दूं?"

"अरी, वे तो बरात में गए हैं. आज की रात तो बस तू ही मेरा दूल्हा है."

"तुम हमें परेशान तो नहीं करोगी, बसंती भाभी?"

"अरी, अपने मन के दूल्हे को भला कोई परेशान करती है?"

सभी स्त्रियों ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा, "मन से तेरे को दूल्हा बना रही है तो बन जा भागवान."

कहकहे पर कहकहे लगाते हुए सभी रेखा को विवश करने लगीं. बसंती भाभी तो मास्टर साहब के घर में से मरदाना लिबास भी ले आईं. रेखा की साड़ी उतारते हुए वे उसे पैंटशर्ट पहनाने लगीं. रेखा न...न... करती रही मगर बसंती भाभी ने उसे मरदाना लिबास पहना दिया.

पांवों में मोजे पहनातेपहनाते बसंती भाभी ने रेखा के कोट के खुले हुए बटन को लक्ष्य कर कहा, "अरी, तू मेरा दूल्हा बन रही है तो इसे तो ढक ले."

दूसरी स्त्रियों ने भी चुटकी ली, "हां, री. और जरा मूंछें भी लगा ले."

बसंती भाभी को यह बात पसंद नहीं आई. वे बोलीं, "नहीं, री, अब तो मुंछमुंडों का जमाना है. मूंछें भला कौन रखता है?"

स्त्रियों ने चुटकी ली, "भाभी, दूर क्यों जाती हो, अपने घर में ही देखो न. हमारे ठेकेदार भैया तो अभी भी बड़ीबड़ी झबरी मूंछों के कायल हैं. तू भी बड़ी सी मूंछें लगा ले रेखा."

रेखा ने भी बसंती भाभी को छेड़ने के खयाल से कहा, "हां री, ले आओ मूंछें. मूंछों से मैं पूरा मर्द दिखूंगी."

बसंती भाभी का चेहरा उतर गया. वे तुनक कर बोलीं, "मैं नहीं लगाने दूंगी मूंछें."

रेखा ने शरारत से मुसकराते हुए कहा, "हम तो लगाएंगे मूंछें."

"तो फिर मैं तुझे दूल्हा नहीं बनाऊंगी."

"मत बनाओ."

रेखा कोट उतारने लगी. बसंती भाभी ने रेखा का हाथ थाम लिया और अनुनय के स्वर में बोलीं, "रेखा, मुझे परेशान मत कर."

"परेशान तो तुम कर रही हो, भाभी."

"मैं ने क्या किया?"

"मुझे मूंछें क्यों नहीं लगाने दे रही हो? ठेकेदार भैया की भी मूंछें हैं तो फिर मेरी..."

"तू उन का नाम यहां मत ले."

"क्यों न लूं?"

"इस टूटिया में तो मेरी मरजी का शृंगार करने दे, पगली."

बसंती भाभी के भीगे कंठ व उन की इस भंगिमा से रेखा द्रवित हो गई. शरारत की मुद्रा को त्याग कर आज्ञाकारी बच्चे की तरह वह उन के सामने बैठती हुई बोली, "अच्छा, भाभी, तुम अपना मनचीता शृंगार कर दो."

बसंती भाभी को जैसे वरदान सा मिल गया. वे ललक कर रेखा का शृंगार करने

यों दुलहन बनने के साथ ही अपने नकली वर का अपने हाथों से शृंगार करने का भी बसंती भाभी को शौक रहा है. दूल्हे का निर्णय होते ही वह उस का हाथ थाम कर गद्गद कंठ से कहती हैं, ''चलो, दूल्हे राजा, मेरा मनचीता शृंगार करो. तुम मेरे दूल्हे बन रहे हो तो मेरे मनमाफिक शृंगार करना पड़ेगा.''

लगीं. रजवाड़ा ढंग से उन्होंने रेखा के सिर पर साफा बांधा. भाल पर चमचच चमकती बिंदिया भी लगा दी और फूलों का सेहरा भी बांध दिया.

सारा शृंगार हो जाने पर बंसती भाभी ने अपनी जीरो नंबर की ऐनक उतारी और उसे दूल्हे को पहनाने लगीं.

रेखा की आंखों में फिर शरारत की चमक आ गई. अपनी फूटती हंसी को रोक कर वह बोली, "बसंती भाभी, ऐनक मैं नहीं लगाऊंगी."

बसंती भाभी ने दयनीय मुद्रा बना कर कहा, "नहीं, री, ऐनक बिना तो दूल्हा जंचता ही नहीं है."

"नहीं, भाभी. ऐनक लगाने पर लोग चश्मा चंडूल कहते हैं."

"कहने दे. तू तो चश्मा लगा ले."

रेखा जानती थी कि बसंती भाभी ऐनक लगवाए बिना मानेंगी नहीं. मगर वह फिर भी इनकार करती ही रही, "आजकल ऐनक का फैशन ही नहीं है."

"कौन कहता है? आजकल ही तो ऐनक का फैशन है."

"नहीं है, भाभी. चाहो तो सब से पूछ लो."

सभी स्त्रियों को इस शरारत में मजा आ रहा था. इसीलिए बिना पूछे ही उन्होंने अपना मत व्यक्त किया, "कमजोर नजर वाले ही लगाते हैं ऐनक."

रेखा ने फौरन इस बात का सिरा थाम कर कहा, "भाभी, सुना आप ने?"

"मुझे कुछ नहीं सुनना है...मैं तो अपने दूल्हे को ऐनक पहनाऊंगी."

रेखा ने भाभी के कान से मुंह सटाते हुए फुसफुसा कर कहा, "क्यों, ऐनक वाला अभी भी मन में बैठा है क्या?"

भाभी का गुस्से से मुंह फूल गया. दूसरी स्त्रियां इस बात को सुन नहीं पाई थीं, इसलिए वे चिल्लाईं, "यह क्या गुपचुप बातें हो रही हैं? शादी अभी हुई नहीं और अभी से कानाफूसी चलने लगी."

इस बात का न तो बसंती भाभी ने उत्तर दिया, न ही रेखा ने. रेखा ने भाभी के हाथ से ऐनक ले कर पहन लिया और दूसरी ही बात छेड़ दी, "यह क्या देरदार लगा रखी है? जल्दी कराओ न हमारी शादी."

स्त्रियों ने चुटकी ली, "क्यों, ऐसी क्या बेकरारी है?"

रेखा इठलाती हुई बोली, "बेकरारी क्यों नहीं होगी? एक रात के ही लिए तो दुलहन मिल रही है, और वह भी भाभी जैसी नगीना."

"अभी भी अपनी दुलहन को भाभी ही कहे जाएगी?"

"नहीं, री, शादी तो करा दो. फिर मैं इसे प्राणप्यारी कहूंगी, प्रियतमा कहूंगी."

"पर दूल्हा तो दुलहन के सामने हलका लग रहा है."

"लगने दो. है तो दुलहन का मनपसंद."

कहकहे पर कहकहे लगते रहे. मगर भाभी का चेहरा फिर भी नहीं खिला.

रेखा से यह छिपा न रहा. वह भाभी के कान के पास मुंह ले जा कर फिर फुसफुसाई, "मेरी बात का बुरा मान गईं, भाभी?"

भाभी ने फुसफुसाते हुए उत्तर दिया, "नहीं, री, बुरा क्यों लगेगा? तूने सच ही तो कहा है. यह बावरा मन उस छलिया को अब क्यों...?"

"मन की लीला मन ही समझता है भाभी, और कोई नहीं..."

रेखा की बात को काटते हुए एक

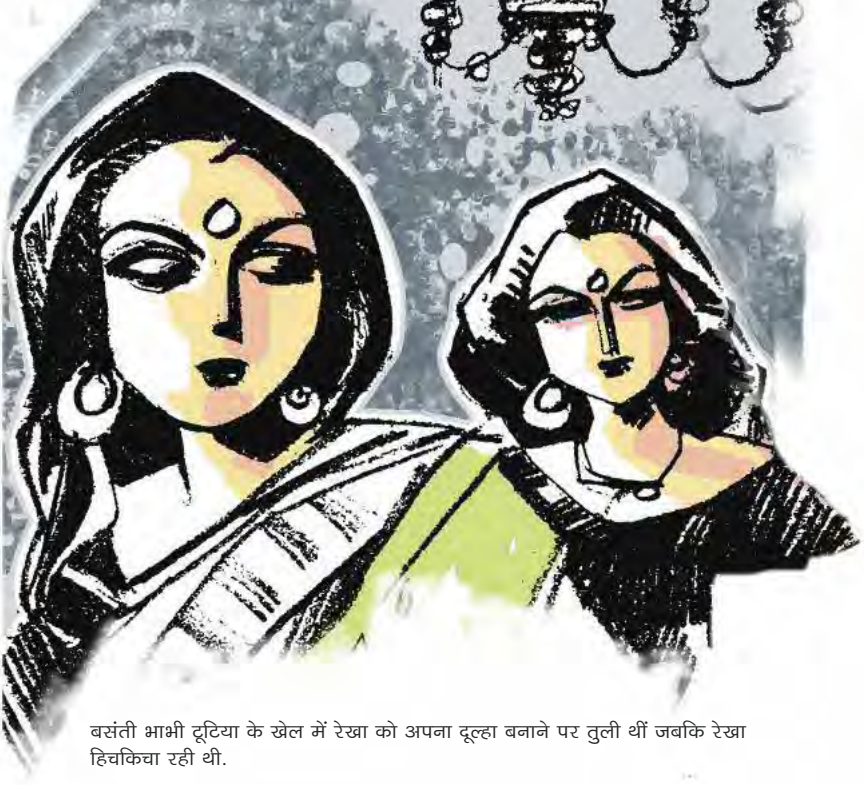

बसंती भाभी टूटिया के खेल में रेखा को अपना दूल्हा बनाने पर तुली थीं जबकि रेखा हिचकिचा रही थी.

स्त्री बोली, "अरी, मन की लीला को सुहागरात के समय समझनासमझाना. अभी पूजन तो होने दे. इतनी उतावली मत बन."

यह बात ठहाकों में ही डूब गई और विवाह की रस्में विधिवत शुरू हो गईं. वर और वधू के फर्जी मांबाप ने अपनीअपनी संतान को अपने पास खींच लिया. तुरंत मंत्रों का उच्चारण होने लगा. हर शब्द पर अनुस्वर लगालगा कर नई संस्कृत में मंत्र बनाए गए. जो कुछ कमी रह गई थी, उस की पूर्ति अस्पष्ट उच्चारण से कर ली गई. विवाहघर जैसी धूमधाम मच गई.

देखतेदेखते पूजन, कन्यादान सब हो गया. विवाह कराने वाले पंडितजी ने दहेज के लिए मंत्रोच्चार किया, "दहेज फौरन दें."

ठहाके लगाने वाली और ताली पीटने वाली स्त्रियां फौरन दौड़ीं और दहेज की वस्तुएं ले आईं. किसी ने दहेज में झाड़ू दी तो किसी ने जूतों की जोड़ी. कोई अलबेली कंकड़ ले आई तो किसी ने टूटी कंघी ही दी. इसी तरह एक से एक निराली वस्तुएं दहेज में आती गईं. बाकायदा सब की सूची बनी. उस सूची में नाम व वस्तु दर्ज की गई. हंसतेहंसते सभी के पेट दुखने लगे.

दानदहेज से निबटते ही दूल्हादुलहन का जलूस निकाला गया. दूल्हादुलहन को तांगे में बैठाया गया. बैंडबाजा आगेआगे और तांगा पीछेपीछे चला.

बाकी स्त्रियां मंगल गीत गाती हुई तांगे के पीछेपीछे हो लीं. सारे महल्ले में खलबली मच गई. कुछ लोग हैरान हुए, कुछ मुसकराए.

सब रस्मों को निबटाने के बाद विवाह की खास रस्म सुहागरात का आयोजन हुआ. दूल्हादुलहन को एक कमरे में धकेल कर कुंडी चढ़ा दी गई. कुछ अलबेली इस मौके के गीत गाने लगीं तो कुछ चुहल करने लगीं. ऐसेऐसे फिकरे कसे गए, ऐसेऐसे मजाक हुए कि यदि कोई पुरुष सुन ले तो उसे अपने कानों पर विश्वास न हो. भले घरों की स्त्रियां भी ऐसा मजाक कर सकती हैं, यह वह कभी मान भी नहीं सकता.

बसंती भाभी इस सब से बेखबर सी अपने आज के दूल्हे को बांहों में भींचे जा रही थीं. चुंबन पर चुंबन लिए जा रही थीं. दूल्हा बनी रेखा चुंबनों की इस बाढ़ से जैसे घबरा गई थी. वह अपनी इस दुलहन की बांहों की कैद से मुक्त होने की कोशिश कर रही थी. वह बारबार समझा रही थी. मगर भाभी पर तो तो जैसे नशा सा सवार हो गया था. वे जैसे होश में ही नहीं थीं. तमाशा देखने वाली स्त्रियां हंसहंस कर दोहरी हुई जा रही थीं.

बसंती भाभी को परे झटक कर रेखा बाहर आने के लिए उठी कि तमाशा देखने वालियों ने बाहर से दरवाजे की कुंडी लगा दी. भाभी ने दौड़ कर भीतर से कुंडी लगा ली.

रेखा चीखी, "यह क्या कर रही हो?"

भाभी ने नाटकीय स्वर में कहा, "छलिया, आज तो खुल कर खेल लेने दे."

रेखा ने साश्चर्य कहा, "होश में आओ भाभी. मैं छलिया नहीं हूं, यह टूटिया है."

रेखा को बांहों में भींचते हुए भाभी फुसफुसाईं, "वह भी तो टूटिया ही था. वह छलिया मुझे छल कर चला गया. उसे दौलत चाहिए थी तो वह मुझे भुलावा क्यों देता रहा? मेरे बाबूजी ने तो पहले ही कह दिया था कि उन के पास कुमकुम और कन्या के सिवा और कुछ भी नहीं है. फिर भला वह छलिया ऐनक लगा कर, मोहिनी मूरत बना कर मुझे क्यों ठगता रहा? ठगने के बाद भी अब वह मेरे मन में क्यों डेरा जमाए हुए है? जाता क्यों नहीं?"

भाभी फफकफफक कर रोने लगीं. रेखा ने उन्हें अपनी बांहों में ले कर उन के आंसू पोंछते हुए कहा, "उसे अब भूल जाओ, भाभी. ठेकेदार भैया में ही मन लगाओ."

"ठेकेदार तो अब मेरे सबकुछ हैं ही. भले ही वे मेरे काका की उमर के हों, पर अब हैं तो मेरे पति. उन्होंने गरीब बाप की इस बेटी को अपनाया तो. दुहाजू ही सही, पर वर तो मिल गया मुझे. मेरा रोमरोम उन का है री. पर इस मुए मन को कैसे समझाऊं? वह छलिया..."

भाभी का कंठ रुंध सा गया. बाहर से स्त्रियां कुंडी खटखटाती हुई शोर मचाए जा रही थीं. फब्ती पर फब्ती कस रही थीं, मगर भाभी और रेखा अपनेआप में ही डूबी हुई थीं. भाभी की व्यथा से रेखा भी अभिभूत हो गई थी. वह भाभी के गालों पर चुंबन अंकित करती हुई उन्हें अपनी बांहों में कसे जा रही थी. भाभी उन बांहों में पड़ी बुदबुदाए जा रही थीं, "छलिया, अब तो मुझे छोड़ दे. तेरामेरा नाता टूट गया. अब क्यों मुझे सताता है रे?" ●



मेरा बेटा 2 वर्ष का है. मैं उसे प्यार से अकेले में जानू, चीकू बुलाती हूं.

इस बार की होली में ससुराल गए थे. वहां मेरे जेठ, जेठानी व उन के बच्चे भी आए थे. सभी बाहर आंगन में बैठे थे. खेलखेल में सासुमां मेरे बेटे को सब के नाम बोलना सिखा रही थीं. तभी उन्होंने बेटे से पापा का नाम पूछा तो वह बोला, 'जानू.' चूंकि इन का घर का नाम 'रानू' था. उस के इतना बोलने पर सब खिलखिला कर हंस पड़े. **खुशबू मित्तल**

हमारी हिंदी की टीचर हमें मुहावरे का अर्थ व उन का प्रयोग यानी वाक्य प्रयोग पढ़ा रही थीं. उन के साथ उन की बेटी भी आई थी जो हमारे ही स्कूल में कक्षा 2 में पढ़ती थी. मैम सब से मुहावरों का अर्थ पूछ कर वाक्य प्रयोग करवा रही थीं. तभी एक मुहावरा आया, 'धूल चाटना.' एक बच्चे ने वाक्य प्रयोग किया, "रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी वीरता से दुश्मनों को धूल चटा दी."

यह सुन कर मैम की बेटी बोली, "छीछी, उन के पास टौफी नहीं थी जो धूल चटा दी." यह सुन कर सारी क्लास ठहाका लगा कर हंस पड़ी और मैम भी मुसकराए बगैर न रह सकीं. **संकेत अग्रवाल**

हमारे जेठ का बेटा अर्श बौएज हाईस्कूल की 5वीं कक्षा में पढ़ता है. उस की हिंदी लिटरेचर की पुस्तक के एक पाठ 'आजाद देश' के अंत में 'आओ कुछ नया करें' शीर्षक से एक प्रश्न पूछा गया कि "आप किस से आजादी चाहते हैं? पुस्तकों से, पुस्तकों के बोझ से? मातापिता की डांट से? अपने मन की बात दो पंक्तियों में लिखिए."

वह मुझ से पूछने लगा, "चाची, इस का क्या उत्तर लिखें?" वहीं पास खड़ा 5 वर्ष का मेरा बेटा आरुष सुन रहा था. बड़े भोलेपन से हंस कर बोला, "भैया, लिख दो हमें इन सब से आजादी चाहिए. हहा, बुक नहीं पढ़नी पड़ेगी. बड़ा मजा आएगा."

सब उस की बात सुन अचंभे से उस की ओर देखने लगे. अर्श बोला, "अरे नहीं मेरे भाई, इन सब से आजादी ले लेंगे तो हमारे पास सिर्फ शरारतें और खेलकूद ही बचेगा और बाकी की जिंदगी ठप. पुस्तकें और मम्मीपापा की डांट तो जरूरी आइटम हैं न." **रूचि खरे** (सर्वश्रेष्ठ) ●



आप भी भेजें

इस स्तंभ में बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.** *अपना अनुभव* ***नाम*** *व* ***पते सहित*** *आप नीचे लिखे नंबर पर* ***एसएमएस*** *या* ***व्हाट्सऐप*** *के जरिए* ***मैसेज/ औडियो*** *भी कर सकते हैं.*

08527666772

कहानी

जिएं तो जिएं कैसे

• प्राची भारद्वाज



कहने को तो हर दिन कोरोना से जुड़ी खबरें कहीं न कहीं से हमारे कानों में पड़ती ही हैं. ऐसा नहीं है कि हम कोरोना पीड़ितों और इस से लड़ रहे लोगों से कोई सरोकार नहीं रखते, परंतु जमीनी हकीकत कुछ और ही है जिस से हम दूरदूर तक वाकिफ नहीं.



अस्पताल में अफरातफरी का माहौल था. हर ओर भय में जकड़ी निगाहें और चिंता में डूबे चेहरे थे. ऐसा समय आ गया था जिस के बारे में किसी ने सोचा भी न था. आज तक जितनी पीढ़ियां पैदा हुईं कौन जानता था कि एक ऐसा वक्त भी आएगा जब इंसान ही इंसान का दुश्मन लगने लगेगा और वह भी बिना किसी दोष के. कोरोना जैसे अतिसूक्ष्म से वायरस ने किसी एक समाज को नहीं, बल्कि समूची दुनिया को हिला कर रख दिया. बीमारी ऐसी जो हर रोज तेजी से फैल रही है और जिस का कोई इलाज भी नहीं. कोरोना पर देश में गंभीरता कम और चुटकुले ज्यादा बनने लगे. कई अफवाहें भी उड़ीं. लेकिन जरूरी नहीं कि हर अफवाह केवल अफवाह ही हो. अनपढ़ों के महल्ले से आती अफवाहें और उन से उपजी आशंका व भय का आधार झूठा हो, यह जरूरी नहीं.

बीमारी से जनता को बचाने के लिए लौकडाउन लागू किया गया. जो लोग दूसरे देशों में फंस गए थे, वे अपने घर आने को आतुर, मजदूर वर्ग जो दूसरे राज्यों में फंस गए वे भी अपने घरों को लौटने को बेचैन. सारी सुविधाओं को विराम लग चुका था लौकडाउन के कारण. ऐसे में कोई करे तो क्या करे, खासकर वे जिन्हें ऐसी आपदा में सारे देश की सेवा करनी है, जैसे हमारे सफाई कर्मचारी, पुलिस व डाक्टर.

डा. बंसीलाल भी एक सरकारी कर्मचारी हैं जो इस आपदा के समय में अपने अस्पताल में आने वाले मरीजों की देखभाल करना चाहते हैं. सरकारी अस्पताल के अधीक्षक होने के नाते उन के कई कर्तव्य भी हैं. लेकिन कई बार केवल हक की लड़ाई के लिए नहीं, बल्कि कर्तव्य निभाने के लिए भी ठोकरें खानी पड़ती हैं.

"कैसे हैं डाक्टर साहब?" डा. महेंद्र ने अपना मास्क ऐडजस्ट करते हुए पूछा. डा. महेंद्र भी इसी सरकारी अस्पताल के एक वरिष्ठ डाक्टर थे.

"अनिश्चितता के इस वातावरण में जैसे हो सकते हैं, बस, वैसे ही हैं डाक्टर साहब," डा. बंसीलाल ने उत्तर दिया. दोनों की अच्छी बनती थी, सो, कुछ देर बातें कर के लंबी सर्विस ड्यूटी को थोड़ा विराम दे लिया करते थे.

तभी वहां एक जूनियर डाक्टर आई और जरा तल्खी में कहने लगी, "सर, पिछले न जाने कितने हफ्तों से हम लोग यहां अस्पताल में लगातार ड्यूटी कर रहे हैं. हम अपने लिए कुछ नहीं मांगते, लेकिन अगर हम ढंग का खाना भी नहीं खाएंगे तो हमारी इम्यूनिटी का क्या होगा? क्या फिर हमें ही कोरोना नहीं हो जाएगा? क्या आप ने हम को दिया जाने वाला खाना देखा है, फ्रिज से निकाला हुआ ठंडा खाना जिस की मात्रा भी इतनी कम है कि किसी का पेट उस में न भरे. नाश्ते में हमें 2 ब्रैड और एक केला देते हैं, लंच और डिनर में ठंडे चावल व जरा सी दाल देते हैं. कितनी बार कह दिया कि यह खाना खाने लायक नहीं है. आप लोग हम से क्या उम्मीद करते हैं?"

जाहिर था कि यह शिकायत केवल इसी एक डाक्टर की नहीं, बल्कि सभी डाक्टरों की सामूहिक शिकायत थी जो यह अकेली अपने सीनियर्स तक पहुंचाने आई थी.

डा. बंसीलाल उस की बात सुन कर कुछ मायूस हो उठे. वे तो पहले से ही वर्तमान स्थिति के कारण परेशान थे. उन्होंने, बस, इतना ही कहा, "राष्ट्रीय आपदा के इस समय में जो आप सब का योगदान है उसे पूरा देश याद रखेगा."

जूनियर डाक्टर अपनी भड़ास निकाल कर चली गई तो डा. महेंद्र कहने लगे, "आप की बात पर विश्वास करने का मन तो करता है परंतु जो खबरें सुन रहे हैं उन से तो कुछ और ही लग रहा है. कहीं डाक्टरों को सोसायटी में आने नहीं दिया जा रहा, कहीं एंबुलैंस पर पथराव हो रहा है. चेन्नई में तो हद ही हो गई जब कोरोना के कारण डा. सायमन की मृत्यु के बाद उन्हें दफनाने भी नहीं दिया जा रहा था. उन के मित्र डा. प्रदीप कुमार ने स्वयं गड्ढा खोद कर उन्हें दफनाया."

"ऐसी खबरों से हमारा मनोबल कैसे न गिरे..." बंसीलाल कह रहे थे. तभी हैड नर्स ने आ कर बताया कि सीएमओ की जानपहचान का एक मरीज दाखिल हुआ है. उन के लिए खास कमरा, साफ बिस्तर का इंतजाम किया जा रहा है.

"पहले आओ पहले पाओ का जो जाल फैला हुआ है इस का फायदा केवल अमीर और रसूख वाले लोग उठा पा रहे हैं क्योंकि इस लौकडाउन में केवल उन्हीं के बस में है यह पता करना कि कहां क्या मिल रहा है. कहां पर

''पहले आओ पहले पाओ का जो जाल फैला हुआ है इस का फायदा केवल अमीर और रसूख वाले लोग उठा पा रहे हैं क्योंकि इस लौकडाउन में केवल उन्हीं के बस में है यह पता करना कि कहां क्या मिल रहा है. कहां पर वैंटिलेटर हैं, कहां पर बैड उपलब्ध हैं और वही सही डाक्टर के पास समय पर पहुंच पाते हैं. आम आदमी तो बेचारा दरदर की ठोकर खाता भटकता फिरता है.''

वैंटिलेटर हैं, कहां पर बैड उपलब्ध हैं और वही सही डाक्टर के पास समय पर पहुंच पाते हैं. आम आदमी तो बेचारा दरदर की ठोकर खाता भटकता फिरता है," डा. बंसीलाल की बात से डा. महेंद्र ने सहमति जताई.

दोनों बात कर अपना मन हलका कर रहे थे कि तभी बंसीलालजी की पत्नी का फोन आया, "अरे, क्यों इतनी चिंता करती हो? सभी तो यहां काम कर रहे हैं, डाक्टर हैं, नर्सें हैं, वार्डबौय हैं, सफाई कर्मचारी हैं, टैस्ट करने वाले और उन्हें जांचने वाली टीमें हैं, और भी न जाने कितना स्टाफ काम कर रहा है. तुम अगर यों बारबार मुझ पर दबाव डालोगी कि मैं घर आ जाऊं तो यह न तो संभव है और न ही मैं इस तरीके से काम कर पाऊंगा. अब नाराज क्यों होती हो? मैं समझता हूं इस के पीछे तुम्हारी चिंता है, मेरे लिए फिक्र है." बंसीलालजी की पत्नी ने फोन काट दिया.

"हम सभी के घरवालों का यही हाल है. सभी एक ही चिंता में घुल रहे हैं कि कहीं हमें भी कोरोना न हो जाए. चिंता ठीक भी है. लगभग हर अस्पताल से डाक्टरों और नर्सों को कोरोना होने की खबरें आ ही रही हैं," डा. महेंद्र ने भी अपना पुट लगाया.

डा. बंसीलाल के पास अस्पताल की कोऔर्डिनेटर का फोन आया और उन्होंने बताया कि पीपीई किट्स खत्म हो रही हैं, और की जरूरत है. वहीं, टैस्टिंग किट्स भी कम पड़ रही हैं.

"हम डाक्टरों और नर्सों से युद्ध स्तर पर काम करवा रहे हैं लेकिन अगर अच्छी क्वालिटी की पीपीई किट्स उन्हें नहीं दे सके तो यह उन के लिए मौत का खेल बन जाएगा. यही बात टैस्टिंग किट्स पर भी लागू होती है. बिना टैस्टिंग के डाक्टरों को इतने सारे मरीजों में जाने देना एक तरह से उन की जान से खेलने वाली बात होगी."

कोऔर्डिनेटर अपनी बात पर जोर डाल रही थीं, "डा. बंसीलाल, क्या करें सामान काफी कब मात्रा में आ रहा है. सरकारी काम की अपनी एक गति होती है. ऐसे में प्राइवेट सैक्टर से सीएसआर के माध्यम से काफी सामान आने की उम्मीद रहती है, लेकिन अधिकतर सामान लौकडाउन के कारण दूर दूसरी जगहों से आ नहीं पा रहा."

एक युगल जोड़ा, जिस की तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही थी, एंबुलैंस में अस्पताल लाया गया. सरकारी अस्पताल के हालात देख कर मयंक और प्रेरणा उद्वेलित हो उठे. अस्पताल में बेहद भीड़ थी. सभी लोग आसपास बैठे थे, कई बैंचों पर तो कुछ जमीन पर. हालांकि



विचार

बेकार की सोच में मत फंसिए, औरों के विचारों के शोर में अपने अंदर की आवाज को, अपने इंट्यूशन को मत डूबने दीजिए.

–स्टीव जौब्स

सरिता

अधिकतर लोग मास्क लगाए हुए थे लेकिन सोशल डिस्टैंसिंग कर पाना शायद इतनी जगह में संभव नहीं था.

वहां उस समय औन ड्यूटी जो डाक्टर थीं, उन्होंने दूर से ही प्रेरणा से उस के सिम्टम्स पूछे. प्रेरणा के बताने पर उन्होंने कहा, "आप दोनों को कोरोना का टैस्ट कराना पड़ेगा. रिपोर्ट 48 घंटे में आ जाएगी. और अगर आप कोरोना का टैस्ट करवाते हैं तो आप को आइसोलेट होना पड़ेगा, अब आप अपना सैंपल दे दो."

यों भीड़ में पासपास बैठने से मयंक की चिंता और बढ़ गई. उसे आशंका होने लगी कि यदि इन में से कोई कोरोना पौजिटिव निकला तो अब उन्हें कोरोना होने के पूरे चांसेस थे.

"सरकार इतना शोर मचा रही है कि सोशल डिस्टैंसिंग करो और आप लोगों ने यहां पर इतनी भीड़ मचा रखी है. ऐसे करेंगे आप लोगों का इलाज? जिन को कोरोना नहीं है उन्हें भी हो जाएगा," अस्पताल की हालत देख कर मयंक जोरजोर से चिल्लाने लगा. आइसोलेशन की बात सुन कर अधिकतर लोग ऐसे ही बौखला जाते हैं.

स्थिति को काबू करने पास के कौरिडोर में खड़े डा. बंसीलाल वहीं पहुंच गए और मयंक व प्रेरणा को आश्वस्त करने लगे कि वे हालात को संभाल लेंगे.

"क्या संभालेंगे आप? जब तक यह सचाई लोगों तक नहीं पहुंचेगी, इस जगह का कुछ नहीं होगा. पर आप चिंता मत कीजिए, मैं ने यहां का एक वीडियो बना कर अपने ट्विटर अकाउंट पर डाल दिया है. अब जल्दी ही कुछ होगा, इंटरनैट में बहुत ताकत है," मयंक ने तल्खी से कहा.

तभी वहां एक भिखारिन सी दिखने वाली बुढ़िया को पुलिस ले कर पहुंची.

"इसे मास्क दिलवाइए साहब," पुलिस वाला बोला.

"अरे, कहां से दिलवाऊं? सबकुछ सरकार की मरजी से कहां होता है सरकारी महकमों में," फिर डा. बंसीलाल धीरे से पुलिस वाले के कान में फुसफुसाए, "अपनी कमाई तो सब को चाहिए न, सो मास्क तो अब है नहीं." पुलिस वाला फौरन उन की बात का आशय समझ गया.

सैंपलिंग के बाद मयंक और प्रेरणा को आइसोलेशन के लिए ले जाया गया. प्रेरणा को लेडीज वार्ड में भेज दिया गया और मयंक को जैंट्स वार्ड में ले जाया गया.

जैंट्स और लेडीज दोनों का वाशरूम कौमन था. जब मयंक को एक रूम दिया गया तो वहां चारपाई पर बैडशीट के नाम पर एक पतला सा कपड़ा पड़ा हुआ था. मयंक को दूसरा कपड़ा दिया गया और बोला गया कि आप पुराना बैडशीट हटा कर, इसे बिछा लेना.

रात का एक बज रहा था, मयंक ने बैडशीट चेंज की और सो गया. उस के बाद जब वह सुबह उठा तो फ्रैश होने बाथरूम गया. जब दिन के उजाले में वह बाहर पहुंचा तो उस ने अपने आसपास का नजारा देखा, बाथरूम बेहद गंदा था शायद कई लोगों के इस्तेमाल करने के कारण. इंडियन स्टाइल टौयलेट का बुरा हाल था, वाशबेसिन में पान की पीक पड़ी थी, सीढ़ियों के नीचे कूड़े का ढेर जमा था जिस से काफी बदबू आ रही थी. हर विभाग बहुत कम लोगों के साथ काम कर रहा था, इसलिए हालात वैसे थे.

मयंक का मन खराब हो गया. लेकिन क्या करता, मजबूरी थी, इस्तेमाल तो यही



अगली शाम तक मयंक व प्रेरणा की रिपोर्ट आ गई. उन दोनों ने संतोष की सांस ली जब दोनों की रिपोर्ट्स नैगेटिव आईं.

करना पड़ेगा. वहां रह रहे करीब 30 लोगों के लिए एक ही साबुन की बट्टी थी जिस से सभी नहाधो रहे थे. मयंक ने अपने दिल को बहलाया कि केवल 48 घंटे की बात है, काट लेंगे.

वहां बदलने के लिए कपड़ों के न होने की वजह से मयंक और प्रेरणा की हालत खराब हो रही थी. 48 घंटे बाद जब मयंक पूछने गया तो उसे बताया गया कि इतनी जल्दी नहीं आती है रिपोर्ट. 3-4 दिन इंतजार करना होगा.

मयंक ने सीएमओ को कौल किया किंतु उन्होंने फोन नहीं उठाया. फिर उस ने डिप्टी सीएमओ को भी कौल किया, लेकिन फोन नहीं उठाया गया. काफी हाथपैर मारने के कारण मयंक की फ्रस्ट्रेशन बहुत बढ़ गई.

मयंक वाले कमरे के साथ लगे कमरे में विदेश से आए एक लड़के को शिफ्ट किया गया. वह लड़का खुद ही अपना भारी सामान सीढ़ियों से घसीटता हुआ कमरे तक लाया, और वहां पहुंच कर गंदगी व गरमी के कारण बेहोश हो गया. कोई उसे उठाने, उसे छूने के लिए उस के पास जाने को राजी न था.

एक वार्डबौय ने तो बेहद रुखाई से यह तक कहा कि दूर रहो हम से, तुम सब मरने वाले हो.

अपनेअपने घरों से जुदा, अपने परिवारजनों से दूर, चिंता की इस घड़ी में ऐसा कुछ सुन लेने से किसी पर क्या बीत सकती है, यह वही जानता है.

दिन चढ़ते हुए जब मयंक और प्रेरणा को खाना दिया गया तो वह भी ठीक नहीं था. इस बार मयंक को फिर गुस्सा आया और उस ने अपने बैड के पास ही खड़े हो कर चिल्लाना शुरू किया, "इतनी बड़ी महामारी के समय में आप लोग इतने सारे लोगों को एक साबुन की टिक्की दे रहे हैं, पीने का पानी खुली बोतलों में दे रहे हैं, खाने की हालत देखिए, कितना खराब खाना है. क्या इस तरह लड़ेगा भारत इस बीमारी से?"

इस बात का जवाब जब तक डा. बंसीलाल देते, तब तक क्षेत्र की कौर्पोरेटर, जो वहां दौरे पर आई हुई थीं, ने बीचबचाव करना शुरू कर दिया. उन्होंने वहां मौजूद सरकारी मुलाजिमों को और्डर देने शुरू किए. जो सरकारी मुलाजिम डा. बंसीलाल की बात पूरी तरह से नहीं मानते थे वे कौर्पोरेटर साहिबा के सामने उन की बात सुनने लगे.

"आप किसी प्रकार की कोई चिंता न करें. आप को जो चाहिए होगा, वह हम दिलवा देंगे," कौर्पोरेटर साहिबा मयंक द्वारा उठाई गई मांगों को जांचने लगीं और वहां मौजूद मुलाजिमों से उन को पूरा करने की बात कहने लगीं, "आप लोगों को आम आदमी की जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए. ये जो मांग रहे हैं, इन के लिए फौरन ले कर आइए."

उन के कहते ही मयंक को एक नई साबुन की बट्टी दी गई, पीने के पानी को बदल कर बिसलेरी की बोतल दी गई.

इस प्रकरण से डा. बंसीलाल बेहद चिढ़ गए. आखिर वे भी तो यही चाहते थे कि अस्पताल में जो मरीज आएं उन की अच्छी तरह देखभाल हो, उन्हें किसी प्रकार की कोई शिकायत न हो. और वे इस के लिए पूरी मेहनत, पूरे परिश्रम से कदम उठाने के भरसक प्रयास कर रहे थे. लेकिन उन के मातहत थे तो सरकारी मुलाजिम ही और उन के ऊपर जितना डा. बंसीलाल का जोर चलता वे उतना ही सुन रहे थे. लेकिन एक सत्ताधारी के दृश्य में आ जाने से पूरी काया ही पलटने लगी थी.

एक तो भयावह जमीनी स्तर पर काम करने की जटिल स्थिति, उस पर सत्ताधारियों के दखल की मार.

अगली शाम तक मयंक व प्रेरणा की रिपोर्ट्स आ गईं. उन दोनों ने संतोष की सांस ली जब दोनों की ही रिपोर्ट्स नैगेटिव आईं. मगर मयंक का मन फिर परेशान हुआ जब उस ने देखा कि इस बार उन्हें घर छोड़ने जो एंबुलैंस जा रही है उस में भी 4-5 लोग बैठे हैं. लेकिन क्या कर सकते थे. यह लौकडाउन की सिचुएशन की बात है जिस में कोई भी आनेजाने का साधन सड़क पर नहीं मिलता है. और इस कारण मयंक और प्रेरणा एंबुलैंस में ही लौटने को मजबूर थे. एहतियातन इस बार उन दोनों के चेहरे पर मास्क था और उन्होंने किसी चीज को हाथ भी नहीं लगाया.

रास्ते में ड्राइवर बताने लगा, "ऐसे हालात हो गए हैं कि मैं आप को क्या बताऊं. मैं खुद 4 दिन से घर नहीं गया हूं. घर वाले परेशान रहते हैं. जो आप और हम जैसे आम लोग हैं उन के आइसोलेशन के लिए होस्टलों व स्कूलों जैसी जगहों पर इंतजाम किए गए हैं. वरना जो खास लोग हैं या हमारे साहब लोगों के रिश्तेदार हैं उन के लिए तो फाइवस्टार बंदोबस्त किए जाते हैं. ऐसा नहीं है कि सरकार की तरफ से कोई कमी की जा रही है. बस, जमीनी हकीकत अलग है."

यहां एंबुलैंस का ड्राइवर परेशान है और वहां डा. बंसीलाल के घरवाले पूरा जोर लगा रहे हैं कि वे किसी भी बहाने अब अस्पताल में न जाया करें. उन्हें भी डर है कि कहीं कोरोना उन के घर ही न आ धमके.

सच ही है. विपदा अभी भी विकराल रूप धरे वहीं खड़ी है. सब के घरपरिवार वाले चिंता करते हैं. यह तो कोरोना फाइटर्स ही हैं जो ऐसी स्थिति संभाले हुए हैं, और भयावह जमीनी हकीकत के सामने भी डट कर खड़े हुए हैं. ●

क्या है कोरोना की जमीनी हकीकत

इस तरह के विषयों के सही उत्तर पाने के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी.

Subscription.mag@delhipress.in पर ईमेल भेजिए या **08588843408** पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.



यह भी खूब रही

मेरी बहू अपनी छोटी बहन की शादी में गई. वह बहुत ज्यादा उत्साहित थी. उस का सारा काम वह संभाल रही थी. उस की सब चीजों को संभालतीसंभालती वह बहुत थक गई थी. विदाई होतेहोते वह इतना थक गई कि अपनी बहन से ज्यादा वह ही रोने लगी. सब उस की बहन को चुप करवाने के बजाय मेरी बहू को ढाढ़स बंधाने लगे.

इस पर वह झल्ला कर बोली, "मैं अपनी बहन की विदाई की वजह से नहीं रो रही, थकान की वजह से रो रही हूं. अब तो उस की विदाई होने दो, कोई न कोई मिलने ही आता जा रहा है, अब जाने दो उस को."

यह सुन कर सब हंस पड़े और मेरी बहू की बहन ने झट खुद से ही अपने आंसू पोंछे और कार में जा कर बैठ गई. वह नजारा भी देखने लायक था.

देवयानी दत्त (सर्वश्रेष्ठ)

मेरी ताईजी, जोकि इलाहबाद में रहती हैं, के 3 बेटे हैं. यह उस समय की बात है जब बड़े बेटे की शादी हुई, फिर उन की पत्नी गर्भवती हुई और फिर ताईजी उन्हें ले कर अस्पताल जाने लगीं. यह सिलसिला तब तक चला जब तक उन का बेबी नहीं हो गया.

तब तक दूसरे भैया की शादी हो गई और फिर उन की पत्नी भी गर्भवती हो गई और ताईजी द्वारा उसे ले कर अस्पताल जाने का सिलसिला आगे बढ़ता गया.

अब दूसरी भाभी के भी बेटा हो गया. अब बच्चे के चक्कर में ताईजी को अस्पताल के चक्कर लगाने पड़ते थे. तब तक तीसरे भैया की शादी भी हो गई और उन की पत्नी के भी बेबी होने वाला हो गया.

एक दिन ये भाभी अस्पताल में थीं. मैं उन्हें देखने के लिए अस्पताल पहुंचा तो मेरी ताईजी बोलीं, "अरे टिल्लू, सुनो." मुझे वे मेरे घर के नाम से बुलाती थीं.

मैं ने पूछा, "क्या हुआ?" तो वे बोलीं, "आज तो बड़ा मजा आया."

मैं ने पूछा, "क्या हुआ."

ताईजी हंसते हुए मुझ से बोलीं, "आज एक नर्स ने मुझे पकड़ लिया और बोली, 'आप अकसर अस्पताल में दिखाई पड़ती हैं, आप कौन से डिपार्टमैंट में हैं.'

"तो मैं ने कहा कि मैं चक्कर डिपार्टमैंट में हूं. मैं दिनभर चक्कर लगाती रहती हूं." इतना सुनते ही भाभी, ताईजी और मेरे साथ वहां खड़ी नर्स भी जोरजोर से हंसने लगीं.

अनुराग चतुर्वेदी ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज**/**औडियो** भी कर सकते हैं.*

08527666772

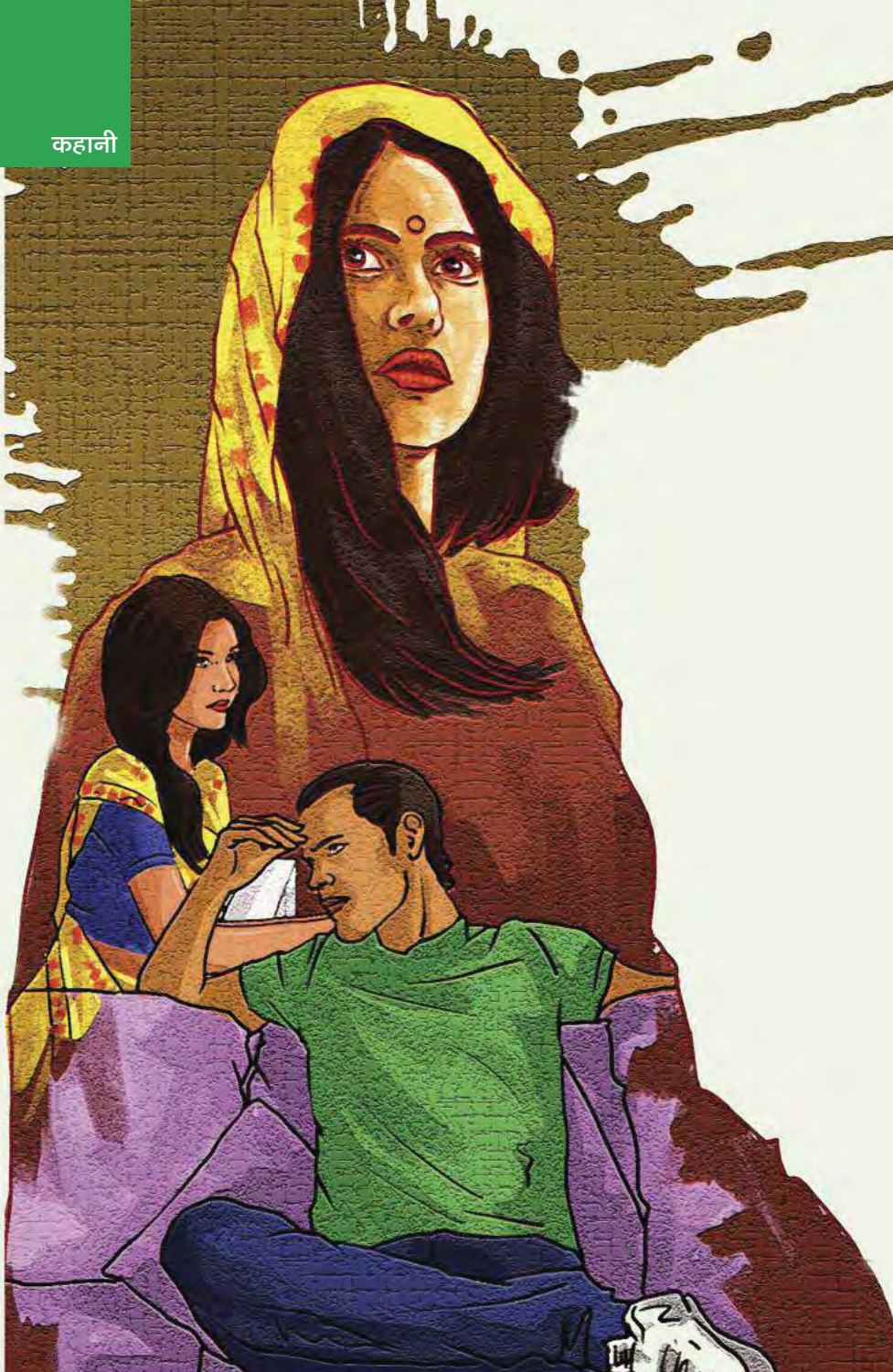

लक्ष्मणरेखा

• पल्लवी पुंडीर

मौसम बदल रहा था. चुभती गरमी को मात देने के लिए आंधी की आवश्यकता नहीं होती, वर्षा की मंजुल फुहारें ही बहुत होती हैं. बहुत सह लिया था लीना ने. अब नहीं सहेगी. दिखा देगी, मात देना उसे भी आता है.

लीना अपनी थकी हुई, झुकी हुई गरदन उठा कर आकाश की ओर देखने लगी. उस की आंखों में विचित्र सा भाव था, मानो भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रही हो, किसी बीती बात को याद करने की, अपने अंदर घुटी हुई सांसों को गतिमान करने की, किसी मृत स्वप्न को जीवित करने की, और इस कोशिश में सफल न हो रही हो.

दोपहर को उस सूनी सड़क पर जैसे कोई छाया मंडरा रही थी. मनुष्य ने इस धरती के अनेक टुकड़े किए. देश, महादेश बनाए. प्रत्येक देश और महादेश की एक परिसीमा तय की गई. प्राचीन काल से ले कर वर्तमान तक इन सीमाओं के लिए युद्ध होते रहे हैं. लेकिन, कोरोना बिना अनुमति सीमाओं को तोड़ता हुआ अपना साम्राज्य फैलाया गया. बिना किसी पासपोर्ट, बिना कोई वीजा, आज वह विश्व के लगभग हर शहर में मातम बांटता घूम रहा है. उस के भय से सभी अपनेअपने घरों में बंदी थे, जीवित रहने की यह महत्त्वपूर्ण शर्त जो थी.

भारत के अन्य शहरों की तरह पंजाब के फिरोजपुर शहर में भी लौकडाउन था. लीना विवाहिता थी, एक बच्चे की मां. उस का पति अमरीश सिंह रेलवे में काम करता है. वे उसी हैसियत से रेलवे के क्वार्टर में रहते हैं. पहले सुबह 9 बजे चला जाता था. उस के बाद दोपहर में खाना खाने घर आता, फिर घंटेभर बाद जा कर शाम 6 बजे तक लौट आता था. कभीकभी दोस्तों के साथ पीने बैठ जाता, तो देर भी हो जाया करती थी.

पर लौकडाउन ने दिनचर्या बदल कर रख दी थी. 10 बजे सो कर उठना, नाश्ता करना, स्नान करना, टीवी देखना, दोपहर का भोजन करना, उस के बाद फिर से पैर फैला कर सो जाना. शाम को चाय के साथ पकौड़े का आनंद उठाना, बालकनी से चिल्ला कर कुछ दोस्तों से बातें करना, उस के बाद टीवी देखने बैठ जाना, रात का खाना खाना और फिर बिस्तर पर गिर जाना. लेकिन, कुछ ही दिनों में वह इस अत्यधिक आराम से परेशान हो गया बेचारा. पिछले कई दिनों से उकताया हुआ घूम रहा था. पहले काम का रोना रोता था, अब आराम का.

घर के काम में लीना की सहायता के लिए आरती आती थी. लेकिन लौकडाउन में उसे भी छुट्टी मिल गई थी. अमरीश को लीना की यह मुसीबत दिखती नहीं थी. वह लीना को भी कहां ठीक से देख पाया था. देखना क्या मात्र आंखों से होता है. यदि हां, तो अमरीश लीना को नहीं, एक लोथ को रोज देखता था.

एक लोथ में जान न के बराबर थी. एक लोथ जिस के चारों तरफ लक्ष्मणरेखा खींच कर उस की रक्षा की जा रही थी. एक लोथ जिसे निर्णय करना आता ही कहां था. उस के लिए प्रश्न करना निषेध था. कभीकभी शारीरिक अत्याचारों से पीड़ित हो कर वह लोथ अपने स्वामी से एक क्षीण फरियाद करती. उस की व्यथा को कोई उत्तर नहीं मिलता. लोथ एक शरीर कहां थी. वह दान में दे दी गई एक वस्तु थी, जिसे अपने कष्टों के लिए मात्र आंसू गिराने का अधिकार था. अमरीश उस लोथ से अपनी भूख मिटाता था.

लीना पढ़ीलिखी थी. वह अपने अधिकारों को जानती थी. उस ने बीएड किया था. केंद्रीय विद्यालय में उस का चयन भी हो गया. 4-5 महीने पहले ही एक छोटे शहर में उस की पोस्टिंग की खबर प्राप्त हुई थी.

लेकिन अमरीश के अनुसार लीना शहर से बाहर जा कर काम करने लायक नहीं थी. दूसरी बात यह भी थी कि वह चली जाती तो घर का काम कौन करता. सबकुछ सोचसमझ कर, लीना की नौकरी करने की इच्छा का सम्मान करते हुए, अमरीश ने उसे फिरोजपुर में ही किसी प्राइवेट स्कूल को जौइन करने की आज्ञा दे दी थी.

अपने अधिकारों को जानना और उन के लिए आवाज उठाना दो अलग विषय हैं. इस समाज के लिए लीना एक मां थी, बेटी थी, बहू थी, पत्नी थी, स्त्री थी, कुटुंब की इज्जत थी. वह मात्र मनुष्य नहीं थी. लीना एक ऐसे भ्रमजाल में कैद थी, जहां उस ने स्वयं को खो दिया था. डूबने से बचाने के लिए हाथ तो मारना ही पड़ता है, पर लीना के दोनों हाथ पीछे बंधे हुए थे. एक प्रयास बंधन को खोल सकता था, लेकिन प्रयास करना वह भूल गई थी.

पिछले एक घंटे से लीना खिड़की पर खड़ी थी. जब उन्होंने भोजन समाप्त किया तब 2 बजने वाले थे. अमरीश सोने की बात कह कर बैडरूम में चला गया था. बेटा तो पहले ही सो गया था. वह खड़ी रह गई थी.

तभी दूर कुछ खड़का. एकाएक वह चौंकी, फिर वहीं खड़ीखड़ी अपनेआप में ही एक लंबी सी थकी हुई सांस के साथ बोली, "3 बज गए..." मानो एक लंबी यात्रा का समापन हुआ हो. तभी रसोई में खुले हुए नल ने कहा टिपटिपटप...

"पानी..." इतना कह कर वह ऐसे उछली जैसे बिजली के नंगे तार को छू दिया हो. रसोई में बरतनों की खनखनाहट के बीच वह बरतन धोने लगी.

जब लीना बरतन धो चुकी तो सोचा चल कर

लीना की शांत और दृढ़ आवाज सुनते ही पुलिस वालों ने अमरीश को रुकने का इशारा कर दिया. उन में से एक बोला, ''मैडम, आप जैसे पढ़ेलिखे लोग नहीं समझोगे तो जो बेचारे अनपढ़ हैं उन से क्या उम्मीद करें. घर में रहो, सुरक्षित रहो.''

कुछ पढ़ लिया जाए. वह पिछले एक महीने से शिवानी का उपन्यास 'कृष्णकली' पढ़ रही थी. नहींनहीं, पढ़ना कहना गलत होगा, पढ़ने का प्रयास कर रही थी. हां, तो आज फिर पढ़ने को सोच ही रही थी कि 'खट' आवाज के साथ बेटे की एक तेज चीख कानों में आ कर टकराई. वह उस तरफ दौड़ी. आज फिर कृष्णकली प्रतीक्षा करती रह गई. यह सब मानो एक ही क्षण में, एक ही क्रिया की गति में हो गया.

अमरीश बेटे के पास ही सो रहा था. गुस्से और खीझ के मिलेजुले स्वर में चिल्लाया, "क्या हुआ." जैसे समझ ही नहीं पा रहा कि क्या हुआ.

शिशु चिल्लाचिल्ला कर रोने लगा था. लीना उसे हृदय से लगा कर चुप कराने का प्रयास करने लगी. करुणाभरे स्वर में बोली, "चोट बहुत लग गई बेचारे को. आप ने देख..." अपनी बात को स्वयं ही चबा गई थी.

चटाक...

एक छोटे क्षणभर के लिए लीना स्तब्ध रह गई, फिर एकाएक उस के मन ने, उस के समूचे अस्तित्व ने, स्वयं को दुत्कार दिया.

अमरीश बोलता जा रहा था, "इस को चोटें लगती ही रहती हैं, रोज ही गिर पड़ता है. तुम से एक बच्चा नहीं संभाला जाता. दिनभर घर में बैठ कर बस मोटी होती जा रही हो. बाहर जा कर 2 आदमियों से बात करने लायक नहीं हो. मैं भी सोचता हूं, चलो मूर्ख है, घर देख लेगी. लेकिन नहीं. एक फूहड़ गृहिणी हो तुम. आराम का जीवन मिला है न, इसलिए मेहनत करना जानती ही नहीं हो."

अमरीश का यह थप्पड़, पहला नहीं था. यह अमावस्या लीना के जीवन में



आती रहती थी. किंतु जब से लौकडाउन हुआ, अमावस्या स्थायी हो गई थी.

कुछ ही देर में पूर्ववत शांति हो गई थी. अमरीश फिर लेट कर ऊंघ रहा था. मृतवत जड़ता के साथ लीना अपने शिशु को ले कर चली गई.

घर में काफी देर मौन रहा. थोड़ी देर तक तो वह मौन भावनाशून्य ही रहा. लीना को ऐसा लगा जैसे यह नीरसता और निर्जीवता उसे घेर लेगी. इस में एक प्रतीक्षा भी थी. उस का अपना मन स्वयं के उठने की प्रतीक्षा कर रहा था.

शिशु अब नीचे बैठ कर खेल रहा था. तभी अमरीश उठ कर आ गया. पहले उस ने लीना की ओर देखा और फिर बाहर बालकनी में जा कर खड़ा हो गया.

थोड़ी देर बाद जैसे उसे ध्यान आया कि वह चाह कर भी बाहर नहीं जा

सकता. उस की एक बुरी आदत थी, सिगरेटशराब पीने की. घर में पड़ी बीयर की बोतलें भी समाप्त हो गई थीं. सामने की बालकनी में अनिल खड़ा सिगरेट पी रहा था. अमरीश पर नजर पड़ते ही, हाथ हिला कर उस ने इशारा किया. अमरीश ने भी हाथ हिला दिया. सिगरेट की एक तलब उस के भीतर भी जग गई थी. वह झुंझलाया सा लीना के सामने पड़ी हुई कुरसी पर आ कर बैठ गया था.

"मन कड़वाहट से भर रहा है. आजकल दिन तो जैसे समाप्त ही नहीं होता. गलीगली, चौकमहल्ले सब जैसे मर गए हैं. अब और नहीं बैठा जाता घर में. मैं जेल में नहीं रह सकता. कोई सजायाफ्ता कैदी हूं क्या. कल अनिल का फोन आया था. जरूरी सामान लेने का बहाना कर के बाहर घूमने जाया जा सकता है. अरे, कुछ नहीं होता, मैं बाहर से आता हूं," इतना कह कर वह उठ खड़ा हुआ.

अमरीश के जाते ही कमरे में सूर्यास्त आ गया और लीना उस अरुणिमा में भीग गई थी. वैसे भी ऐसे एकांत लीना को प्रिय थे. कुछ देर का यह काल्पनिक संसार उस के मन को प्रसन्नता से भर दिया करता था.

दूध पी कर और थोड़ी देर खेल कर शिशु भी फिर सो गया था. लीना ने उसे बिस्तर पर लिटा कर दोनों तरफ से तकिया लगा दिया और स्वयं बालकनी में आ कर खड़ी हो गई.

लीना को उस निर्जन वातावरण में भी एक संगीत सुनाई दे रहा था. तभी एक जानीपहचानी कर्कश ध्वनि उस के कानों से टकराई.

'हाय...हाय...मार डाला.'

लीना ने थोड़ा लटक कर नीचे झांका. 4-5 पुलिस वालों से घिरा अमरीश कराह रहा था. घमंडी अमरीश घर से बिना मास्क लगाए निकल गया था. कुछ दूर पर ही पुलिस वालों के हत्थे चढ़ गया था. डंडे से उस की पूजा हो चुकी थी. अब उठकबैठक की तैयारी हो रही थी.

"भाई, माफ कर दो..." अमरीश गिड़गिड़ा रहा था.

एक पुलिस वाला बोला, "एक तो बिना मास्क लगाए निकल आया. जब मना किया तो गाली देता है. झूठा. सामान लेने निकला था, तो थैला कहां है?"

"सर, सर मैं सच कह रहा हूं, मेरा घर सामने ही है. मैं रेलवे का कर्मचारी ही हूं. पहचानपत्र घर में रह गया है. वो...वो... मेरे घर की बालकनी है. लीना...लीना... लीना..." अमरीश चिल्लाया था.

किसी शक्ति के वशीभूत लीना तुरंत नीचे बैठे गई थी. जब अमरीश और पुलिस वालों ने ऊपर देखा, वहां कोई नहीं था.

"पागल औरत. वैसे तो पूरे टाइम बालकनी में टंगी रहती है, और आज पता नहीं कहां गायब है. सर...सर... मैं..." पैर पर डंडा पड़ते ही उस का गुस्सा कराह में बदल गया था.

उठकबैठक आरंभ हो गई थी. पुलिस वाले गिनती कर रहे थे. अपनेअपने घरों से पूरा महल्ला तमाशा देख रहा था. कुछ लोग शायद वीडियो भी बना रहे थे. चिल्लाने के स्थान पर अमरीश अब रो रहा था.

लीना कोई गीत गुनगुना रही थी. एक प्रतीक्षा समाप्त हो गई थी. एक मुर्दा शरीर में कोई प्राण फूंक गया था. देखते ही देखते पूरा आसमान बादलों से ढक गया. मौसम बदल रहा था. चुभती गरमी को मात देने के लिए किसी आंधी की

आवश्यकता नहीं होती, वर्षा की मंजुल फुहारें ही बहुत होती हैं.

एक चुप अत्याचारी को ताकत और प्रताड़ित को भय देती है. एक साहसिक विरोध पहले विचारों में पनपता है, फिर क्रिया में उतरता है.

लीना वहां बैठी घंटों, मिनटों, परिस्थिति के अत्यधिक विश्लेषण में बिता सकती थी, उन टुकड़ों को फिर से जोड़ने की कोशिश में और सोचने में कि शायद ऐसा हो सकता था, या वैसा हो सकता था. लेकिन उस ने उन टुकड़ों को जमीन पर छोड़ कर आगे बढ़ने का निर्णय लिया.

सरिता आंदोलन

पत्रिकाएं बनाएं परफैक्ट युवा

परफैक्ट युवा बनने के लिए सिर्फ उम्र, **बौडी** और **ताकत** का होना ही काफी नहीं है, सोचने के दायरे और खुले विचारों की भी बहुत अहमियत होती है. सोच, विचार, बरताव जैसी चीजें सिर्फ डिगरियां हासिल करने से नहीं आतीं, न मोबाइल पर आज के 4जी, 5जी की स्पीड से आने वाले अधकचरे संदेशों से. अच्छी सोच, अच्छे विचार, अच्छा बरताव और सही युवा बनने के लिए पत्रिकाएं पढ़िए, जो दुनियादारी से ले कर रोजगार, प्यार, घर, दफ्तर वगैरह तक बेहतर जानकारी देती हैं.



पत्रिकाओं से जुड़िए
समय से आगे बढ़िए.

• सरिता • गृहशोभा • मुक्ता • सरस सलिल • चंपक • मनोहर कहानियां • सत्यकथा

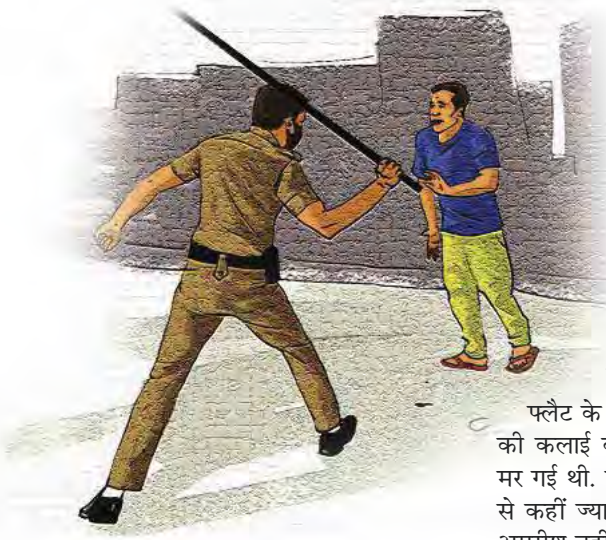

''एक तो बिना मास्क लगाए निकल आया, जब मना किया तो गाली देता है,'' पुलिस वाले के हत्थे चढ़ गया था अमरीश.

"सर, ये मेरे पति श्री अमरीश सिंह हैं. इन से गलती हो गई."

लीना की शांत और दृढ़ आवाज सुनते ही पुलिस वालों ने अमरीश को रुकने का इशारा कर दिया. उन में से एक बोला, "मैडम, आप जैसे पढ़ेलिखे लोग नहीं समझोगे तो जो बेचारे अनपढ़ हैं उन से क्या उम्मीद करें. घर में रहो, सुरक्षित रहो."

लीना ने कहा, "जी, आप सही कह रहे हैं."

फिर दूसरा पुलिस वाला अमरीश की तरफ देख कर बोला, "शुक्र मनाओ कि घर है. उन का सोचो जिन के घर ही नहीं हैं. चलो जाओ. मैडम आ गईं, इसलिए छोड़ रहे हैं."

अमरीश ने धीमे से सिर हिलाया और लीना का सहारा ले कर घर की तरफ चल पड़ा था. अपमान और पीड़ा से कराहता हुआ वह आगे बढ़ रहा था. लेकिन उस का दंभ अभी भी समाप्त नहीं हुआ था.

फ्लैट के दरवाजे पर पहुंचते ही लीना की कलाई को मरोड़ कर बोला, "कहां मर गई थी. जितना दर्द मुझे हुआ है, उस से कहीं ज्यादा तुझे न दिया तो मेरा नाम अमरीश नहीं."

बिना एक पल गंवाए, लीना ने अमरीश का हाथ छोड़ दिया. आकस्मिक हुए इस आघात के लिए अमरीश प्रस्तुत नहीं था. वह लड़खड़ा कर लीना के पैरों के पास गिर पड़ा था.

एक रहस्यमयी मुसकान लीना के होंठों पर खिल गई थी.

वह नीचे झुकी और अमरीश के कानों में बुदबुदाई, "चोट लगी. दर्द हुआ. मुझे भी दर्द होता है." अमरीश की आंखें फटी की फटी रह गईं. लीना के चेहरे पर भय के स्थान पर आत्मविश्वास आ गया था, दबे हुए कंधे तन गए थे, सदा झुकी रहने वाली गरदन आज स्वाधीनता के साथ खड़ी थी. वह समझ ही नहीं पाया कि इतने कम समय में यह परिवर्तन कैसे आ गया. वह कहां जानता था कि परिवर्तन के लिए समय नहीं, आंतरिक शक्ति का जागना आवश्यक होता है.

लीना ने उसे सहारा दे कर फिर खड़ा किया और लगभग धकेलते हुए अंदर ले गई. अमरीश को अब भी कुछ समझ नहीं आ रहा था.

अपने पति के चेहरे पर आते भावों का आनंद उठाते हुए लीना बोली, "आज से ले कर लौकडाउन के समाप्त होने तक घर की यह चौखट, तुम्हारी लक्ष्मणरेखा है. बाहर निकलने की सोचना भी मत."

"तू भूल गई है, मैं कौन हूं. तेरी लक्ष्मणरेखा तो मैं बनाऊंगा," अमरीश ने भय का जाल फिर फेंका.

इस बार लीना डरी नहीं, बल्कि मुसकराई.

वह बोली, "मैं तो जानती ही हूं कि तुम कौन हो. लेकिन मैं अब यह भी जान गई हूं कि मैं कौन हूं. तुम ने शायद ध्यान नहीं दिया, तुम्हारी बनाई डर की लक्ष्मणरेखा मैं ने कब की पार कर ली. अब मुझ पर भूल कर भी हाथ मत उठाना क्योंकि मेरे हाथ भी खुल गए हैं. और हां, लौकडाउन के कारण नीचे गली में पुलिस वालों का आनाजाना भी लगा रहेगा."

इतना कह कर लीना आगे बढ़ी ही थी कि सहसा उसे कुछ याद आ गया. अमरीश की आंखों में आंखें डाल कर बोली, "मैं ने अपनी नौकरी जौइन करने का निर्णय ले लिया है." ●

कभी पास आओ

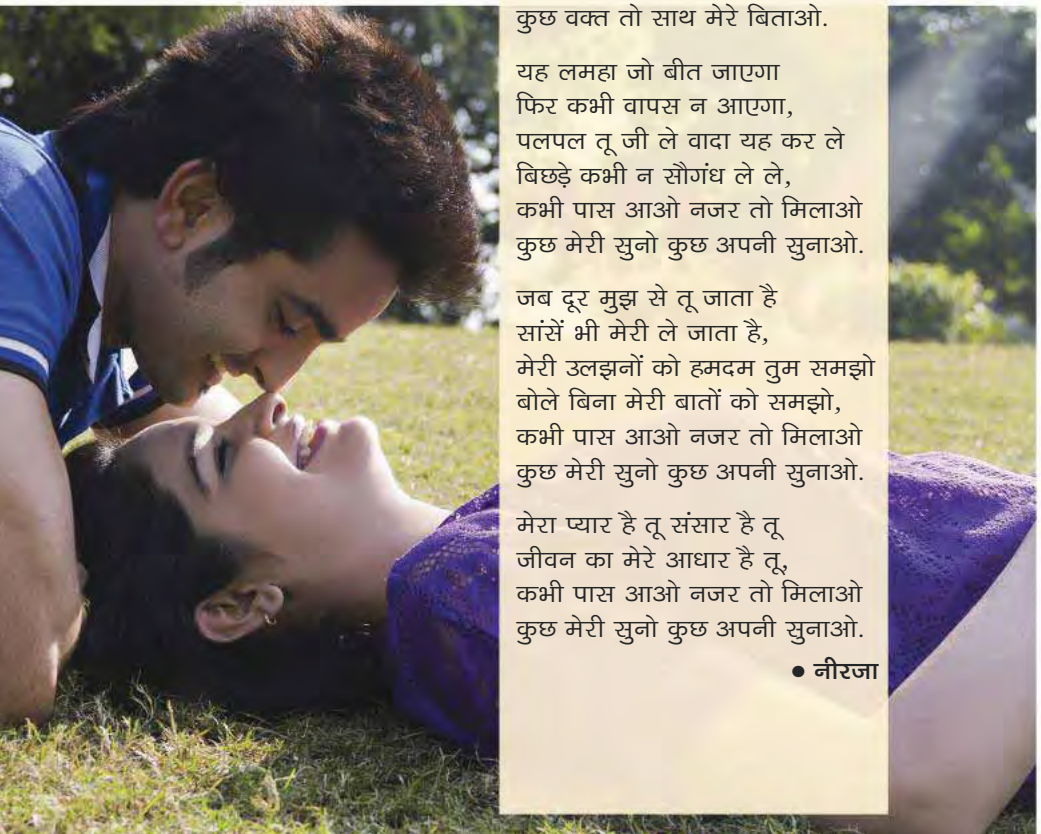

कभी पास आओ नजर तो मिलाओ
कुछ मेरी सुनो कुछ अपनी सुनाओ,
छोड़ो जमाने की तल्खियों को
कुछ वक्त तो साथ मेरे बिताओ.

यह लमहा जो बीत जाएगा
फिर कभी वापस न आएगा,
पलपल तू जी ले वादा यह कर ले
बिछड़े कभी न सौगंध ले ले,
कभी पास आओ नजर तो मिलाओ
कुछ मेरी सुनो कुछ अपनी सुनाओ.

जब दूर मुझ से तू जाता है
सांसें भी मेरी ले जाता है,
मेरी उलझनों को हमदम तुम समझो
बोले बिना मेरी बातों को समझो,
कभी पास आओ नजर तो मिलाओ
कुछ मेरी सुनो कुछ अपनी सुनाओ.

मेरा प्यार है तू संसार है तू
जीवन का मेरे आधार है तू,
कभी पास आओ नजर तो मिलाओ
कुछ मेरी सुनो कुछ अपनी सुनाओ.

● **नीरजा**

पाठकों की समस्याएं



मेरे घर में मेरे पति, सास और 2 बच्चे रहते हैं. जब से हम सभी लौकडाउन के चलते घर में एकसाथ हैं तभी से हमारे घर की दिनचर्या अस्तव्यस्त हो गई है. हम सभी का सोने और उठने का समय एकदम बदल चुका है, खासकर मेरे बच्चों का. बेटे की उम्र 23 वर्ष है और बेटी की 16 वर्ष. दोनों सुबह 5 बजे के बाद सोते हैं और दोपहर 2 बजे के बाद उठते हैं. मैं उन्हें समझा कर थक गई लेकिन वे मेरी बात नहीं सुनते. मुझे फिक्र है कि कहीं वे बीमार न हो जाएं पर उन्हें कहूं क्या यह समझ नहीं आता. पूरा दिन वे दोनों अपने फोन तो कभी लैपटौप पर लगे रहते हैं, मैं क्या करूं कुछ बताएं.

लौकडाउन के दौरान ऐसा होना स्वाभाविक है परंतु सही नहीं है. आप अपने बच्चों को नाराज न करने के चक्कर में उन्हें उन की सेहत के साथ खिलवाड़ करने दे रही हैं जोकि सही नहीं है. वे गुस्सा करते हैं तो करने दीजिए, वे नाराज होते हैं तो उन्हें नाराज होने दीजिए लेकिन उन्हें टोकने से रुकिए नहीं. आप उन्हें एकदो दिन टोकेंगी तो चाहे उन्हें बुरा ही क्यों न लगे लेकिन उन्हें आप की बात तो माननी ही होगी. आप घर की गृहिणी हैं तो अपने तरीके से बात मनवाइए. उन से कह दीजिए यदि वे समय से नहीं उठेंगे तो उन्हें नाश्ता नहीं मिलेगा या घर का काम उन्हें ही करना पड़ेगा. ऐसे वे कब तक आप की बात को नकारेंगे.

*

मेरी शादी को 4 साल हो चुके हैं. हमारा रिश्ता हमेशा से ठीक रहा है लेकिन हम कभी एकदूसरे से दोस्त बन कर बात नहीं कर सके. मेरी औफिस में एक दोस्त है जिस से मेरी घनिष्ठ मित्रता है. मेरी पत्नी को अब उस के बारे में पता चला तो अचानक वह मुझ पर शक करने लगी जबकि ऐसा कुछ है ही नहीं. मेरे और मेरी दोस्त के बीच दोस्ती से ज्यादा कुछ भी नहीं है जबकि मेरी पत्नी यह मानने को तैयार नहीं है. उस के इस तरह शक करने से मैं बुरी तरह आहत हुआ हूं और अब मुझे अपनी पत्नी से बात करना भी अच्छा नहीं लगता. पता नहीं क्यों लेकिन मुझे उस की हर बात से चिढ़ होने लगी है. मुझे इस शादी से निकलने का मन करने लगा है.

किसी एक झगड़े या कहें गलतफहमी के चलते आप अपने रिश्ते को खत्म करने की बात कर रहे हैं तो यह भला कैसे सही होगा. माना आप की पत्नी ने आप को समझने की कोशिश नहीं की लेकिन आप तो अपनी पत्नी को समझने की कोशिश कर सकते हैं. जब आप उन की परेशानी समझ जाएंगे तभी आप उन्हें अपनी बात समझा सकते हैं. उन्हें आप की दोस्ती से शिकायत है तो आप उन्हें क्लीयर बताइए कि बात क्या है. आप का उन से चिढ़ना या उन से बात न करने का मन होना निरर्थक है. आप खुद को उन की जगह रख कर देखेंगे तो शायद आप को उन की बात समझ में आएगी. यह मसला बैठ कर बात करने से सुलझ

सकता है. इसे इतना उलझा कर रिश्ता तोड़ने की संभावना तक मत पहुंचिए.

*

मेरे 2 बड़े भाई हैं जो मुझ पर अकसर रोकटोक करते रहते हैं. उन दोनों के अनुसार मुझे एक सभ्य लड़की की तरह रहना चाहिए मुंह बंद कर के. बीते दिनों घर में सुबहशाम न्यूज चैनल चलते रहते थे. उन पर कभी जमाती तो कभी हिंदूमुसलिम मसला उठता तो परिवार के सभी लोग किसी गुंडे जैसी भाषा का प्रयोग करने लगते. जला दो, मार डालो जैसे शब्द कहते तो मैं खिन्न हो जाती क्योंकि किसी भी स्थिति में इंसानियत भूल जाना तो किसी मसले का हल नहीं. इस चक्कर में मेरी अपने भाइयों से भी कई बार लड़ाई हुई और मम्मीपापा से भी. अब हो यह रहा है कि वे आज तक मुझे ताने ही देते रहते हैं. मुझे लगने लगा है कि मेरी ही गलती है जो मैं ने किसी को कुछ समझाने की कोशिश की, लेकिन क्या सचमुच में मैं ही गलत हूं? अब अपने घरवालों से अपने रिश्ते को संभालूं या अपने सिद्धांतों पर चलूं?

आप का कहना सही है कि इंसान को इंसानियत देखनी चाहिए और अपने सिद्धांतों पर भी चलना चाहिए. आप अब तक अपने परिवार को सही समझाने की कोशिश करती आई हैं तो अब पीछे हटने के बारे में मत सोचिए. यह सही है कि रिश्ते बनाए रखना जरूरी है लेकिन इस बाबत किसी के गलत तथ्यों या कहें गलत बातों का समर्थन करना तो सही नहीं है. आप अपनी बात पर अडिग रहें और साथ ही अपने पारिवारिक संबंध भी सही करने की कोशिश करें.

*

मेरे घर में मेरी शादी की बातें बड़ी जोरोंशोरों से होने लगी हैं जबकि मैं अपनी गर्लफ्रैंड से शादी करना चाहता हूं पर वह मुझ से शादी नहीं करना चाहती. मैं घरवालों और गर्लफ्रैंड के बीच फंस गया हूं. लौकडाउन होने के कारण एक तरफ तो घरवालों ने लड़की ढूंढ़ ली तो दूसरी तरफ मेरी अपनी गर्लफ्रैंड से बातचीत पहले से भी ज्यादा बढ़ गई. वह अब भी मुझ से शादी करना नहीं चाहती और मम्मीपापा मेरी शादी कराने के पीछे पड़े हैं. अब मुझे शादी तो मम्मीपापा की मरजी से करनी ही होगी लेकिन अपनी गर्लफ्रैंड से रिश्ता खत्म कैसे करूं यह समझ नहीं आता.

आप अपनी गर्लफ्रैंड से ब्रेकअप न कर के और शादी होने तक रिश्ता कायम रखते हुए गलती कर रहे हैं. आप जानते हैं कि उस से आप की शादी नहीं होगी और आप जल्द ही शादी करने वाले हैं तो फिर उस से रिलेशनशिप निभाते रहने की तुक क्या है. आप अपने दिल के साथ तो खिलवाड़ करेंगे ही, साथ ही समय रहते आगे भी नहीं बढ़ पाएंगे और जब किसी और से शादी करेंगे तो उसे भी खुश नहीं रख पाएंगे. यदि आप शादी के बाद भी इस रिलेशनशिप में रहने की सोच रहे हैं तो वह तो और ज्यादा गलत होगा. बेहतरी इसी में है कि समय रहते इस रिश्ते को खत्म कर आप आगे बढ़ें. **–कंचन** ●



आप भी अपनी समस्या भेजें

पता : **कंचन, सरिता**
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.
समस्या हमें एसएमएस या व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/औडियो भी कर सकते हैं.
08527666772

खेतीकिसानी की पाक्षिक पत्रिका

मात्र 499 रु. सालाना दे कर हर पखवारे
3 प्रतियां रजिस्टर्ड डाक से घर बैठे मंगाएं

फार्म एन फूड

दिल्ली प्रेस की पत्रिका



साल भर में मिलेंगी 72 प्रतियां

मात्र 499 रु. में

रजिस्टर्ड डाक से

खुद पढ़ें, दूसरों को भी पढ़वाएं

फार्म एन फूड पत्रिका का ह्वाट्सएप नंबर : 08447177778

यह फार्म अपने चैक / डी.डी. के साथ भेजें

नाम: .....

पता: .....

पिन: .....

मोबाइल नं.: ..... फोन नं.: ..... ई-मेल: ..... Yes No

चैक / डी.डी. नं.: ..... तिथि: .....

DELHI PRAKASHNAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड: ☐ अमेक्स ☐ वीसा ☐ मास्टर कार्ड ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ अंतिम तिथि: MM ☐☐ YY ☐☐

जारी करने वाले बैंक का नाम: .....

हस्ताक्षर ..... तिथि .....

नियम व शर्तें:

कृपया इस फार्म को भर कर चैक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें : DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED ई-8, झंडेवाला एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. चैक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए 3-4 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आप को डाक द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधीन है. दिल्ली प्रैस का सब्सक्रिप्शन विभाग : टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक) फोन नंबर : 011-41398888, एक्सटेंशन : 119, 221, 264 मोबाइल/एसएमएस/ह्वाट्सएप नंबर : 08588843408 फैक्स : 011-41540714/41398885, ईमेल: subscription@delhipress.in औनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी आप सब्सक्राइब कर सकते हैं.



मैं दोपहर के एक बजे कालेज से घर आ रही थी. हलकी बारिश हो रही थी. सड़क सुनसान थी. इतने में एक स्कूटर पर 3 लड़के वहीं चक्कर मारने लगे. मुझे बहुत डर लगने लगा. एक लड़का स्कूटर से उतर कर मेरी तरफ बढ़ा और मेरे गले से चेन खींचने लगा.

मैं जोरजोर से चिल्लाने लगी और उसे धक्का भी दे रही थी. मेरे ऐसा करने से वह लड़का डर कर उन दोनों लड़कों के साथ भाग गया. मेरी चेन तो बच गई थी पर मेरे कपड़े थोड़े से फट गए थे.

मैं बहुत ज्यादा डर गई थी. रोते हुए घर आई. अगले दिन उन्हीं 3 लड़कों ने मेरी कालोनी में 2-3 चेन (सोने की) छीनीं.

यह घटना याद आते ही आज भी मेरी कंपकंपी छूट जाती है.

श्वेता मित्तल (सर्वश्रेष्ठ)

मैं दिन में खाना खा कर बिस्तर पर लेटा आराम कर रहा था. दिन के करीब 3 बजे मोबाइल फोन की घंटी बज उठी. फोन की घंटी सुन मैं ने बातचीत शुरू कर दी. महिला की आवाज मिली. उन्होंने कहा, "भाईसाहब, मैं एयरटेल कंपनी की एक महिला अधिकारी बोल रही हूं. आप के एयरटेल नंबर पर 55 हजार रुपए का एक लकी ड्रा निकला हुआ है. कृपया टैलीफोन की लाइन नहीं काटें और आप अपने निकटतम एयरटेल मोबाइल दुकान पर आ जाएं."

मैं तुरंत बिना कुछ सोचेसमझे पैसों के लालच में घर के निकटतम मोबाइल दुकान पर पहुंच गया और वहां से तथाकथित कंपनी वाले से बातें कीं. उन्होंने कहा, "आप मात्र 2 हजार रुपए से मेरे मोबाइल को रिचार्ज करवा दें." मैं ने लकी ड्रा के लालच में उन के मोबाइल को दुकान वाले से कह कर रिचार्ज करवा दिया.

उस के बाद मैं ने उन महिला से बात की तो उन्होंने फिर कहा, "भाईसाहब, एक नंबर और मैं आप को देती हूं और वह टैलीफोन वोडाफोन कंपनी का है, उस में 2 हजार रुपए मात्र फिर भरवा दें."

यह सुन कर मेरे कान खड़े हो गए और मैं ने कहा कि मेरे पास अभी पैसा नहीं है. मेरे लकी ड्रा का क्या हुआ?

इतना सुन कर उन महिला ने फोनलाइन काट दी और फिर लाख कोशिश के बाद भी उस नंबर से कोई जवाब नहीं मिला.

मेरे साथ धोखाधड़ी की जो घटना घटी, उसे याद कर मैं आज भी भयभीत हो उठता हूं. **देवेंद्र प्रसाद गुप्त** ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

अपना अनुभव ***नाम*** *व* ***पते सहित*** *आप नीचे लिखे नंबर पर* ***एसएमएस*** *या* ***व्हाट्सऐप*** *के जरिए* ***मैसेज/औडियो*** *भी कर सकते हैं.*

08527666772

मानव शरीर रहस्यात्मक हो सकता है. इसलिए कभीकभी बहुत ही उलझनभरी, शर्मिंदा करने वाली या अजीब सी हरकतें हमारा शरीर करता है. आइए, जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है?



ऐसा क्यों करता है हमारा शरीर

• सुमन बाजपेयी

हम सब को पता है कि खून का सर्कुलेशन करने के लिए दिल धड़कता है, गरम दिन में पसीना निकलने से शरीर को ठंडक मिलती है. लेकिन हर किसी को यह नहीं पता कि हमें हिचकियां क्यों आती हैं? पांव क्यों सो जाते हैं यो रोंगटे क्यों खड़े हो जाते हैं? क्या सचमुच डर से आप के रोंगटे खड़े होते हैं या इस की कोई और वजह है? पांव के सोने पर वास्तव में आप का शरीर आप को क्या बताने की कोशिश करता है? शरीर में होने वाली इन अजीब बातों का एक तार्किक व चिकित्सकीय कारण होता है.

जानते हैं कुछ ऐसी ही शरीर में होने वाली बातों के बारे में जो कभीकभी आप के लिए शर्मिंदगी का कारण भी बन जाती हैं.

जम्हाई आना : जम्हाई आने को अकसर नींद आने के साथ जोड़ा जाता है. जब भी कोई जम्हाई लेता है, हम कहते



हैं कि लगता है नींद आ रही है. उस समय कुछ सुस्ती भी महसूस होती है. लेकिन जब आप के शरीर में औक्सीजन की मात्रा कम होती है, तो आप का मुंह काफी बड़ा हो कर खुल जाता है और अधिक औक्सीजन अंदर लेने की कोशिश करता है. जम्हाई लेना खून में कार्बन डाईऔक्साइड और औक्सीजन की मात्रा को नियंत्रित करने का तरीका है. जम्हाई को आने से रोकना असंभव है.

आंख फड़कना : आंख फड़कना जिस में पलक फड़कती है, एक बहुत ही आम स्थिति है जिस से हमें बहुत



असुविधा महसूस होती है और बहुत परेशानी महसूस होती है. यह स्नायु में किसी तरह की गड़बड़ी की वजह से हो सकता है. पर जाना जाता है कि ऐसा तनाव, नींद की कमी, थकावट, कैफीन की अधिक मात्रा लेने से होता है. आंखों पर अधिक जोर पड़ता है तब भी आंख फड़कने लगती है. तनाव को दूर कर के और पर्याप्त नींद व आंखों को आराम देने से इन में आराम मिल जाता है. कौफी और अल्काहोल की मात्रा कम करने से भी इस में आराम मिल जाता है.

हिचकी आना : अगर किसी को हिचकी आती है तो अकसर कहा जाता है कि कोई याद कर रहा है और उसे पानी पीने की सलाह दी जाती है ताकि हिचकी

बंद हो जाए. "अगर आप को बहुत हिचकियां आती हैं तो खाते व पीते समय धीरेधीरे खाएं व पिएं. बहुत जल्दीजल्दी

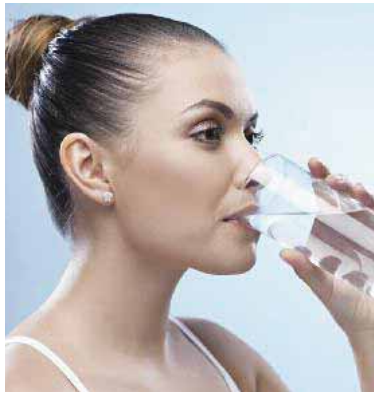

खाने से आप के पेट में सूजन आ जाती है या कहें वह फूल सा जाता है, जिस से आप के डायफ्राम पर असर पड़ता है जो सिकुड़ता है और उस वजह से हिचकियां आती हैं. अगर मुंह खुला रखने की आदत हो तो हवा अंदर जाती रहती है," यह कहना है फोर्टिस हौस्पिटल के फिजीशियन डा. विवेक नांगिया का. भावनात्मक स्थितियों या अचानक तापमान में होने वाले बदलाव की वजह से भी हिचकियां आती हैं. ऐसा होने पर तुरंत पानी पी लेना चाहिए.

रोंगटें खड़े होना : किसी बात को सुन या अचरज से, ब्लैकबोर्ड पर खड़िया के रगड़ने या ईंट सरकाने से शरीर के बाल, खासकर हाथों के रोंगटे, खड़े हो जाते हैं. एक मुहावरा भी है कि 'डर के मारे रोंगटे खड़े होना.' ठंड लगने पर भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं. इंडोगल्फ हौस्पिटल, नोएडा के सीनियर कंसल्टैंट डा. गिरीश वैष्णव के अनुसार, 'वे नन्हेनन्हे रोएं तब उभर आते हैं जब आप को ठंड लगती है या डर लगता है. असल में वे बचावतंत्र की तरह काम करते हैं. शरीर के प्रत्येक बाल की सतह पर निहित एक छोटी सी मांसपेशी सिकुड़ती है. जब वे एकसाथ सिकुड़ती हैं तो मांस पर एक उभार की तरह लगती हैं. अपने हाथ को रगड़ कर गरमी देने से ये वापस बैठ जाती हैं. इस की वजह है कि बालों के बीच उष्मारोधी (इंसुलेटिंग) हवा को रोक कर उन्हें गरमाई पहुंचाती है. अगर आप के शरीर में अधिक बाल हैं तो वे आप के शरीर को गरम रखने के लिए खड़े रोंगटे हवा को रोक लेंगे."

ऐंठन या क्रैंप पड़ना : अचानक ही बैठेबैठे या सोतेसोते पांव में बल पड़ जाते हैं. यह दर्द इतना अधिक होता है कि बरदाश्त करना मुश्किल होता है. अकसर इसे कमजोरी की निशानी समझा जाता है. यह कुछ सैकंड या कुछ मिनटों तक रहती है. मैक्स हौस्पिटल के फिजीशियन डा. अजय गोगिया कहते हैं, "मांसपेशी



में होने वाली ऐसी ऐंठन की कई वजहें हो सकती हैं. कुछ न्यूट्रिएंट्स की कमी, डीहाइड्रेशन से ले कर इलैक्ट्रोलाइट असंतुलन, जो अकसर बहुत अधिक

ऐक्सरसाइज करने से होता है, हो सकता है. ये क्रैंप आमतौर पर उन मांसपेशियों में पड़ते हैं जो आप के शरीर में 2 जोड़ों (जौइंट्स) के बीच खिंचती हैं. ये ज्यादातर पांवों के निचले हिस्से, पैरों, बांहों, हाथों और पेट में पड़ते हैं. वर्कआउट करने के बाद कोई पेयपदार्थ ले लें ताकि शरीर फिर से ठीक से काम करने लगे. इस से बचने के लिए अपनी मांसपेशियों की मसाज अवश्य करें. क्रैंप पड़ने पर चलें या पांवों को हिलाएं."

पांव सोना : अकसर बहुत देर तक बैठे रहने से पांव में एक झनझनाहट सी महसूस होती है या सुइयां भी चुभती



महसूस होती हैं. और हम कहते हैं कि हमारा पांव सो गया है. हम सोचते हैं कि रक्तप्रवाह ठीक से न होने की वजह से पांव सो जाता है. पर ऐसा स्नायु पर बहुत अधिक दबाव डालने से होता है. जैसे ही हम अपने बैठने की स्थिति में बदलाव करते हैं या थोड़ा सा पांव को हिलातेडुलाते हैं तो वह ठीक हो जाता है. डा. विवेक नांगिया कहते हैं, "जब किसी भाग पर लगातार दबाव पड़ता है, जैसे जब आप पैर के बल बैठते हैं या एक बांह पर सिर टिका कर लेटते हैं, तो दबाव आप के स्नायु के मार्ग को दबा देता है और इस दबाव का संदेश मस्तिष्क तक भेजता है. चूंकि आप का मस्तिष्क तब यह नहीं बता पाता कि आप क्या करें, इसलिए शरीर के भागों में एक झनझनाहट सी महसूस होती है. ऐसी स्थिति में न बैठें जिस से पैर या हाथ पर दबाव पड़े. सो, बीचबीच में अपनी स्थिति में बदलाव करते रहें." यह स्थिति आप के शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुंचाती है और खुद ही कुछ पलों के बाद ठीक हो जाती है.

छींक आना : हम सोचते हैं कि केवल ठंड लगने से ही छींक आती है, जबकि ऐसा नहीं है. छींकें गरमी में भी आती हैं. छींक तब आती है जब आप का शरीर नथुने के छेद से किसी खुजली या जलन पैदा करने वाले पदार्थ को बाहर फेंकने की कोशिश करता है. अगर आप को एलर्जी की शिकायत रहती है तो इस



की वजह फूलों की खुशबू या धूलमिट्टी भी हो सकती है. अगर आप को जुकाम है तो वायरस को पकड़ने के लिए आप का शरीर श्लेष (म्यूकस) बनाता है और छींक उसे बाहर धकेलने में मदद करती

है. डा. गिरीश वैष्णव के अनुसार, "छींक बेशक आप की नाक से शुरू होती है, पर उसे शरीर के अन्य भागों से बहुत सहयोग की आवश्यकता होती है. छींक लाने के लिए आप की नाक आप के मस्तिष्क के विशेष भाग को एक संदेश भेजती है (कि आप के शरीर को परेशान करने वाले पदार्थ से छुटकारा पाने का तरीका) जिस के लिए आप की छाती, पेट, गले और आप की आंखों से भी शीघ्र प्रतिक्रिया करनी पड़ती है. जब भी हम छींकते हैं, हमारी आंखें बंद हो जाती हैं, क्योंकि उस के बाद एक राहत सी महसूस होती है."

तारे दिखाई देना : अगर आप एक झटके से खड़े हो जाएं, सिर पर कोई वार हो या माइग्रेन से पीड़ित हों, तो हो सकता है कि आप को तारे दिखाई दें. ऐसा इसलिए क्योंकि शरीर के विभिन्न हिस्सों में खून प्रवाहित होने लगता है. आमतौर पर रोशनी की यह चमक कुछ पलों में अपनेआप ही धुंधला जाती है. लेकिन अगर आप को ये तारे कुछ मिनटों तक दिखाई देते हैं तो आप के आंसू निकलने लगते हैं या रेटिना में छोटेछोटे खून के थक्के जमा हो सकते हैं. ऐसा होने पर तुरंत किसी चिकित्सक की सलाह लें.

कान बजना : 'तुम्हारे कान बज रहे हैं,' ऐसा एक मुहावरा भी है. यह तब प्रयोग किया जाता है जब कोई आवाज न सुनाई देने पर किसी को लगे कि कोई बोल रहा है या कुछ आवाज हुई है. लेकिन शरीर में होने वाली इस क्रिया का इस मुहावरे से कोई संबंध नहीं है. डा. अजय गोगिया कहते हैं, "ऐसा 2 वजहों से होता है जिसे चिकित्सकीय भाषा में टिन्नीटस कहा जाता है. जब आप के कान के अंदर कुछ तरल पदार्थ या इन्फैक्शन होता है, तब आप को लगातार एक आवाज सी आती रहती है जो किसी



भौंरे की भिनभिनाहट जैसी होती है. हालांकि, इस का सब से आम कारण है आप की सुनने की स्नायु के माइक्रोस्कोपिक सिरों का क्षतिग्रस्त हो जाना जो अकसर बहुत तेज संगीत सुनने से होता है. इस से बचने के लिए तेज संगीत बजने वाली जगहों पर इयरप्लग्स डाल लें." ●



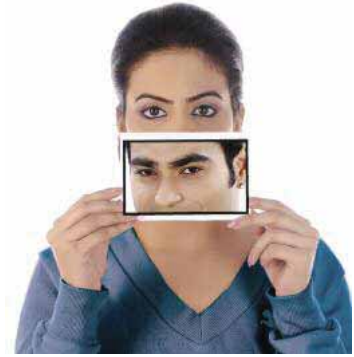

ये पति

अकसर मैं देखती हूं कि व्हाट्सऐप या फेसबुक पर पतिपत्नी अपना नाम साथ जोड़ कर लिखते हैं. किसी पार्टी या फंक्शन में जाती हूं तो पतिपत्नी को एक ही प्लेट में खाना खाते देखती हूं. कमर में हाथ डाल कर एकदूसरे के साथ डांस करते देखती हूं. यह सब देख कर मेरा मन काफी उदास हो जाता है क्योंकि मेरे पति ऐसा नहीं करते हैं.

घर में भी इकट्ठा होते तो सगेसंबंधी पति से संबंधित ऐसी ही बातें करते हैं जैसे उन के पति उन को कितना प्यार करते हैं. मसलन, उन के पति उन को साथ लिए बिना बाजार तक नहीं जाते, उन की मरजी के बिना एक कप तक घर में नहीं आता.

मैं यह सब सुन कर परेशान रहती और कुढ़ती रहती कि ये मुझ से उतना प्यार नहीं करते हैं जितना कि औरों के पति अपनी पत्नियों से.

कहीं से भी पतिपत्नी का नजारा देख कर आती तो एक बार इन से अवश्य लड़ती. तब ये कहते, "प्यार दिखावे की चीज नहीं होती है और मैं तुम को दिल से चाहता हूं, इसे साबित करने के लिए भरी महफिल में तुम्हारे साथ खाना खाने या डांस करने की मुझे जरूरत नहीं है." यह सुन कर मैं कुढ़ कर रह जाती.

फिर एक दिन ऐसा हुआ कि मुझे अनायास ही मछली खाने का मन किया. शाम को जब ये आए तो देखा कि इन के हाथ में मछली है. मैं अचंभित रह गई. फिर एक दिन दोपहर में मेरे बेटे ने लड्डू खाने की फरमाइश की. मैं ने उसे समझा दिया कि पापा आएंगे तो बोल दूंगी लड्डू लाने के लिए. लेकिन आश्चर्य, जब ये आए तो इन के हाथ में लड्डू का डिब्बा था. मेरा मुंह खुला का खुला रह गया.

ऐसी आज तक कितनी बातें जो मेरे मन में आती हैं और ये उसे बिना कहे साकार करते दिखते हैं.

ये घटनाएं अब तक मुझे एहसास करा चुकी हैं कि प्यार दिखावे की चीज नहीं होती है, यह तो दिल से होता है. अब मुझे यह मलाल नहीं होता कि मेरे पति मुझ से प्यार नहीं करते हैं बल्कि यह सत्य लगने लगा है कि मेरे पति मुझ से सच्चा प्यार करते हैं.

रत्ना श्रीवास्तव (श्रेष्ठ) ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

अपना अनुभव ***नाम*** *व* ***पते सहित*** *आप नीचे लिखे नंबर पर* ***एसएमएस*** *या* ***व्हाट्सऐप*** *के जरिए* ***मैसेज/ऑडियो*** *भी कर सकते हैं.*

08527666772

ऋषि कपूर

इन में कुछ तो बात थी



यह ठीक है कि ऐक्टिंग ऋषि कपूर के खून में थी लेकिन खुद को साबित करने के लिए उन्हें पसीना भी खूब बहाना पड़ा. अपने 5 दशको के सफर के दौरान उन्होंने कई उतारचढ़ाव देखे लेकिन अपनी रूमानी और बिंदास इमेज आखिर तक बनाए रखी. ऐसी कई खूबियों के मालिक इस अभिनेता में कुछ कमजोरियां भी थीं.


राजू
ह ी
ना

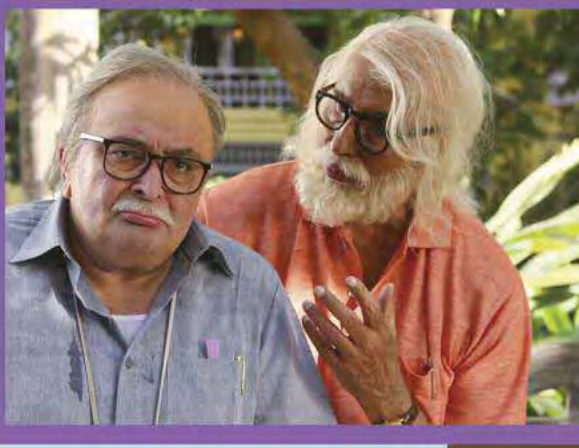



अपनी अलग वैस्टर्न लाइफ स्टाइल के लिए पहचानी जाने वाली नायिका सिम्मी ग्रेवाल अब 72 साल की हो चुकी हैं लेकिन उम्र का कोई असर उन पर होता नहीं दिख रहा. 30 अप्रैल को जब ऋषि कपूर का निधन हुआ तो उन्होंने भावुक अंदाज में हिंदी फिल्मों के इस रोमांटिक अभिनेता को याद किया. ऋषि कपूर से उन का जुड़ाव 50 साल से भी ज्यादा पुराना है. इस अरसे को मामूली नहीं कहा जा सकता. 1970 में जब राजकपूर की महत्त्वाकांक्षी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' प्रदर्शित हुई थी तब सिम्मी की उम्र 22 और ऋषि की 18 साल थी. निसंदेह ऋषि को याद करते सिम्मी ग्रेवाल के जेहन में 'मेरा नाम जोकर' का मासूम छात्र

होगा जो मन ही मन अपनी युवा टीचर से प्यार करने लगता है.

इस फिल्म में सिम्मी ग्रेवाल का दिया न्यूड सीन काफी चर्चा में रहा था और उन की आलोचना भी खूब हुई थी. इस दृश्य में राजू अपनी टीचर मैरी मैडम को नदी किनारे झुरमुट में एकएक कर कपड़े उतारते देखा करता है. ऐसे वक्त में एक किशोर की हालत क्या होती है इसे ऋषि कपूर ने बखूबी जिया था लेकिन इस के बाद भी 'मेरा नाम जोकर' औंधेमुंह लुढ़की थी. महंगे बजट की इस फिल्म को बनाने में राजकपूर ने अपना सबकुछ दांव पर लगा दिया था लेकिन फिल्म फ्लौप होने की बाद उन के सपने भी चूरचूर हो गए थे. यहां तक कि कर्ज चुकाने के लिए उन्हें अपनी पत्नी कृष्णा कपूर के गहने तक बेचने पड़े थे.

लेकिन इस से भी बड़ी चिंता उन्हें अपने मझले बेटे के कैरियर को ले कर थी जो उन की वजह से ही शुरू होने से पहले ही खतरे में पड़ गया था. वे बेहतर जानते और समझते थे कि फिल्म इंडस्ट्री में एक बार जिस पर फ्लौप होने का ठप्पा लग गया उस का फिर चल पाना 70 के दशक में अपवादस्वरूप भी नहीं होता था. अब तक राजकपूर को शोमैन के खिताब से नवाजा जाने लगा था. 'मेरा नाम जोकर' की असफलता हालांकि उन के लिए हर लिहाज से एक बड़ा झटका थी जिस से उन्हें समझ आया था कि एक अधेड़ जोकर की प्रेमकथाओं पर फिल्म बना कर गलती तो उन्होंने कर दी है.

लेकिन उन्होंने हथियार नहीं डाले और तुरंत ही ऋषि को ले कर ही युवा प्रेम पर आधारित 'बौबी' फिल्म बना डाली जो 1973 में रिलीज हुई थी. इसी फिल्म से डिंपल कपाड़िया को पहचान मिली थी. 'बौबी' ने बौक्सऔफिस के सारे नएपुराने रिकौर्ड ध्वस्त कर दिए थे और एक बार फिर उन के नाम का डंका बजने लगा. राजकपूर ने साबित कर दिया कि वे एक

▼ अपने वक्त की खूबसूरती की मिसाल अभिनेत्री पूनम ढिल्लों के साथ ऋषि कपूर की जोड़ी हिट रही.



▼ फिल्म चश्मे बद्दूर के एक दृश्य में ऋषि कपूर के साथ अली जफर. युवा कलाकारों के साथ उन का अच्छा तालमेल रहा.



अच्छे निर्माता, निर्देशक और अभिनेता ही नहीं बल्कि एक सधे हुए व्यापारी भी हैं. 'बौबी' की कामयाबी ने उन के सिर से कर्ज का बोझ और ऋषि के भविष्य की चिंता दूर कर दी थी. चौकलेटी चेहरेमोहरे वाले ऋषि चल निकले और फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा.

चुनौतियों से सामना

अब उन के सामने चुनौती यह साबित करने की थी कि वे आर के कैंप से परे भी अपनी अलग पहचान रखते हैं. यह 70 के दशक का पूर्वार्ध ही था जब फिल्म इंडस्ट्री में रोज नएनए चिकने चेहरे वाले हीरो आ रहे थे. इन में से कुछ अपनी जगह बना रहे थे और कई दोचार फिल्मों के बाद दौड़ से बाहर हो गए थे, इन में अनिल धवन, नवीन निश्चल और विजय अरोड़ा जैसे नाम अहम हैं. इसी वक्त में एक और कामयाब निर्देशक प्रकाश मेहरा की सुपरडुपर हिट फिल्म 'जंजीर' आई थी जिस ने संघर्ष करते अमिताभ बच्चन को रातोंरात उस मुकाम पर पहुंचा दिया था जिस की उम्मीद फिल्मी पंडितों ने नहीं की थी. यही फिल्मी पंडित यह भी मानने लगे थे कि अब नंबर वन की लड़ाई ऋषि और अमिताभ के बीच होगी जिस की एक अलग अहमियत बौलीबुड में होती है. राजेश खन्ना का दौर इस दौर में ढलने लगा था.

▼ हर तरह के किरदार निभाने में ऋषि कपूर ने अपने अभिनय का लोहा मनवाया. उन के साथ भूमिका निभाती अभिनेत्री तापसी पन्नू.



जल्द ही यह साबित हो गया कि ऋषि कपूर बेहतर अभिनेता होते हुए भी नंबर वन नहीं हो सकते, उन्हें तो नंबर दो की ही लड़ाई लड़ते रहना है. इस दौड़ और लाइन में भी कई कामयाब अभिनेता शामिल थे जिन में जितेंद्र, राकेश रोशन, शत्रुघ्न सिन्हा और विनोद खन्ना भी उल्लेखनीय नाम थे. दरअसल, 'कभीकभी' फिल्म में ऋषि का रोल काफी रोमांटिक था, इस में उन की नायिका नीतू सिंह थीं. यह जोड़ी चली और जल्द ही दोनों ने शादी भी कर ली. लेकिन इस फिल्म ने ऋषि पर एक ठप्पा सा लगा दिया कि वे सहनायक ही अमिताभ के सामने रहेंगे. इस के बाद वे कई फिल्मों में अमिताभ के साथ नजर आए जिन में 'कुली' और 'अमर अकबर एंथोनी' ने कामयाबी के झंडे गाड़े पर उन की भूमिका दूसरे नंबर की ही रही.

कई एकल फिल्मों में भी उन्होंने शानदार ऐक्टिंग की और पूरी फिल्म को खुद के दम पर हिट करवाया. इन में 'खेल खेल में', 'सरगम', 'कर्ज', 'चांदनी', 'प्रेम रोग', 'हिना', 'तवायफ', 'बोल राधा बोल', 'लैला मजनूं' और 'बारूद' उल्लेखनीय हैं. 1980 में प्रदर्शित 'कर्ज' तो उन के कैरियर में मील का पत्थर 'बौबी' के बाद साबित हुई. इस में भी उन के अपोजिट सिम्मी ग्रेवाल थीं

लेकिन टीना मुनीम भी साथ में थीं. उन्होंने तमाम समकालीन अभिनेत्रियों के अलावा रेखा, हेमा मालिनी और मौसमी चटर्जी जैसी उम्र में बड़ी अभिनेत्रियों के साथ भी काम किया.

ऋषि कपूर फिल्मों में जितने जिंदादिल और रोमांटिक नजर आए दरअसल, उतने हकीकत में थे नहीं. उन के तमाम नजदीकी लोग मानते और बताते हैं कि वे दूसरों के सामने अपनी फीलिंग्स खुल कर शेयर नहीं कर पाते थे. हालांकि शूटिंग के वक्त सैट पर साथी कलाकारों के साथ वे खुल कर पेश आते थे और हंसीमजाक भी खूब करते रहते थे. रंगबिरंगे स्वैटर्स और मफलरों से अपनी अलग पहचान बनाने वाले इस बिंदास और बेफिक्र हीरो ने डांस के जरिए भी युवाओं को अपना दीवाना बना लिए था. 'कर्ज' फिल्म के गाने 'मेरी उम्र के नौजवानों...' पर उन की थिरकन देख कर तो खासतौर से लड़कियां उन पर मरमिटीं थीं.

विवाद भी कम नहीं

5 दशक फिल्मों में कोई सक्रिय रहे और विवादों से दूर रहे ऐसा होना नामुमकिन सी बात है, यही ऋषि के साथ भी हुआ. कपूर खानदान का होने की ठसक अकसर उन के स्वभाव में दिखी तो इसे उन का हक कहा जा सकता है लेकिन कुछ मौके ऐसे भी आए जब कई अप्रिय विवादों से उन का नाता जुड़ा. 'बौबी' और 'जंजीर' दोनों 1973 में प्रदर्शित हुई थीं. दोनों ही सुपरहिट थीं. फिल्म समीक्षकों का अंदाजा था कि सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्मफेयर अवार्ड अमिताभ बच्चन को मिलेगा लेकिन यह जब ऋषि को मिला तो अमिताभ उन से खिंचेखिंचे रहने लगे. खुद ऋषि ने तब इस बात को स्वीकारा भी था. तब इस पुरस्कार को ले कर सुगबुगाहट भी हुई थी कि इसे राजकपूर ने अपने बेटे के लिए खरीद लिया है.

लोग किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पा रहे थे कि तभी खुद ऋषि ने यह मान लिया था कि यह पुरस्कार उन के लिए खरीदा गया था. यह स्वीकारोक्ति बिलाशक हिम्मत की बात थी पर इस से अमिताभ के मन का मैल धुल गया और इन दोनों ने 20 फिल्मों में एकसाथ काम किया. ऋषि कपूर की मौत की खबर लोगों को सब से पहले अमिताभ बच्चन के ट्वीट से ही मिली थी.

ऋषि कपूर का दूसरा अहम विवाद मशहूर लेखक सलीम जावेद की जोड़ी से हुआ था जिस की असल वजह का अंदाजा तो किसी को नहीं कि ऋषि क्यों इन से इतने चिढ़ते थे कि एक बार उन्हें चिढ़ाने उन के घर तक पहुंच गए थे. सलीम जावेद ने अमिताभ और संजीव कुमार अभिनीत अपनी फिल्म 'त्रिशूल' का एक रोल उन्हें औफर किया था लेकिन ऋषि ने उसे ठुकरा दिया था. इस दौर में सलीम जावेद की तूती बोलती थी और हर छोटाबड़ा कलाकार उन के साथ काम करने को इच्छुक रहता था पर ऋषि की मनाही बताती है कि वे जिस से चिढ़ जाते थे तो बिना अपने नफानुकसान की परवा किए आसानी से नहीं मानते थे और उसे बेइज्जत और परेशान कर के ही उन्हें सुकून मिलता था.

ऐसा ही कुछ किस्सा संजय दत्त को ले कर भी हुआ था जो बड़ा दिलचस्प है. 'कर्ज' फिल्म में टीना मुनीम ऋषि की नायिका थीं जिन पर संजय दत्त भी फिदा थे. जैसे ही ऋषि और टीना के अफेयर की खबर उड़ी तो संजय दत्त इसे बरदाश्त नहीं कर पाए और एक दिन नशे में धुत हो कर

उन्हें मारने घर जा पहुंचे, तब उन के साथ खलनायक गुलशन ग्रोवर भी थे. दोनों में परदे के बाहर वाली फाइटिंग होती इस से पहले ही नीतू सिंह ने बात संभाल ली थी और एक हादसा होने से बच गया था. यहां गौरतलब है कि संजय दत्त स्कूल के दिनों में सहपाठियों के तानों से भी तनाव में रहते थे जो उन की मां नर्गिस दत्त और राजकपूर के अफेयर को ले कर कसे जाते थे. बाद में दोनों के संबंध सामान्य हो गए थे और



ऋषि कपूर जिन्होंने अपने पारिवारिक जीवन में हर रिश्ते को प्यार, ईमानदारी और वफादारी से निभाया.

दोनों 'अग्निपथ' में साथ नजर भी आए. जिंदगी के आखिरी दिनों में उन के कई ट्वीट्स पर भी विवाद हुए लेकिन ऋषि कपूर ने कभी किसी की परवा नहीं की.

अच्छे पिता और पति

ऐसे विवाद फिल्म इंडस्ट्री में आम होते हैं और इन्हें सामान्य मानवीय स्वभाव कह कर नजरंदाज किया जा सकता है. रियल लाइफ से परे देखें तो उन की रियल लाइफ काफी सुखद और शानदार रही जो आमतौर पर कम ही फिल्मकारों को मिलती है. खुद को अच्छा बेटा तो वे 70 के दशक में ही साबित कर चुके थे पर उन्होंने खुद को अच्छा पति और अच्छा पिता भी साबित कर जता दिया कि कामयाबी यों ही नहीं मिल जाती, इस के लिए एक जरूरी शर्त रिश्तों में ईमानदारी और वफादारी होना भी है.

नीतू सिंह को ऋषि कपूर का एक खास गुण बहुत पसंद था, यह गुण था उन का काम के प्रति जनून और घर वालों को बेइंतहा चाहना. घरवालों के साथ वक्त गुजारने के लिए वे कभी भी इतवार को शूटिंग नहीं करते थे. अपने इस उसूल को कायम रखने के लिए एक बार तो उन्होंने अपने बड़े भाई रणधीर कपूर को भी मना कर दिया था कि संडे को काम नहीं करूंगा.

अपने बेटे रणवीर कपूर को अपनी जिंदगी में ही फिल्मों में कामयाब देख उन्हें वही खुशी होती थी जो उन के सैटल होने के बाद राजकपूर को होती थी. रणवीर ने पिता को याद करते हुए कहा वे सचमुच मां को बहुत प्यार करते थे जो मुझे और रिद्धिमा (बहन) को सुरक्षा देता था. अलावा इस के अपने काम के प्रति उन का समर्पण हमेशा मुझे प्रेरणा देता रहा. वे अपने रोल के हिसाब से ड्रैस भी बड़े सोचसमझ कर चुनते थे और कई बारीक बातों का भी ध्यान रखते थे.

बिलाशक ऋषि कपूर की कमी फिल्म इंडस्ट्री और उन के प्रशसकों को सालती रहेगी. उन का हंसतामुसकराता चेहरा लोगों के जेहन में रहेगा और फिल्मों में निभाए उन के 1970 में आई 'मेरा नाम जोकर' के राजू से ले कर 2018 में आई 'मुल्क' फिल्म के मुराद अली मोहम्मद तक के विविध किरदार भी याद रहेंगे.

—भारतभूषण श्रीवास्तव ●

उम्दा अदाकारी के मकबूल कलाकार थे इरफान खान



आंखों से ऐक्टिंग करने वाले अभिनेता इरफान खान की आवाज में भी एक कशिश थी. उन्हें उतने मौके मिले नहीं जितने के वे हकदार थे पर जितने भी मिले उन में उन्होंने अपनी ऐक्टिंग का लोहा मनवा कर साबित कर दिया कि इरफान होना हर किसी के बस की बात नहीं.

साल 1977 में आई फिल्म 'पलकों की छांव में' वे सुपरस्टार राजेश खन्ना ने एक ऐसे सरकारी डाकिए का किरदार निभाया था, जो गांवदेहात के लोगों की चिट्ठियां लाता है. 2 दूर बैठे लोगों के सुखदुख की पाती बांच कर वह उन के बीच ऐसे पुल का काम करता है, जिस के बिना रिश्तों का तानाबाना किसी काम का नहीं है.

साल बदले तो फिल्मों की इमारत का रंगरोगन भी बदल गया. बंबई कब बौंबे हुआ, पता ही नहीं चला. शहरों में नई समस्याएं आईं तो उन के समाधान भी अजीबोगरीब से निकाले गए. साल 1988 में आई मीरा नायर की फिल्म 'सलाम बौंबे' में तब की बंबई की झोपड़पट्टी के कुछ किरदारों को बड़ी साफगोई से बड़े परदे पर उकेरा गया था, जिस में नाना पाटेकर और अनीता कंवर जैसों ने खास रोल निभाए थे. इसी फिल्म में किसी दुबलेपतले इरफान खान ने पैसे ले कर चिट्ठी लिखने वाले एक ऐसे नौजवान का किरदार निभाया था, जिस का मकसद राजेश खन्ना की तरह लोगों की दुआएं कमाने का तो कतई नहीं था. 10 लाइन से ऊपर लिखवाया तो 50 पैसे ज्यादा देने पड़ेंगे, यह उस का अलिखित नियम था.

उस समय किसी ने नहीं सोचा था कि यही इरफान खान फिल्मी दुनिया में ऐसे किरदारों की इबारत लिखेगा, जो अपनेआप में मैसेंजर बन कर पूरी दुनिया में घूमेंगे. 29 अप्रैल, 2020 को मुंबई में आखिरी सांस लेने से पहले इरफान खान ने अपनी अदाकारी के वे नमूने दिखा दिए थे, जिन्हें करने के लिए लोग एड़ीचोटी का जोर लगा देते हैं. पर उन का यह सफर इतना आसान नहीं था. निजी जिंदगी की जद्दोजेहद और नैशनल स्कूल औफ ड्रामा करने के बाद मुंबई शिफ्ट होने पर उन्हें मनचाहे रोल तश्तरी में सजा कर नहीं मिले थे. वहां कैमरे को अपना बनाना कोई हंसीखेल नहीं था, पर चूंकि ऐक्टर बनने का कीड़ा काट चुका था, तो फिर





पहले छोटे परदे को ही कबूल किया इस मकबूल ने. 'चंद्रकांता', 'श्रीकांत', 'चाणक्य', 'भारत एक खोज' जहां जैसा रोल मिला, लपक लिया. अब कोई स्टार किड तो थे नहीं कि पहली फिल्म में लीड रोल मिल जाता.

पर बड़ी आंखों वाले इस सामान्य से दिखते लड़के को अभी एक लंबी छलांग लगानी थी. यह मौका मिला तिग्मांशु धूलिया की फिल्म 'हासिल' में. साल 2003 में आई इस फिल्म ने इरफान खान को वह रुतबा दिलाया जिस के वे हकदार थे. रणविजय सिंह नाम का जो किरदार इन के लिए लिखा गया था, वह मील का पत्थर साबित हुआ. आप के सामने आशुतोष राणा हों और आप फिल्मफेयर का बैस्ट नैगेटिव किरदार का अवार्ड जीत जाएं, यह कारनामा करना इतना आसान तो नहीं होगा. पर ऐसा हुआ था. इस फिल्म में इरफान खान अपने किरदार को मानो घोट कर पी गए थे.

पर अभी तो इरफान खान को और भी अजूबे करने थे. 30 जनवरी, 2004 को रिलीज हुई फिल्म 'मकबूल' ने इन्हें वह सब दिया जिस के लिए शायद ये बने थे. पंकज कपूर और तब्बू जैसे दिग्गज कलाकारों की मौजूदगी में इरफान खान ने मकबूल का किरदार कुछ इस तरह निभाया कि वह सीधा दर्शकों के दिलों में उतर गया. विशाल भारद्वाज को खुद पर फख्र हुआ होगा कि उन्होंने इरफान खान को मकबूल बना कर कोई गलती नहीं की.

लेकिन अगर आप को पता चले कि साल 2001 के आसपास इरफान खान फिल्मों को छोड़ने का मन बना चुके थे, तो आप को कैसा लगेगा? इस लिहाज से साल 2001 में आई आसिफ कापड़िया की फिल्म 'द वारियर' इरफान खान के कैरियर में बड़ी अहम मानी गई है. इस फिल्म ने उन्हें सिनेमाजगत में जमे रहने का हौसला दिया. हो भी क्यों न, इस फिल्म में इरफान खान ने पुराने राजस्थान के एक ऐसे सामंती योद्धा का शानदार किरदार निभाया था, जो

हिंसा से तंग आ कर लड़ाई को छोड़ना चाहता है. इस से थोड़ा नाम हुआ तो इरफान खान टिक गए अदाकारी की पिच पर एक लंबी पारी खेलने के लिए.

साल 2006 में मीरा नायर दोबारा इरफान खान के साथ जुड़ीं और अपनी फिल्म 'द नेमसेक' में एक बंगाली इंजीनियर का किरदार दिया, जो इरफान की बैस्ट फिल्मों में से एक मानी जाती है. साल 2008 में आई डैनी बौयल की





टीवी सीरियलों से अपनी पहचान बनाने के बाद फिल्मों में अलगअलग किरदार निभा कर इरफान खान ने साबित कर दिया था कि कलाकारी में वे माहिर थे.

कई इंटरनैशनल अवार्ड जीतने वाली फिल्म 'स्लमडौग मिलिनेयर' में भी इरफान खान ने पुलिस वाले का अहम किरदार निभाया था.

विदेशी फिल्मों की बात चल रही है तो साल 2012 में आई आंग ली की फिल्म 'लाइफ औफ पाई' को कैसे भूला जा सकता है. इस फिल्म को 4 औस्कर अवार्ड मिले थे. फिल्म 'जुरासिक वर्ल्ड' भी इसी कड़ी में मील का पत्थर बनी थी.

हिंदी सिनेमा की बात करें तो साल 2012 में आई तिग्मांशु धूलिया की हिंदी फिल्म 'पान सिंह तोमर' में कभी असल जिंदगी में भारतीय धावक खिलाड़ी पान सिंह तोमर का किरदार जीवंत करने के लिए इरफान खान को बैस्ट ऐक्टर का नैशनल अवार्ड मिला था. इस के बाद साल 2013 में आई फिल्म 'लंच बौक्स' के किरदार ने इन्हें नई ऊंचाइयां दीं. बाद में फिल्म 'हिंदी मीडियम' की कामयाबी से प्रेरित हो कर फिल्म 'अंगरेजी मीडियम' को बनाने का काम चालू हुआ, पर साल 2018 में इरफान खान को एक भयंकर बीमारी, ऐसे कैंसर ने अपनी चपेट में ले लिया, जो बड़ा ही दुर्लभ है. इरफान खान ने विदेश में अपना इलाज कराया और ठीक हो कर स्वदेश लौट भी आए, पर जिंदगी से ज्यादा लमहे हासिल नहीं कर पाए.

अपने 32 साल के कैरियर में इरफान खान ने 30 से ज्यादा फिल्मों में काम किया और हर फिल्म में अलग छाप छोड़ी, फिर चाहे वह 'लाइफ इन ए मैट्रो' हो या फिर 'पीकू', 'तलवार', 'हैदर' या कोई और फिल्म. वे पूरी तरह से लंबी पारी के खिलाड़ी थे और चूंकि क्रिकेट की बात हुई है तो बता दें कि उन का पहला प्यार क्रिकेट ही था. जो हासिल न हुआ.

-सुनील शर्मा ●











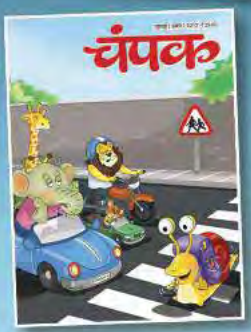





सुखी जीवन संतुष्ट परिवार समृद्ध घर की मार्गदर्शक पत्रिकाएं

हमारा उद्देश्य पाठकों को ऐसे नए युग में ले जाना है जहां कड़ी मेहनत, लगन व बुद्धि के बल से सफलता प्राप्त होती है न कि जाति, धर्म, पाखंड, जोड़तोड़ या भ्रष्टाचार की वजह से. यदि हम आत्मसम्मान के साथ सिर ऊंचा कर के जीना चाहते हैं तो हमें अपना भविष्य आत्मबल पर तय करना होगा.

दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 281, टोल फ्री फोन नं. : 1800-103-8880,
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

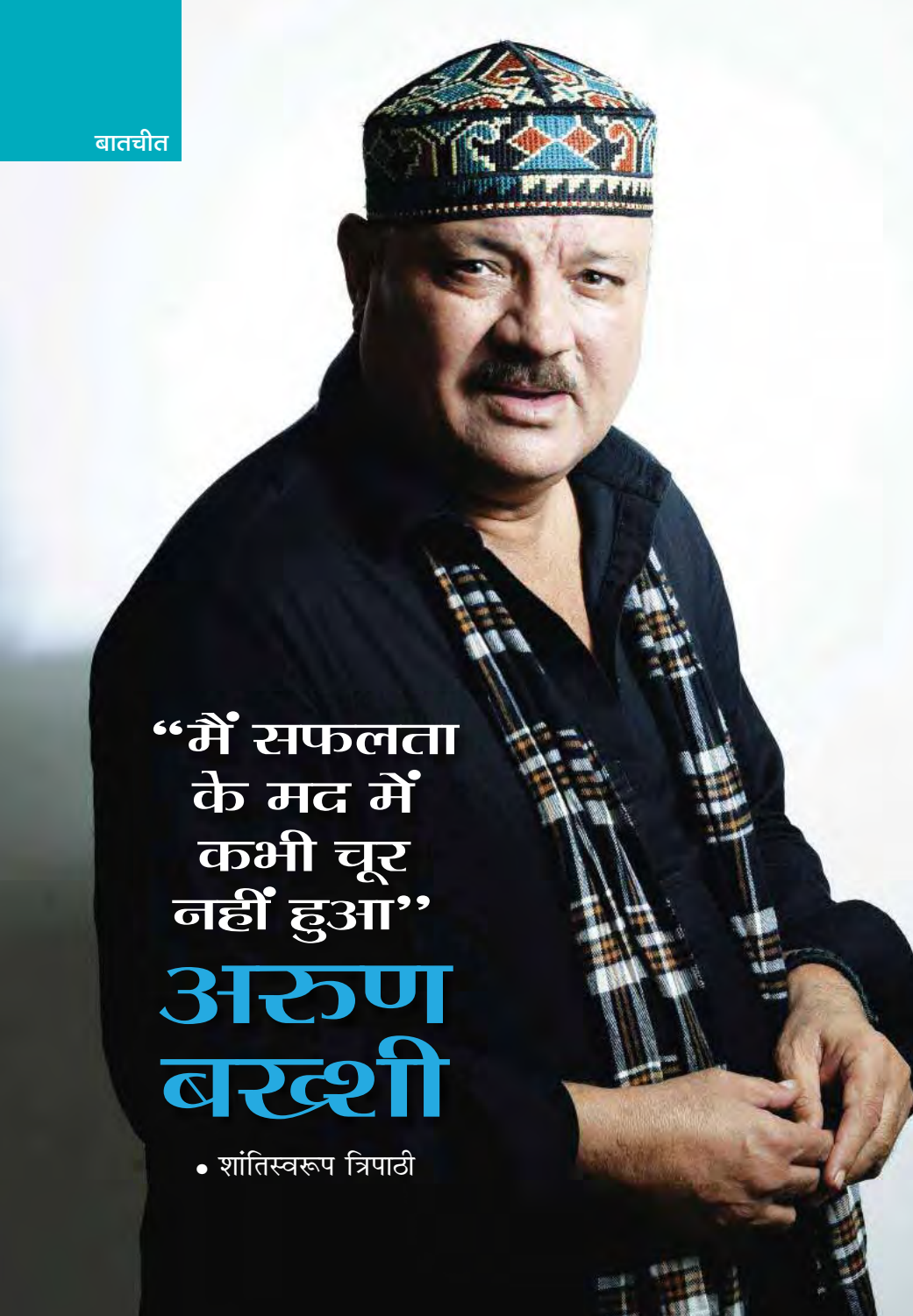

“मैं सफलता के मद में कभी चूर नहीं हुआ”

अरुण बख्शी

• शांतिस्वरूप त्रिपाठी

अरुण बख्शी किसी परिचय के मुहताज नहीं हैं. वे 1980 से बतौर पार्श्वगायक और चरित्र अभिनेता बौलीवुड में सक्रिय हैं. वे सुभाष घई की फिल्म 'कर्मा', टीनू आनंद की फिल्म 'प्यार दीवाना होता है,' पहलाज निहलानी की फिल्मों सहित अब तक 300 से अधिक फिल्मों में गीत गा चुके हैं. अरुण बख्शी द्वारा स्वरबद्ध गीत गोविंदा, संजय दत्त, अजय देवगन से ले कर अक्षय कुमार सहित कई कलाकारों पर फिल्माए जा चुके हैं. वे आज भी संगीत व अभिनय के क्षेत्र में सक्रिय हैं. इन दिनों अरुण बख्शी द्वारा स्वरबद्ध गीत 'दिलबर...' ने धूम मचा रखी है. इसे महज डेढ़ माह के अंदर ढाई लाख से अधिक लोग देख चुके हैं. जबकि 7 माह पहले बाजार में आए सिंगल गीत 'बोल निक्की दा बावे...' को 2 लाख 58 हजार व्यूज मिले थे.

अरुण बख्शी से यह पूछने पर कि आप के 40 वर्षों के कैरियर के टर्निंग पौइंट्स क्याक्या रहे? वे कहते हैं, "मुंबई शहर में आने के साथ ही उतारचढ़ाव स्वाभाविक हैं. मेरी कहानी में कोई सिसकी या गम नहीं है. कई वर्ष पहले मैं ने सोचना शुरू किया था कि मैं अभिनय या गायन में से किसी एक क्षेत्र में रम जाऊं. लेकिन सुभाष घई की फिल्म 'कर्मा' में 4 पंक्तियां गाने के बाद मैं ने फैसला किया कि मैं अभिनय और गायन दोनों करूंगा.

"फिर पड़ाव आते रहे. मैं ने चढ़ाव के जो अवसर देखे वे कमाल के रहे. हमारे वक्त में हमारी चरित्र अभिनेता वाली फिल्में 50 हफ्ते तक लगातार चली हैं और मैं ने ऐसी फिल्म में हीरो के लिए गीत भी अपनी आवाज में स्वरबद्ध किया है.

"मैं ने 80 और 90 के दशक में जो काम किया था उसे लोगों ने काफी पसंद किया. फिर लोग आज भी जब मेरे पुराने गीत सुनते हैं तो मेरी तारीफ करते हैं. यदि मेरे द्वारा 1980 में स्वरबद्ध गीत को लोग 2020 में सुनना चाहते हैं तो इस के माने यह हैं कि मेरे गाने की उम्र 40 वर्ष है. अभी भी मेरा गायन और अभिनय चल रहा है. मुझे गर्व है कि आज की तारीख में मेरे पास 5-6 फिल्में हैं."

अपने वैब सीरीज करने को ले कर अरुण बताते हैं, "जमाना तेजी से बदलता रहा है. 90 के दशक में टीवी सीरियलों का जोर था. मगर मिलेनियम बदलते ही 2000 के बाद वैब सीरीज का जमाना शुरू हुआ. समय के साथ मैं अपनेआप को बदलता रहा हूं. मैं ने राप्सी ऐप के लिए 'जजमैंट डे' और 'सैंडी' नामक 2 बड़े बजट की वैब सीरीज कीं. निर्देशक नए हैं, मगर मेरे किरदार बहुत अच्छे हैं."

चरित्र अभिनेता के तौर पर कई कलाकार आए और गए. वे लंबे समय तक टिक नहीं पाए, मगर आप पिछले 40 वर्षों

अरुण बख्शी उन लोगों में से एक हैं जो संगीत व अभिनय के क्षेत्र में आज भी सक्रिय हैं. 40 वर्षों के कैरियर के टर्निंग पौइंट्स के अपने अनुभव को उन्होंने विस्तार से बताया.

से निरंतर कार्यरत हैं? किस बात ने आप को टिकाए रखा? इस प्रश्न का जवाब अरुण कुछ इस तरह देते हैं, "जमीन से जुड़ाव. मैं कभी भी हवा में नहीं उड़ा. सफलता के मद में चूर नहीं हुआ.

"मैं काम करता रहा. आज भी काम कर रहा हूं. मैं ने अपने काम से बेईमानी कभी नहीं की. मैं हमेशा अपने इर्दगिर्द खुशनुमा माहौल बना कर रखता हूं. मेरा किसी से कोई स्वार्थ नहीं है."

अरुण से यह पूछने पर कि आप ने किसी फिल्म के लिए कड़ी मेहनत की हो, वह फिल्म बौक्सऔफिस पर सफल भी हो गई हो, इस के बावजूद आप को 6 माह या एक साल तक कोई काम न मिला हो? वे कहते हैं, "मैं ने कभी इस तरह से नहीं सोचा. मेरी सोच यही रही कि मेरे काम पर अच्छी प्रतिक्रिया देर से मिलती है. इसलिए मैं लगातार काम करता रहा. दूसरी बात, मैं ठहरा संगीत का पुजारी, तो जब कोई फिल्म नहीं होती थी तो मैं संगीत के रियाज में लग जाता था. संगीत के शो में व्यस्त हो जाता था."

संगीत या अभिनय में आप का उस्ताद कौन है? इस पर अरुण का कहना है, "हकीकत यही है कि मेरा कोई उस्ताद नहीं है. मैं ने अपनी मां को ही अपना उस्ताद माना.

अपने संगीतकार बनने को ले कर वे कहते हैं, "90 के दशक में मेरे कई गाने हिट हुए थे. 'तुन्ना तुन्ना..', 'दुनिया दी ठा ठा...', 'झूलेझूले लाल द मस्त कलंदर', 'फटेला जेब सिल जाएगा', गोविंदा की फिल्म में 'बड़े काम का...' सहित तमाम गाने हिट हुए. इन गानों के संगीतकार धीरेधीरे हाशिए पर पहुंचने लगे. नए संगीतकार आने लगे. जब नए संगीतकार आने लगे तो मैं ने स्वयं संगीत देना भी शुरू किया. मैं ने 8 गानों का पूरा एक अलबम किया. इस अलबम के सभी गीतों को मैं ने ही संगीतबद्ध किया और अपनी ही आवाज में गाया है."

अपने 'दिलबर...' गाने को ले कर अरुण बख्शी कहते हैं, "गीतकार मदनपाल जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, द्वारा लिखित इस गीत को मैं ने संगीत से संवारने के साथ अपनी आवाज में स्वरबद्ध किया है. इस का वीडियो मंगेष पवार ने निर्देशित किया है. इस वीडियो अलबम में मेरे साथ नई लड़की सानिया सिंह ने बेहतरीन अभिनय किया है. मंगेष पवार और सानिया सिंह का यह पहला वीडियो है. यह अलबम 16 दिसंबर को बाजार में आया था. अब तक इसे 2 लाख 15 हजार व्यूज मिल चुके हैं. इस में कोई भांगड़ा नहीं है. अश्लील डांस नहीं है."

पहले एक फिल्म में एक ही संगीतकार हुआ करता था. अब एक फिल्म में 6-6 संगीतकार होते हैं. उस का संगीत और फिल्म पर क्या असर पड़ता है? इस सवाल पर वे कुछ यों जवाब देते हैं, "आप ने कमाल का सवाल किया है. 10-20 वर्ष तक तो एक फिल्म में एक ही संगीतकार हुआ करता था. पर धीरेधीरे यह सिलसिला खत्म होता गया. देखिए, हर इंसान, हर संगीतकार का थौट प्रोसैस अलगअलग होता है. जब एक ही फिल्म में 3 या उस से अधिक संगीतकार होंगे तो उन सभी का थौट प्रोसैस अलगअलग ही होगा.

"मेरे साथ एक बार यह हुआ कि बप्पी लहरी ने मुझे फोन कर के कहा कि उन्होंने मेरी आवाज के उपयुक्त एक गाना बनाया है और यह गाना मुझे ही रिकौर्ड करना है. मगर फिल्म का निर्देशक ज्यादा तेजतर्रार था. उस ने उस गाने में कुछ बदलाव कर किसी अन्य गायक से गवाया. बप्पी लहरी



वीडियो अलबम 'दिलबर' की अपनी सफलता को निर्देशक मंगेष पवार और नई गायिका सानिया सिंह के साथ साझा करते अरुण बख्शी.

बारबार उस से कहते रहे कि यह गाना अरुण के लिए है, इसे उन्हीं से गवाइए.

"अब तो ऐसे संगीतकार गायब हो गए हैं. अब जो भी गायक मिला, उस से गवा लिया. इस से गाने की गुणवत्ता कम हो गई है. जिस कलाकार पर वह गाना फिल्माया गया है, उस से भी यह गाना मेल नहीं खाता क्योंकि कलाकार के ऊपर उस गायक की आवाज सूट करती है या नहीं, यह देखना चाहिए पर अब कोई इस पर ध्यान नहीं देता."

पहले लाइव रिकौर्डिंग हुआ करती थी. अब कीबोर्ड आ गया है, तो इस का संगीत पर क्या असर हुआ? इस पर अरुण का कहना है, "लाइव संगीत की बात ही अलग है. मैं ने कई लाइव गाने गाए हैं. मगर कीबोर्ड की खूबसूरती अलग है. इस में रिदम है, ट्रैक है, जिस पर इम्प्रोवाइज करने का अलग आनंद है. वक्त के साथ बदलना जरूरी है."

अपने निजी जीवन व बच्चों के बारे में पूछे जाने पर वे कहते हैं, "अपने बच्चों को मैं ने पूरी आजादी दे रखी है. एक बेटा व एक बेटी है. कोई भी फिल्म इंडस्ट्री में नहीं है. वे अपनेअपने क्षेत्र में बहुत खुश हैं. हम लोग एक छत के नीचे एकदूसरे को स्पेस देते हुए रहते हैं. आप अपनी जिंदगी जिएं, मैं अपनी जिंदगी जी लूंगा. मेरे घर में एक छत के नीचे 4 अलगअलग इंसान हैं. जब वे एकसाथ हैं तो एकदूसरे के साथ बहुत खुश हैं."

इन दिनों नया क्या कर रहे हैं? इस प्रश्न के जवाब में अरुण कहते हैं, "जय प्रकाश निर्देशित फिल्म 'मिस 2' तथा दूसरी मनोज नंदवानी की फिल्म 'उल्टे' आने वाली हैं. इस के अलावा भी कुछ फिल्में हैं. लेखक नवीन अग्रवाल की फिल्म 'नुसरत बेगम' है जिस में मैं ने देश के गृहमंत्री का किरदार निभाया है. बहुत ही बेहतरीन किरदार है. एक सीरियल 'लाल रेखा' में अभिनय किया है. इस के अलावा एक नए गाने पर काम किया है. मेरा अगला गाना 'मन अटक्या...' गीतकार मदनपाल को ट्रिब्यूट होगा." ●


ननमुन...
पंकज गोस्वामी –
इस जहाज के पायलट मेरे चाचाजी हैं...
अच्छा?
एयरपोर्ट पर उतरने से पहले चाचाजी चाची को संदेश देते हैं.
वह क्या है?
घर पहुंच कर आज मैं जलेबी खाऊंगा...

करोड़ो लोगो का आज़माया



झुर्रियां | काले घेरे | छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- सन स्क्रीन
- फेस वाश

राजपूत कॉस्मेटिक सेंटर
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

क्लीयर हैंड सैनिटाइज़र यहां से आप ले सकते हैं
amazon



कोरोना वायरस को फैलने से रोकें

ZEELAB PHARMACY

साबुन से बार बार हाथ धोएं
घर के बाहर, तुरंत कीटाणु मारने के लिए, हैंड सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करें
अगर आपको सर्दी, खांसी, बुखार या सांस लेने में तकलीफ है तो डॉक्टर की सलाह लें

ज़ीलेब फार्मेसी की ओर से जनहित में जारी

हेल्पलाइन नंबर
9896062855
9896062292

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

SUNCARE

स्वास्थ्य का रखे ख्याल
जीवन रहे खुशहाल

FLAMISUN GEL & SPRAY
जोड़ो के दर्द में दे तुरंत आराम



STOMAFIT
रखे स्टमक फिट जिससे पेट रहे सही और आप रहें फिट



हेमोक्लॉल
आयरन एवं फोलिक ऐसिड की कमी को दूर कर खून बढ़ाए



Suntuss
नो खिच-खिच फार्मूला



SALTEX LOTION
दाद-खाज़, खुजली में बेस्ट





Bevitone
जिएं भरपूर ऊर्जा के साथ

Geltop
ऐंटीसेप्टिक एवं दर्द निवारक जैल
मुँह के छालों का सफाया





Scabicid
खुजली, जुएं और डैन्ड्रफ से छुटकारा

CLEAR ON XTRA
एक्ने-पिंपल भगाए, फेस को क्लीयर बनाए





PYROGUM TOOTH DROPS
दांतो का डाक्टर जो करे पूरी देखभाल

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन : 8447977889 / 999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com
www.suncareformulations.com

फ्री होम डिलीवरी
8447977999